विश्व युद्ध की
रोमांचकारी
कहानियां

VISHVA YUDDHA KI ROMANCHKARI KAHANIYAN
WAR STORIES : PARDESHI
मूल्य : एक रुपया

विश्वयुद्ध की रोमांचकारी कहानियां

क्रम
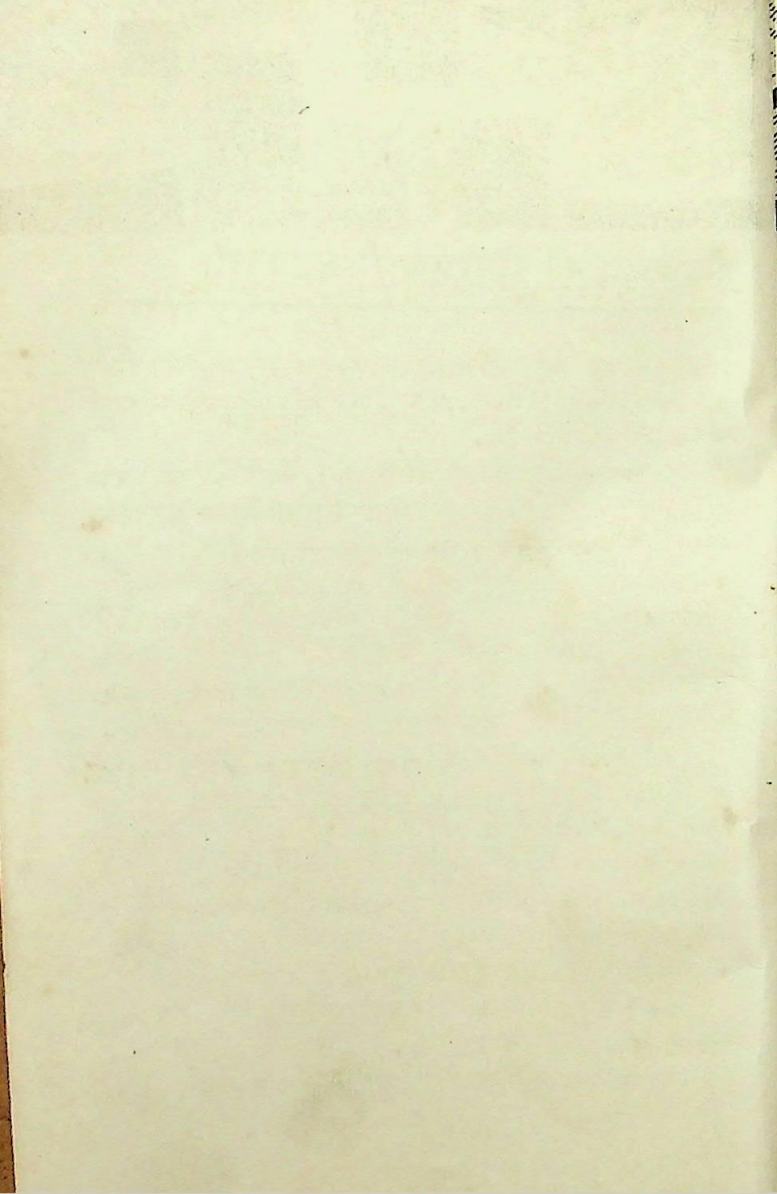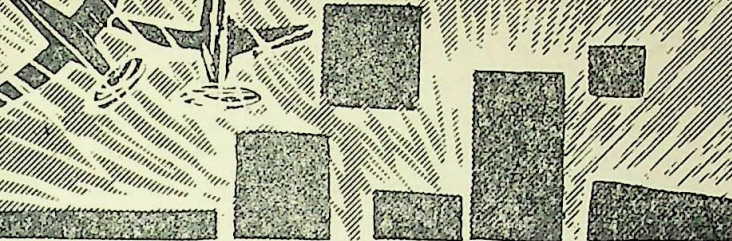
बर्फीली चट्टानों के बीच चौदह दिन

चौदह दिन तक बर्फ के बीच फंसकर, एक-एक पल नारकीय पीड़ा में काटनेवाले फ्लाइट सार्जेंट आर्थर वीवर की अनुभव-कथा अत्यन्त रोचक और प्रेरणाप्रद है !

यह अनुभव ब्रिटिश वायुसेना के कुछ वैमानिकों को हुआ। इनमें एक तो आर्थर वीवर, दूसरा गुड्लेट और तीसरा था एल्नाश। सन् १९४३ में एक बमवर्षक लेकर ये ब्रिटेन की ओर उड़ रहे थे कि अचानक ग्रीनलैंड के तट पर एक ग्लेशियर पर, इन्हें फौरन नीचे उतरने को बाध्य होना पड़ा। फिर तो चौदह दिन तक इन्होंने बड़े धैर्यपूर्वक मृत्यु का सामना किया, क्योंकि इनके पास खाने को कुछ न था; शीत ४०° फा० पर था और बाह्य संसार से इनका सम्बन्ध टूट गया था।

इन तीनों उड़ाकों में से कोई इक्कीस-बाईस से अधिक उम्र का न था, किंतु इन्हें जो अनुभव हुआ, वह बर्फ के बीच सदैव भटकने-वाले वर्षों के निष्णात व्यक्तियों को भी नहीं हुआ। इस भयंकर यंत्रणा के पश्चात् वीवर ने कहा था—"आज दो मास बीत गए हैं, फिर भी मैं सर्दी महसूस कर रहा हूं और अभी तक अपने शरीर में गर्मी नहीं ला सका हूं।" और उसने अपना ओवरकोट लपेट लिया था; हालांकि कमरे में उष्णता के लिए रेडिएटर लगा हुआ था।

इन तीनों पवनपुत्रों का रहस्यमय प्रकरण आर्थर वीवर की ज़बानी इस प्रकार है—

जब एक विमान में हम तीनों न्यूफाउण्डलैंड से रवाना हुए, तो

लगभग दो घंटे बाद हमें भयंकर कुहरे का सामना करना पड़ा। उसी समय हमारे बमवर्षक विमान का रेडियो खराब हो गया। गुड्लेट ने प्रयत्न किया कि वातावरण से ऊंचा उठ जाए, लेकिन विमान बर्फ से लद गया था और ऊपर नहीं उठ रहा था। तब भी अगले छः घंटों तक हम १५,००० फुट की ऊंचाई पर उड़ते रहे।

जब, सिर्फ आधा घंटा जल सके, इतना ही पेट्रोल रह गया, तो गुड्लेट को चिंता हुई कि आखिर नीचे भी तो उतरना पड़ेगा, तब ईंधन का क्या होगा ? विमान भारी-भारी बादलों में भटक रहा था। हम भयभीत थे कि किसी भी क्षण, किसी पहाड़ से विमान टकरा जाएगा, क्योंकि नीचे चारों ओर टूटी हुई बोतलों की तरह पहाड़ फैले हुए थे और तट के किनारे-किनारे चले गए थे। सामने बर्फ से ढका हुआ पठार था, जिसका ढाल समुद्र की ओर था।

गुड्लेट विमान को ५०० फुट की निचाई पर ले आया और उतरने की जगह ढूंढ़ने लगा। उसे निराश होना पड़ा, क्योंकि सर्वत्र बड़े-बड़े दरार और खड्ड नज़र आ रहे थे। अब क्या करे ? हिम्मत करके गुड्लेट ने पेट के बल विमान को नीचे उतार दिया और उस वक्त उसके पहियों को ऊंचा उठाए रखा। यह असाधारण चमत्कार था, क्योंकि विमान एक सौ दस मील प्रतिघंटा की रफ्तार से गहरी बर्फ की ओर उतर रहा था।

एक साथी बाहर की झलक पाने के लिए द्वार खोलकर उतरा और जांघों तक बर्फ में धंस गया। बमुश्किल साथियों ने उसे ऊपर खींचा और द्वार बंद कर लिया। उस समय सूरज अस्त हो रहा था और आंधी बड़े वेग से बर्फ को चारों ओर उड़ा रही थी। थर्मामीटर ३४° शून्य से नीचे संकेत दे रहा था।

प्रस्थान से पूर्व, इन्हें जो कॉफी और सेंडविच मिले थे, उनपर हाथ साफ करने का निश्चय किया, लेकिन जब देखा तो कॉफी जमकर पत्थर बन गई थी और सेंडविचों का यह हाल रहा कि वे ईंटों की तरह सख्त हो गए थे। उन्हें पिघलाने की कोशिश की गई, ताकि चूस सकें। सिगरेटें सुलगाई गईं। सिगरेटों का हमारे पास पूरा भंडार था। पांच हज़ार सिगरेट ब्रिटेन ले जा रहे थे, लेकिन किस्मत का

चक्कर देखिए कि पास में सिर्फ एक माचिस और एक लाइटर था।

प्रति दस मिनट पर हम एक-दूसरे की मालिश करते थे और फर्श पर अपने पैर पटकते थे, फिर भी सर्दी तो जैसे बदन में धंसती ही जाती थी। बाहर ६२ मील प्रतिघंटा की गति से हवा बह रही थी।

यदि एल्नाश को एक तरकीब न सूझती तो हम चौबीस घंटे भी ज़िंदा न रहते। नाश ने उपाय बताया कि अपने-अपने पैराशूट फ़ाड़-कर पट्टियां बना लें और सारे शरीर पर लपेट लें। यह सब करने पर भी, हम ठंड से कांप रहे थे। तब हम सब विमान के पिछले भाग में घुस गए और एक-दूसरे पर लेट गए। शरीर की गर्मी के कारण कंपकंपी कुछ दूर हुई। इस प्रकार रात बिताई, और बारी-बारी से प्रत्येक व्यक्ति बीच में आता रहा, क्योंकि ऊपर-नीचे लेटे आदमियों के बीच में जो तीसरा आदमी रहता, वह अच्छी तरह गरमा जाता।

पूरी रात हम जागते हुए बातचीत करते रहे और अपनी सुरक्षा की योजना बनाते रहे। हमने निश्चय किया कि थोड़े-से जो बिस्कुट अपने पास में हैं, उनमें से प्रति चौबीस घंटों में सिर्फ एक-एक बिस्कुट खाएंगे। ये बिस्कुट आधे चौरस-इंच आकार के थे, और हमारा खयाल था कि विटामिनों से भरपूर हैं; जब खाए तो लकड़ी के बुरादे जैसा उनका स्वाद था।

तब हमें भूख को भुलाने और समय बिताने के लिए एक विषय मिल गया—'महात्मा गांधी इतने दिन उपवास कैसे करते थे? कब तक एक आदमी भूखा रह सकता है?' इस विषय पर विचार-विनिमय करने से हमें बड़ी शांति मिली, इस सत्य ने हमारा साहस और धैर्य बढ़ाया कि गांधी जैसा छोटा-सा, दुबला, पतला, बूढ़ा आदमी जब पचास या साठ दिन तक बिना भोजन के रह सकता है, तो हम क्यों नहीं रह सकते? किंतु हममें से किसीको यह खयाल नहीं आया कि महात्मा गांधी ऐसे निकृष्ट वातावरण में नहीं रहे!

दूसरी रात हमें ज़्यादा भूख लगी। आपस में हम यह चर्चा करने लगे कि बचपन में बड़े दिन की दावतों में कितना मजा आता था! और उन दिनों अपनी तश्तरियों में कितनी जूठन छोड़ दिया करते थे! उस रात हम सबने अपना-अपना हाथ उठाकर कसम

खाई कि अब कभी अपनी तश्तरी पर एक कण भी जूठा नहीं छोड़ेंगे। इस पूरे वक्त हम धूम्रपान करते रहे और इधर-उधर कूदकर गर्मी लाते रहे। फिर भी हमें भय था कि पैर अकड़ जाएंगे और सुन्न हो जाएंगे !

तीन दिन यही हालत रही। तीसरी रात ग्यारह बजे के करीब विमान ने हिलना-डुलना बंद कर दिया। इससे हम समझ गए कि आंधी थम गई है। इससे पहले तो विमान ज्वर के रोगी की तरह कांप रहा था। अब नाश ने पता लगाया कि हम ध्रुवप्रदेश की सीमा में हैं। हमारे समीप सौ-सौ मील तक कोई जगह या बस्ती नहीं है।

इस वक्त तक हमारे मस्तिष्क भी शिथिल हो गए थे। फिर भी हमने विचार किया कि रबर की छोटी-सी नौका को बर्फ पर घसीटते हुए जल में ले जाएं और सौ डेढ़ सौ मील का सफर पूरा कर, किसी बस्ती के निकट पहुंच जाएं। लेकिन गहरी-गहरी बर्फ पार करने के लिए हमें बर्फ के योग्य जूतों की ज़रूरत थी। रात-भर हमने प्लाइवुड के डिब्बे काटकर पांच-छः जोड़ी जूते तैयार किए। फिर अपना कुतुबनुमा उठाया, खतरे के तीन सिग्नल साथ में लिए और बिस्कुट का डिब्बा सुरक्षित रख लिया।

ज्योंही हमने विमान से बाहर कदम रखा कि आंधी उठी और हमारे लिए फिर से सारा संसार भूरा, अंधेरा और बर्फीला हो गया। निराशा ने हमें घेर लिया और हम चुपचाप विमान का द्वार बन्द कर बैठ गए।

उस दोपहर मैंने रेडियो पर सिरपच्ची की। केनाडा के एक हवाई अड्डे से सम्पर्क जुड़ा, किन्तु आवाज़ बहुत धीमी थी। मैंने एस० ओ० एस० (सेव अवर सोल)—अर्थात् हमारे प्राणों की तत्काल रक्षा की जाए, हम बहुत बड़े संकट में हैं—संदेश भेजा। और जब तक मुझे उधर से उत्तर मिलता, रेडियो की बैटरी ने जवाब दे दिया। मैं अपना पता भी नहीं सुना पाया। फिर भी इस संवाद से हमारे मनों में जिन आशाओं का संचरण हुआ, उनके फलस्वरूप दो और दिनों तक हम बात करते, गप्प लड़ाते, धूम्रपान

करते और बिस्कुट पर जीते रहे। अब तो बिस्कुट का हमारा राशन कटकर चौथाई बिस्कुट प्रतिदिन हो गया था। हमारे संकट की यही समाप्ति नहीं थी—विमान में बर्फ की तीन-तीन इंची तहें जम गई थीं। ऐसा महसूस होता था, मानो आपपर बर्फ की धाराएं छा रही हैं और आप कुछ भी नहीं कर सकते, सिर्फ सांस लेना रोक सकते हैं !

प्यास के मारे हाल बहुत बुरा था। हिम और बर्फ चूसकर तृषा की तृप्ति का प्रयास हम कर रहे थे, किन्तु इससे तृप्ति तो दूर रही, हमारे मुंह सूज गए थे और होंठों से खून बहने लगा था। ईश्वर की कृपा थी कि अभी हमें ज़्यादा भूख या थकान महसूस नहीं हुई थी। न्यूफाउण्डलैंड छोड़ने के वाद हममें से कोई भी सोया नहीं था।

छठे दिवस की सुबह मौसम साफ हुआ और हमने नौका बाहर निकाली। विमान की आवश्यक और महत्त्वपूर्ण सामग्री जला दी, उस लौ पर हमने कॉफी का एक प्याला पिघलाया और दो-दो घूंट लेकर रवाना हो गए।

लेकिन नौका को बर्फ में खींच ले जाना सहज कार्य नहीं था—दो घण्टे में हमने चौथाई मील पार किया ! फिर दुर्भाग्य की देन—बर्फ गिरनी शुरू हो गई। हमें यह विश्वास हो गया कि विद्यमान विपत्ति के बीच अधिक दूर जा न सकेंगे, अतः हम विमान पर लौट आए और फिर से द्वार बन्द कर पड़ गए !

दूसरी दोपहर मौसम ने अपना रंगीला रुख बदला। तापमान उठकर ५४° हो गया और रिमझिम बरसात होने लगी। हमने निकलने का प्रयत्न किया, लेकिन बर्फ दलदल जैसा लगा और विगत दिवस की अपेक्षा यात्रा अधिक कठिन प्रतीत हुई। फिर भी हमने साहस नहीं छोड़ा और अंधेरा होने तक चलते ही रहे।

उस रात हमारे जेकेट और जूते इस तरह जम गए, मानो फौलाद के बने हैं। नौका को उलटकर, हमने उसके नीचे रात ही नहीं बिताई, पूरे सत्तरह घंटे व्यतीत किए। पूरे समय घना अंधेरा छाया रहा। फिर ज्योंही उजाला होना शुरू हुआ, हम तट की ओर बढ़ने लगे। कई बार दरारों और खन्दकों से बचने के लिए हमें एक-एक, दो-दो मील का चक्कर काटना पड़ा और तब हम अपने सिर पर

एक विमान की घर्-घर् सुनी। हमने सिग्नल से संकेत दिया, लेकिन एक ही सिग्नल काम कर रहा था और सौभाग्यवश वह काफी था। हमारे सिर पर वह विमान नीचे-नीचे उड़ा और चक्कर काटने लगा, फिर उसने छोटी-छोटी छतरियों में भोजन की सामग्री, बढ़िया कपड़े, शयन के थैले, स्काच मदिरा की एक बोतल, बर्फ के योग्य जूते, रस्सी का सौ फुट का टुकड़ा और एक फाइल में हमारे लिए लिखी हुई आवश्यक सूचनाएं और आदेशावली गिराई। हमने बड़े उत्साह-पूर्वक नये कपड़े पहने और अलग-अलग परोसकर भरपेट भोजन किया। आदेश था कि हम रस्सी से एक-दूसरे को बांध लें और यथा-सम्भव एक सीधी से सीधी पांत में चलें। समुद्र-तट पर एक प्रहरी-नौका हमें जगह देगी।

भोजन के पश्चात् हम अपने-अपने शयन-थैले में घुस गए और गहरी निद्रा में सो गए—नौ दिनों में यह पहली नींद थी। किन्तु घंटे-भर बाद ही हमारी नींद उड़ गई, देखा तो हमारी कुत्तों जैसी बुरी हालत थी—रात, बरसात और बर्फ ने हमें भिगो दिया था और हमारे कपड़ों को, थैलों को जमाकर पत्थर बना दिया था।

उस निपट नारकीय अवस्था में अपने सिर पर थैले ढककर, हम निरन्तर सत्तरह घंटे बरसती हुई वर्षा में खड़े रहे। एक कदम भी आगे बढ़ना काल के कराल गाल में जाने के समान था, क्योंकि भयं-कर खड्ड और दरार हमें निगलने के लिए मुंह खोले बैठे थे।

दूसरे प्रभात भी दुर्दशा को हमपर दया नहीं आई और उसने हमारा साथ नहीं छोड़ा। गहरा कुहासा फैला रहा। हम अपनी जगह बैठे अपने ठंड से जमे हुए पैरों पर लगातार मालिश करते रहे। पैर सूजकर चौगुने हो गए थे और जूतों में समाते न थे और उनसे चलना मानो घाव पर नमक छिड़कना था। हमने अपने इन पैरों पर थोड़ी-सी स्काच मदिरा की मालिश की और इससे कुछ चैन मिला।

दूसरे दिन दोपहर के बाद कुहासा छंट गया और हमने प्रस्थान का प्रयास किया।

फिर से बर्फ पर हम फिसलने लगे। हम इतने कमज़ोर हो गए

थे कि बोझ उठाया न जाता था, अतएव हमने अपने-अपने शयन-थैलों का मोह छोड़ दिया और उन्हें केंचुल की तरह त्यागकर वैरागी-से आगे बढ़ गए।

वातावरण का तापमान गिरते हुए तारे की तरह ऐसा गिरा कि हम त्रस्त हो गए। एक-दूसरे से लिपटकर सोए। एक-दूसरे के गले में, कमर में हाथ डालकर सोए ; किन्तु यह बहुत भयंकर भूल थी, क्योंकि हम इस तरह जम गए कि तीनों-चारों मिलकर एक ठोस आकार बन गए और हमें अपनी समस्त शक्ति लगाकर एक-दूसरे से छुड़ाना पड़ा।

उस रात हमें प्रथम बार यह प्रतीति हुई कि क्या हम इस प्रकार अधिक समय जीवित रह सकेंगे ? हिम और उल्का का प्रचंड तांडव चल रहा था और प्रति एक घंटे के पश्चात् ज़ोर की बिजली गिरती और पर्वतमालाओं में उसकी गर्जना गूंज उठती।

नाश ने प्रस्ताव रखा कि हम कोई भजन गाएं। किंतु हमें एक भी भजन याद नहीं था, हां, फिल्मों के गीत तो कई कंठस्थ थे। और 'गॉड सेव द किंग' के अलावा और कोई भजन याद न था। अतः हम यही भजन गीत गाने लगे। इसके परिणाम में हमारे होंठों और मुंह से खून बहने लगा, फिर भी हमें शांति मिली।

दूसरे दिन का मौसम साफ रहा और हमने पुनः प्रस्थान किया। तट की ओर बढ़ते रहे, हालांकि बर्फ की राह खाई-खंदकों की कमी न थी ! उनमें से कोई-कोई तो हज़ार फुट गहरी थी। उनका चक्कर काटकर हम आगे बढ़ते गए।

दूसरी ओर, बर्फ के उस अनन्त मैदान में हमें नौका-सी कोई वस्तु दिखाई दी—हमारा जहाज़ ! हम भूल गए कि हमारे पैर सूज रहे हैं, हम प्यासे हैं, हम बहुत थके-हारे हैं। हम तो अपनी पूरी ताकत लगाकर दौड़ पड़े, यद्यपि समुद्र-तट कई मील की दूरी पर था।

हम ग्लेशियर के किनारे पहुंचे तब दिन अस्त हो रहा था। इस वक्त भी हम तट की पंक्ति से ढाई सौ फुट ऊंची बर्फ की चट्टान पर थे। उस शाम जहाज़ ने संकेत पर संकेत दिए और अपनी सर्चलाइट डाली। जिस वक्त सर्चलाइट हमपर पड़ती, हम उछलते और सिर

हिला-हिलाकर चिल्लाते, लेकिन रोशनी कभी हमपर न रुकी।

जब दिन निकला, जहाज़ के निकट एक विमान उड़ा। हम बहुत चिल्लाए और इशारे किए, लेकिन चालक ने हमें नहीं देखा और शीघ्र ही वह वापस लौट गया।

सायंकाल के समय जहाज़ समुद्र की ओर लौट गया। हम मौन देखते रह गए और वह अंधकार में विलीन हो गया। अब हम न तो लौटकर अपने विमान तक जा सकते थे और न इस जगह रात बिता सकते थे। मैदान खुला था और रात्रि का तापमान ४०° नीचे था।

अब हमने यह प्रयत्न किया कि किसी तरह अपना कुछ सामान जलाकर मशालों से संकेत दें। कहीं जहाज़ या विमान वाले देख ही लेंगे। ज़िन्दा रहने के लिए इस निराशा से तो यह आशा अच्छी है।

हमने बड़ी कठिनाई से आग जलाई। मशालें बनाईं और लेकर उन्हें प्रेतों की तरह नृत्य करने लगे। तुरंत दूर से जहाज़ की सर्च-लाइट हम तक आई और रुकी रह गई। जहाज़ से मोर्सकोड में संदेश मिला—'ग्लेशियर के किनारे से पीछे हट जाओ और दक्षिण की ओर बढ़ो। तुम्हें लेने के लिए एक दल भेजा जा रहा है।'

खुशी के मारे हम रोने-चिल्लाने लगे और हमें अपने जीवन का बहुत ही आश्चर्यजनक और आनन्दकारी अनुभव हुआ। उस रात आकाश में चंदा ऊंचा चढ़ आया था और यह हमारे भाग्योदय का प्रतीक था। आशा की किरणों से मन इस प्रकार साहस से भर गया कि तत्काल हम दक्षिण की ओर बढ़ गए और खंदकों और दरारों के चक्कर काटते उस जगह पहुंचे जहां ग्लेशियर का ढाल था। उस राह होकर एकदम हम तट के निकट पहुंच गए। इस यात्रा में छः घंटे लगे।

हमारी अगवानी और रक्षा के लिए आनेवाला दल यहीं हमें मिला और हमारी सुश्रूषा आरम्भ हुई। यह अमरीका के सागर-तट का प्रहरी-जहाज़ था और उसके कर्मचारियों ने हमें नवजात शिशुओं की भांति सहेजकर रखा और बड़ी सेवा की।

हमारे लौटते ही वैज्ञानिकों ने हमें घेर लिया। हम उनकी शोध और खोज के विषय बन गए। वैज्ञानिकों और डाक्टरों का कहना

था कि हम विक्षिप्त और अविक्षिप्त अवस्था के मध्य में थ। दोनों अवस्थाओं के बीच की सीमारेखा पर हमारे मन-मस्तिष्क झूल रहे थे, किंतु यदि एक दिन और निकल जाता तो हम पागल हो जाते। डॉक्टरों ने बताया कि उन चौदह दिनों में हम सिर्फ दो घंटे सोए। उन्होंने हमें नींद की दवाइयां दीं, किंतु हम कभी एक बार एक घंटे से अधिक न सो सके। हम सभी साथी अपनी इस निद्रा में चौंक उठते थे। हमें ऐसा प्रतीत होता था, हम शीत से ठिठुर रहे हैं, भूख से पीड़ित हैं और प्रतिपल मृत्यु के मुख में जा रहे हैं। बर्फीली चट्टानें, ग्लेशियर, भयंकर खड्ड और खाई, दरार और खंदक, विपदाओं के अनन्त स्रोत हमें अपनी ओर बुला रहे हैं और हम उनसे लुभा रहे हैं।

किंतु हमारे मस्तिष्क में एक बहुत ही प्रबल और जीवंत भावना थी—एल्नाश की मां उसकी राह देख रही होगी, अतः नाश को मां की चिंता लगी। गुड्लेट की पत्नी थी और एक बालिका भी थी। मेरी पत्नी उधर अमरीका में मेरी प्रतीक्षा कर रही होगी। इन भावनाओं के अमृतमय आवेग ने हमारे तन-मन के मरणप्रद शीत का अंत कर दिया और एक ऐसी सूर्यकिरणवंती ऊष्मा के ज्वार से भर दिया, जो काल और विनाश के समस्त आयोजनों के मध्य प्रत्येक प्राणी को जीवन ही नहीं, पुनर्जीवन भी प्रदान करती है!

जब मैं नकली जनरल बना

जब दूसरा महायुद्ध शुरू हुआ, मैंने भी अपनी सेवाएं युद्ध-विभाग को समर्पित कर दीं। मैं एक सफल अभिनेता था। पच्चीस साल का मेरा अनुभव था, इसलिए मैंने सोचा—बंदूक तो क्या उठाऊंगा, बंदूक उठानेवाले बहादुरों का मनोरंजन करूंगा। यह भी क्या कम है ? थके और उदास सैनिकों की थकान दूर करके, मैं उन्हें खूब हंसाऊंगा।

सन् १९३९ में मेरी सेवाएं स्वीकार कर ली गईं। अचानक एक दिन मुझे कर्नल लिस्टर के सामने पेश किया किया। कर्नल ने कहा—"मैंने आपको इसलिए पसंद किया है कि आप हमारे जनरल मांटगुमरी का अभिनय करें।"

मैं बहुत खुश हो गया। आखिर युद्ध-विभाग को अक्ल आई कि देर-सवेर भी युद्ध-चित्र बनाने का उसने फैसला किया है। लेकिन दो ही मिनट में मेरी इस उमंग पर पानी फिर गया।

"जर्मन सरकार हमारी योजनाओं का तनिक भी संकेत न पा जाए। इसलिए हम आपको दूसरा यानी 'नकली जनरल मांटगुमरी' बनाना चाहते हैं।" कर्नल ने कहा।

अब मैं सब समझ गया ! मेरी शक्ल जनरल मांटगुमरी से एकदम मिलती-जुलती है; यहां तक कि एक समाचारपत्र ने मेरा चित्र प्रकाशित कर पाठकों के लिए लिखा था—"आपका भ्रम है कि यह जनरल मांटगुमरी हैं। नहीं, ये हैं क्लिफ्टन जेम्स, अभिनेता।"

कर्नल लिस्टर का कहना था कि मित्रराष्ट्रों की ओर से एक बहुत बड़ा आक्रमण होनेवाला है। फ्रांस में अपनी सेनाएं उतारकर, हम सीधे बर्लिन तक पहुंच जाना चाहते हैं। लेकिन इस योजना को हिटलर से छिपाकर रखना बहुत मुश्किल है। ज़रा-सा भी संकेत

मिलते ही वह पता लगा लेगा कि हम किस जगह हमला करना चाहते हैं। लेकिन, हमारे लिए यह आसान होगा कि हम उन्हें भुलावे में रखें और अचानक दूसरे स्थान पर आक्रमण कर दें। भुलावे की यह योजना स्वयं जनरल आइज़नहावर ने बनाई है और इसे कार्यान्वित करने के लिए उन्होंने अपनी स्वीकृति भी दी है।

योजना इस प्रकार है :

"जर्मनी के लिए लगातार इस प्रकार के प्रमाण प्रचारित किए जाएं कि जनरल मांटगुमरी इंग्लैंड से रवाना हो गए हैं और संभवतः वे ही ब्रिटिश आक्रामक सेना के प्रधान सेनापति होंगे। वे कहां गए हैं, यह किसीको मालूम नहीं है।"

कर्नल लिस्टर की योजना का यह सार सुनकर, मैंने उनसे पूछा—"बस, इतनी-सी बात है ? जनरल मांटगुमरी के वेश में मुझे इंग्लैंड से प्रस्थान करना है, यही न ?"

"लेकिन याद रहे, इस बारे में आपके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकलेगा।" कर्नल लिस्टर ने मुझे चेतावनी दी। मैंने उसे स्वीकार किया।

घर लौटने पर मैं चक्कर में पड़ गया। ज़िम्मेदारी सिर पर थी और मुझे हर तरह से खामोश रहना था। मेरी तनिक-सी गलती से मित्रराष्ट्रों की महान योजना असफल हो सकती थी और लाखों सैनिक मौत के घाट उतर सकते थे।

इधर अच्छी तरह बंदूक उठाना भी मुझे न आता था और चला था मैं संसार के महत्तम सेनाध्यक्ष का अभिनय करने। इस अभिनय के समय मुझे बड़े से बड़े कमांडरों से बात करनी होगी। कान्फ्रेंसों में भाग लेना पड़ेगा और दिन-रात युद्ध के मोरचे और शत्रु की चालों पर नज़र रखनी होगी।

मैं घबरा गया। मित्रराष्टों का महान सेनाध्यक्ष बनूं या नहीं ? मेरे मन में यही द्वंद्व उठने लगा। नकली ही सही, सेनाध्यक्ष बनना और वह भी युद्ध के मैदान में, कोई साधारण बात न थी।

ज्यों-ज्यों मैं इस विषय पर विचार कर रहा था, मुझे यह विश्वास होता जा रहा था कि नकली जनरल का काम असली जनरल

से भी ज़्यादा मुश्किल है। असली जनरल के पास तो अपना दिमाग है, मगर यहां तो उस दिमाग का नाम भी नहीं है। मेरे मन में कई समस्याएं एकसाथ उठ खड़ी हुईं—सैनिक संसार के शिष्टाचार, अदब-कायदे, तौर-तरीके और नियम-व्यवहार मैं क्या जानूं ? मैं तो अभिनय कर सकता हूं केवल अपने छोटे-से रंगमंच पर। सैकड़ों-हज़ारों मील लंबे-चौड़े युद्ध के मैदान के मंच पर अभिनय करना मेरा काम नहीं था। कैसी मुसीबत में पड़ गया ! कहां तो सैनिकों का मनोरंजन करने चला था, कहां यह बला आ गई !

धीरे-धीरे मुझमें हिम्मत आई और कल्पना में अपने-आपको जनरल मांटगुमरी की जगह देखकर मेरा मन खिल उठा। न केवल जगह, लेकिन पद-मर्यादा, खान-पान, रहन-सहन और सम्मान, सभी हालचाल जनरल मांटगुमरी के समान होंगे। लाख-लाख सैनिक सलामी देंगे। इस कल्पना से मैं उछल पड़ा, लेकिन दूसरे ही क्षण निराश हो गया कि मैं अपना यह सम्मान अपनी प्रेयसी को नहीं दिखा सकूंगा। देखनेवालों में मेरा अपना कोई न होगा।

अगले कुछ ही दिनों में नकली जनरल का मेरा प्रशिक्षण शुरू हो गया। कर्नल लिस्टर और उसके दो सहायक दिन-रात मुझे घेरे रहते, कवायद कराते और मांटगुमरी के बारे में सूचनाएं देते। कई समाचारपत्रों, चित्रों और फिल्मों का अध्ययन मुझे करना पड़ता। इन सब चीज़ों को इतना गुप्त रखना पड़ता कि कुछ कहा नहीं जा सकता। कर्नल लिस्टर जब भी मेरे समीप होते, मुझे यह चेतावनी देना न भूलते कि हमारा काम कितना महत्त्वपूर्ण है, कितना गोपनीय है। अब तो मुझे किसी भी व्यक्ति से बातचीत करते डर लगने लगा।

एक दिन कर्नल लिस्टर ने कहा—"मैं चाहता हूं और इसे आप भली भांति समझ लें कि हमारा यह नाटक शत्रु को भ्रम में डालने के लिए है। इसलिए, नाटक ऐसा हो कि वह बराबर देखता रहे और भुलावे में फंसता रहे। आपको यह स्मरण रखना है कि आपका अभिनय देखनेवाली शक्ति 'साधारण' नहीं है। आप उसे सहज ही भ्रम में डाल दें, यह असंभव है। 'जर्मन हाईकमांड' कान लगाकर

सुन लें, जर्मन हाईकमांड को हम छलना चाहते हैं और यह काम कठिन भी है और असंभव भी है। फिर भी, निराश न होकर प्रयास करना होगा।"

इसके बाद मुझे जनरल मांटगुमरी के अति निकट, निजी स्टाफ में रखा गया, ताकि मैं जनरल की आकृति-प्रकृति का विशेष अध्ययन कर सकूं। लोगों को सन्देह न हो, इसलिए मुझे जासूस-विभाग के एक सार्जेंट के वेश में रखा गया। इस बात को स्टाफ के केवल दो ही आदमी जानते थे।

जनरल मांटगुमरी की रोल्स-रायस कार के पीछे हमारी जीप थी। पोर्ट्स माउथ के एक भवन के बाहर उस दिन बड़े सवेरे हमारे वाहन पांच-पांच गज़ की दूरी पर खड़े थे। पहले दिन मैंने देखा कि निश्चित समय के अन्तराल पर मांटगुमरी के सहकारी हाज़िर हुए। और जब उन्होंने कर्मकांडी पंडों की तरह हमारी अच्छी तरह जांच कर ली, तब स्वयं मांटगुमरी बाहर आया।

जनरल मांटगुमरी ठीक वैसा ही था, जैसीकि मेरी कल्पना थी। उसने चमड़े का जाकिट और अपना प्रसिद्ध काला कोट पहन रखा था। उस समय मैंने गौर से देखा कि सलाम करने का उसका अपना खास ढंग है—हाथ की हल्की, दोहरी हलचल! वास्तव में यह सलाम न होकर, अभयदान का उसका अपना तरीका था।

जब गाड़ियों की कतार चल पड़ी, तो मेरे ड्राइवर ने जनरल की कार से पांच फुट की दूरी बनाए रखी। मेरी आंखें जनरल पर लगी थीं। ग्राम्य प्रदेश की सड़कों पर हमारी कारें दौड़ रहीं थी और सड़क पर जितने आदमी मिलते, रुकते और विस्मय से देखने लगते। और जब वे जनरल मांटगुमरी को पहचान लेते, तो मुस्कराकर, ज़ोर-ज़ोर से हाथ हिलाकर, अभिवादन करते। जवाब में जनरल का वही अभयहस्त धीरे से उठता। यदि राहगीर अभिवादन करना भूल जाता, तो मांटी स्वयं मुस्कराकर अभिवादन करता। एक बार जब हम एक खेतिहर मज़दूर के पास से गुज़रे, तो अचानक मांटी की मुस्कराहट और उसका अभिवादन पाकर बेचारा बूढ़ा मज़दूर विस्मय में पड़ गया। बाद में उसके आनन्द का पार न रहा—यही है

मांटी, हमारा जनरल, जो हमें विजय के शिखर तक पहुंचाएगा। इस समय ब्रिटेन के प्रत्येक स्त्री-पुरुष और बालक का मांटगुमरी पर अटूट विश्वास था, क्योंकि आगामी आक्रमण से वही उनकी रक्षा कर सकता था। समुद्रतट पर जाकर हमारी कारें रुक गईं। वहां एक बहुत ही अद्भुत और आकर्षक दृश्य मैंने देखा। आज सेनाओं का रिहर्सल था। समुद्र में, जहां तक दृष्टि जाती थी वहां तक, युद्ध-पोत, क्रूजर, विध्वंसक और अन्य जलयान खड़े थे। सैकड़ों वायुयान टैंक उतार रहे थे। शस्त्रयानों और भारी तोपों की तो गिनती ही नहीं थी। आकाश में हज़ारों हवाई जहाज़ घहरा रहे थे और नीचे धरती पर पैदल सेनाओं के ठट के ठट खड़े थे।

एक होटल की छत पर बैठे मित्रराष्ट्रों के कई सेनापति इस दृश्य का देख रहे थे। कुछ देर उनसे विचार-विनिमय करने के बाद मांटगुमरी बाहर आया और तुरंत ही उसके पीछे चलनेवालों का एक जुलूस-सा बन गया। मैं ठीक उसके पीछे चल रहा था, लेकिन घ्यानपूर्वक उसे देखने के कारण शेष सभी बातें भूल गया। उस समय के सारे दृश्य के सत्ताधारी के समान, मांटी का व्यक्तित्व सबपर छाया हुआ था, लेकिन अपने निरीक्षण के उपरांत, उसने कहीं आलोचना नहीं की, हस्तक्षेप नहीं किया। वह तो चहलकदमी करता रहा और जब-तब रुककर, फौजी अफसरों से प्रश्न पर प्रश्न पूछता रहा, साधारण सैनिकों को स्नेहपूर्ण ढंग से कोई सीख या आवश्यक आदेश देता रहा।

कैसा था उसका व्यक्तित्व ! ज्योंही वह सामने आया, उसके एक शब्द कहने से पूर्व ही लोगों में पूर्ण निस्तब्धता छा गई। उस वक्त मैंने सोचा, यदि यह व्यक्ति युद्धमंच पर न होकर रंगमंच पर होता, तो निश्चय ही करोड़पती बन जाता।

पैदल सेना के सैकड़ों जवान अभी-अभी नौकाओं द्वारा तट पर उतरे थे, इसलिए या तो थके हुए थे या उन्हें चक्कर आ रहे थे। हालांकि इन जवानों की बड़ी कोशिश थी कि उनकी थकान या बीमारी बाहर न झलके, फिर भी उनमें से कुछ लड़खड़ा रहे थे। एक नौजवान सैनिक ऐसे चल रहा था, जैसे उसकी पीठ पर मनों

बोझ लदा हुआ है। उसकी राइफल एक ओर खिसक गई थी और वह अपने साथियों के कदम से कदम मिलाने के लिए संघर्ष कर रहा था। ज्योंही वह हमारे सामने आया, मुंह के बल गिर पड़ा। करीब सिसकता-सा वह उठ खड़ा हुआ और उनींदा और विस्मित-सा गलत दिशा में चल पड़ा। मांटी तुरंत उस जवान के पास जा पहुंचा और मित्र की भांति मुस्कराकर, उसके कंधे पर हाथ रखकर बोला—"इधर आओ बेटा, इधर; तुम्हारा काम बहुत अच्छा है, शाबाश ! अपने से आगे के साथी के साथ चलने का ध्यान रखो।" इसके बाद मांटी ने उस जवान का सामान और राइफल वगैरह सही तरीके से उसकी देह पर सजा दिए।

उस जवान को बाद में जब यह मालूम हुआ कि उसको यह मैत्रीपूर्ण सहायता देनेवाला व्यक्ति मांटी था, तो वह गूंगे की तरह मौन रह गया। अपने जनरल पर उसका मन मुग्ध और न्योछावर हो गया। ऐसे सैकड़ों चमत्कारों द्वारा मांटी अपने सैनिकों में आत्म-विश्वास और वफादारी के भाव भरपूर भर देता था।

अगले कुछ ही दिनों में, मैं जनरल के बारे में बहुत कुछ जान गया। वह न तो धूम्रपान करता था, न शराब ही पीता था और स्वस्थ रहने के लिए कुछ भी छोड़ने को तैयार रहता था। भोजन के समय पशु-पक्षियों और फूलों की चर्चा करता था। यदि उसके अधीनस्थ अधिकारी प्रकृति के इतिहास के विषय में अनभिज्ञ सिद्ध होते तो वह उनसे रुष्ट होता। लड़ाई के बारे में बातचीत करते मैंने उसे कभी नहीं सुना। मैंने उसकी चाल का पर्यवेक्षण किया। वह अपने दोनों हाथ पीछे रखकर चलता था। उसकी भोजन की आदतों पर भी मैंने काफी ध्यान दिया। अंत में मुझे विश्वास हो गया कि जहां तक उसकी आवाज़, हाव-भाव और आदतों का सवाल है, मैं उसकी पूरी-पूरी नकल कर सकूंगा। लेकिन मुझे यह भी खयाल आया कि क्या मैं उसके आदर्श व्यक्तित्व की नकल कर सकूंगा और क्या उसकी तरह लोगों में शक्ति और प्रचुर आत्मविश्वास के भाव भी भर सकूंगा ? मुझे इसमें शंका थी।

जनरल मांटगुमरी से मिलने का मुझे एक अवसर भी दिया

गया, ताकि मेरे अध्ययन का अंतिम अध्याय भी पूरा हो जाए। जब मैंने कमरे में प्रवेश किया, वह अपनी मेज़ पर बैठा लिख रहा था। मुझे देखकर एक मुस्कान के साथ खड़ा हो गया। यद्यपि मैं उससे कम उम्र का था, फिर भी मैंने देखा, मुझमें और उसमें कहीं कोई अंतर नहीं है। दर्पण में मेरी परछाईं की तरह है जनरल मांटगुमरी। इस भेंट से मुझे बहुत-सी नई बातें मिलीं। वह बहुत ही साफ-सीधी भाषा का प्रयोग करता है। यहां तक कि लोग कहते हैं, उसकी बात-चीत बड़ी रूखी और अनाकर्षक है।

जब मैंने विदा ली, वह उठकर खड़ा हो गया और बोला—"तुमपर बड़ी ज़िम्मेदारी है, लेकिन तुम्हें आत्मविश्वास तो है न ?"

और जब मैं उत्तर देते कुछ झिझका, तब उसने तुरंत कहा—"चिंता न करो, सब कुछ ठीक हो जाएगा।" और उसी क्षण मेरी निराशा ओझल हो गई। ऐसी थी उस व्यक्ति में विश्वास जाग्रत करने की शक्ति और योग्यता। कुछ दिन पश्चात्, युद्ध-विभाग में कर्नल लिस्टर ने मुझसे कहा—"तो जेम्स, अब परदा उठने का वक्त आ गया है। कल सायंकाल साढ़े छः बजे तुम जनरल मांटगुमरी बन जाओगे। हज़ारों लोगों के देखते, तुम्हें हवाई अड्डे पर ले जाया जाएगा। वहां से प्रधानमंत्री के वायुयान के द्वारा दूसरे दिन, पौने आठ बजे तुम जिब्राल्टर में उतरोगे। सुनो, हमने समूचे अफ्रीकी समुद्र तट के लोगों में यह अफवाह फैला दी है कि जनरल मांटगुमरी दक्षिणी फ्रांस पर आक्रमण करनेवाली एंग्लो-अमरीकी सेना का गठन करने के लिए आनेवाला है। अब तुम्हें पूरे मध्यपूर्व में सफर करना होगा, ताकि ये अफवाहें सत्य साबित हो जाएं। तुम्हारी हर-एक हलचल को हिटलर के जासूस बहुत ही गौर से देखेंगे और लगातार तुम्हारा पीछा करते रहेंगे। हम तुम्हें यह बता सकते हैं कि कब क्या करना होगा और क्या नहीं, किंतु संसार में सदैव सभी काम योजनानुसार तो संपन्न नहीं होते। तुम्हें जब-तब परिस्थिति के अनुरूप अपने मस्तिष्क का प्रयोग करना पड़ेगा। तुम हमेशा स्थित पर अधिकार बनाए रखना और कभी प्रतिकूल परिस्थिति से पराजित न होना। याद रखो, आज से बड़े से बड़ा फौजी अफसर

भी तुम्हारे लिए सिर्फ एक मातहत है और तुम्हें उससे वैसा ही व्यवहार करना होगा। यदि दर्शक तुम्हारे स्वागत में हर्षध्वनि करते हैं, तालियां बजाते हैं, तो समझो, तुम इस सबके अधिकारी हो।"

दूसरे दिन, ठीक समय पर जब मैं जनरल मांटगुमरी के युद्धवेश में कर्नल लिस्टर के सामने उपस्थित हुआ, तो मुझे देखकर वह बहुत खुश हुआ।

"एक चीज़ रह गई है," उसने कुछ रूमाल देते हुए कहा—"जब, जहां तुम ठीक समझो, इन्हें एक-एक कर भूल से गिरा देना। इन रूमालों पर जनरल मांटगुमरी का नाम लिखा हुआ है। इस विषय में तुम्हें अधिक बताने की आवश्यकता नहीं है।" इसके बाद कर्नल लिस्टर ने मेरा हाथ पकड़ा, अपनी शुभकामनाएं प्रकट कीं और तुरंत चला गया।

अब रंगमंच पर मेरे आने की बारी और बेला थी। मैं तुरंत अपना काला कोट ठीक कर, अपने दो निजी सचिव ब्रिगेडियर हैवुड और कैप्टन मूर के साथ सीढ़ियां उतरकर नीचे आया।

नीचे तीन फौजी कारें हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। उनके आसपास भीड़ जमा हो गई थी, खासकर उस गाड़ी के आसपास जिसपर मांटी का निशान फहरा रहा था। ज्योंही मैं गाड़ी में बैठा, गाड़ी चली। लोगों ने हर्षध्वनि की और मैं मांटी की तरह मुस्कराया और उसीकी तरह मैंने लोगों का अभिवादन किया। मैंने उन्हें कहते सुना—"हमारा अच्छा-भला, बूढ़ा मांटी।"

मैं मुस्कराया और अभिवादन में मेरा हाथ उठा रहा, यहां तक कि मेरे चेहरे की नसें तन गईं और मेरी भुजा की रगों में दर्द होने लगा। नाथर्लो के हवाई अड्डे पर लोगों की भीड़ और भी ज्यादा थी। मेरे वायुयान के समीप बड़े-बड़े फौजी अफसर एक लंबी कतार में पंक्तिबद्ध खड़े थे। मेरे लिए, अपने इस अभिनय में चिंता की बात तो यह थी कि इन अफसरों में कई मांटी के मित्र थे और उसे निजी रूप में भी जानते थे। इसलिए वायुयान तक पहुंचते-पहुंचते मेरा दिल पिस्टन की तरह धड़कने लगा। किंतु मैंने हिम्मत न हारी और कार रुकते ही स्वाभाविक तरीके से कदम बढ़ाया, तनिक

मुस्कराया और आगे बढ़ गया। मेरे स्वागत म अटेंशन में जो बड़े फौजी अफसर पंक्तिबद्ध खड़े थे, मैंने उनका निरीक्षण किया। ब्रिगेडियर हैवुड मेरे पीछा था। निरीक्षण के उपरांत मैंने यानचालक से कहा—"कैसे हो स्ली ? हम समय पर पहुंच जाएंगे ? तुम्हारा क्या खयाल है ?"

मैंने उससे और दूसरे लोगों से मौसम के बारे में चर्चा की। यान के चालकों का निरीक्षण करता हुआ मैं यान पर चढ़ गया, उसके द्वार पर खड़े होकर मैंने सबका अभिवादन किया और जाकर अपनी जगह बैठ गया। मेरे मन को संतोष मिला कि मैं प्रथम दृश्य के प्रथम अभिनय में सफल हुआ हूं। बाद में मुझे मालूम हुआ कि मांटी का एक परिचित अफसर कह रहा था—"हमारा बूढ़ा मांटी एकदम स्वस्थ है, किंतु कुछ थका हुआ प्रतीत होता है।" लेकिन, उस बेचारे को क्या मालूम था कि यह उसका बूढ़ा मांटी नहीं, बल्कि क्लिफ्टन जेम्स है !

दूसरे दिन सुबह, हमारा वायुयान जिब्राल्टर के हवाई अड्डे पर उतरा। मेरे अभिनय और दृश्य का दूसरा दौर शुरू हो गया। जब मैं अड्डे पर उतरा, मेरे सामने कारों की कतारें और फौजी अफसरों की कतारें खड़ी थीं। भीड़ में स्पेनी मज़दूर थे, जिनमें से कुछ जर्मनी के जासूस थे। हैवुड ने मुझसे कहा—"अधिक से अधिक आदमी आपको देखें, ऐसा प्रयत्न कीजिए।" वायुयान का द्वार पूरा खोल दिया गया। मैं उसमें एक पल के लिए खड़ा हुआ। दर्शकों में खामोशी छा गई। मैंने अपने मांटी-अभिवादन का प्रदर्शन किया और फिर बड़े ठाट से सीढ़ियां उतर गया।

स्वागत-समारोह के पश्चात् जिब्राल्टर की सड़कों पर स्पेनी लोगों की भीड़ में मेरा जुलूस निकाला गया। राजभवन के बाहर और ज़्यादा भीड़ थी। यहां मुझे सैनिक सलामी दी गई और जिब्राल्टर के राज्यपाल जनरल सर राफ स्टवुड ने, जो मांटगुमरी का पुराना दोस्त था, मुस्कराकर मेरा स्वागत किया—"हलो मांटी, आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई।"

इस भेंट के बारे में मुझे पहले ही भली भांति बतला दिया गया

था, इसलिए मुझे मालूम था कि मांटी सर राफ को उसके प्यार के नाम से ही पुकारता था। इसलिए मैं बोला—"कैसे हो रस्टी ?" और मांटी के हूबहू अंदाज़ में मैंने कहा—"तुम तो काफी स्वस्थ नज़र आते हो।" फिर बिना किसी तकल्लुफ के उसका हाथ पकड़ लिया और हम लोग राजभवन के भीतर चले गए।

सर राफ मुझे अपने निजी कक्ष में ले गया और दरवाज़े के बाहर बरामदे में झांककर सावधानी से द्वार बन्द कर एकदम मौन होकर मुझे एकटक देखने लगा। इसके बाद उसके चेहरे पर मुस्कान छा गई और बड़े प्रेम से मुझसे हाथ मिलाते हुए वह कहने लगा—"मुझे अब भी संदेह है कि तुम असली मांटगुमरी नहीं हो ! यह तो तुम स्वयं हो मांटी ! शायद योजना बदलकर, खुद ही चले आए हो।"

"गौर से देखो, आवाज़ पहचानो।" और मैंने अपनी आवाज़ बदल दी। अब जाकर राज्यपाल को मालूम हुआ कि मैं मांटगुमरी तो हूं, लेकिन उसका दोस्त मांटगुमरी नहीं। मैं वह मांटगुमरी हूं, जिसे सरकार ने 'मांटगुमरी' बनाकर, सर राफ स्टवुड राज्यपाल के पास भेजा है और राज्यपाल इस भेद को जानता है। लेकिन भेद जानते हुए भी वह चक्कर में पड़ गया था।

मैंने अपने कमरे में अकेले ही नाश्ता किया। बाद में, मैं खिड़की की ओर चहलकदमी करने लगा। अचानक मेरी नज़र पास के एक मकान पर पड़ी। इस मकान की छत से एक आदमी मेरी ओर राइफल जैसी चीज़ का निशाना साधे बैठा था। मैं बहुत डर गया, लेकिन जब मैंने साहसपूर्वक गौर से देखा, तो ज्ञात हुआ कि उस व्यक्ति के हाथ में राइफल नहीं, छोटी-सी दूरबीन है।

राज्यपाल ने मुझे आगे की योजना समझा दी कि ठीक बारह मिनट बाद हम दोनों राजभवन के पिछवाड़े बगीचे में सैर करेंगे। उस समय स्पेन के दो धनी साहूकार हमारे यहां कुछ पुराने और मूल्यवान गलीचे देखने के लिए आएंगे। अचानक बगीचे से गुज़रते वक्त आपपर उनकी नज़र पड़ेगी।" इतना कहकर सर राफ ने आंख से इशारा किया। अपनी घड़ी देखी और बगीचे की ओर मुझे ले

गया। रास्ते में धीमे से बोला—"बचपन से आज तक ऐसा मजा कभी नहीं आया।"

जिस समय हम दानों बगीचे में सैर कर रहे थे, साफ आसमान से सूरज दहक रहा था। मेरी नज़र पड़ौस के मकान पर पड़ी और मैंने मज़दूरों की भीड़ में उस मज़दूर को भी देखा जो दूरबीन से मुझे देख चुका था। अब भी वह मुझे ताक रहा था, किन्तु जब मैंने उसकी ओर देखा, तो उसने नज़रें हटा लीं और अपना काम करने लगा।

हम बगीचे में घूमते रहे। दरवाज़े पर लोहे की भारी आवाज ने हमारा ध्यान आकर्षित किया। काले सूट पहने, साफ चेहरे-मोहरे वाले दो स्पेनी हमारी ओर आ रहे थे।

सर राफ ने बहुत ही धीमी आवाज़ में कहा—"घबराना मत जेम्स, अपना दिमाग न खोना।"

मैं सर राफ से इस तरह बातों में लग गया, जैसे मैंने उन दोनों साहूकारों को देखा ही न हो।

"तो रस्टी, वार कैबिनेट प्लान ३०३···"

राज्यपाल जैसे मुझे सचेत कर रहा हो, उसने मेरा हाथ दबाया और मैंने बात रोककर आगन्तुकों के प्रति आश्चर्य प्रकट किया, मानो मैंने उन्हें अभी ही देखा है।

सर राफ ने सम्मानपूर्वक उनका अभिवादन किया और उन्होंने स्पेनी ढंग से झुक कर उत्तर दिया। सर राफ ने मेरा परिचय दिया, तो वे भय, विस्मय और सम्मानपूर्वक मुझे देखते रह गए। मैं उनसे अलग-सा, किन्तु विनम्र रहा और ठीक मांटी की तरह, अपनी पीठ पर हाथ बांधे रहा।

ये दोनों आदमी हिटलर के जासूस थे। और कोई साधारण जासूस नहीं थे। वे गेस्टापा द्वारा प्रशिक्षित हिटलर के चतुरतम जासूस थे। इनमें से एक अपनी खूनी नज़रों से मुझे निरन्तर ताक रहा था और दूसरा सर राफ से बातचीत कर रहा था। लेकिन वास्तव में उसकी नज़रें भी मेरे चेहरे पर लगी थीं। मैं मौसम, फूलों आर राजभवन के इतिहास के बारे में बातचीत करता रहा।

जब मैंने अनुमान लगाया कि ये मुझे अच्छी तरह देख चुके हैं, तो यह कहते हुए मैं अचानक लौट पड़ा—"अच्छा, मुझे उम्मीद है, मौसम साफ रहेगा। अभी तो मुझे बहुत दूर की उड़ानें भरनी हैं।" दोनों जासूसों ने तत्काल मुझसे विदा ली।

सर राफ स्टवुड उन्हें लेकर एक कमरे में चला गया। अल्प-समय में यह सारी घटना हुई, किंतु इसी अल्प समय ने उन दोनों जासूसों और हमारे कई हज़ार सैनिकों के भाग्य का निर्माण कर दिया। वह क्षण ऐतिहासिक था।

जिस समय इंग्लैंड से अफवाह फैलाई गई थी कि मैं मध्यपूर्व की यात्रा पर जा रहा हूं और हमारी आक्रमण की एक विशेष योजना है, जर्मन हाईकमांड ने उसी समय उन दोनों जासूसों को सभी तरह की सुविधाएं देकर, स्पेनी साहूकार के वेश में, स्पेन में प्रविष्ट करा दिया था। अब वे दोनों जिब्राल्टर में रहने लगे थे। उनका एकमात्र उद्देश्य यही था कि वे मुझपर जासूसी करें। बाद में मालूम हुआ कि जिब्राल्टर में उन्होंने अपने दो और दलाल नियुक्त किए थे, जो बराबर उन्हें खबरें पहुंचाते थे। एक तो मज़दूर के रूप में राजभवन और आसपास के मकानों में काम करता था, दूसरा हवाई अड्डे पर। इन चारों जासूसों को जर्मनी का आदेश था कि अलग-अलग अपनी रिपोर्ट दें और अपनी देख-रेख के पूरे हाल-चाल पेश करें। उपर्युक्त स्पेनी साहूकारों के वेश में इन जर्मन जासूसों ने काफी फुर्ती से काम किया होगा, क्योंकि मेरे आगमन के दो ही घंटे बाद मैड्रिड में हिट-लर के प्रतिनिधियों को यह खबर मिल गई कि जनरल मांटगुमरी जिब्राल्टर में आ पहुंचा है और हवाई जहाज से अफ्रीका जा रहा है। खबर मिलते ही बर्लिन ने मैड्रिड को आदेश दिया कि किसी तरह भी प्लान नंबर ३०३ के बारे में पूरा पता लगाओ। यह अत्यंत ज़रूरी है। और कुछ ही क्षणों में जर्मन जासूसों का ज़बरदस्त दल इस समस्या का हल खोजने में लग गया।

जिब्राल्टर से मेरा प्रस्थान भी उसी प्रकार विधिवत् सम्पन्न हुआ, जिस प्रकार कि मेरा आगमन। धूप में सलामी की संगीनें चमकीं और आकाश में अपने पंख झुकाकर वायुयानों ने सलामी दी।

जब ये विधियां सम्पन्न हो गईं, मैंने सर राफ की बांह थाम ली और घूमते हुए हम दोनों हवाई अड्डे के कैंटीन में आए। वह भी ज़रूरी था, क्योंकि यहां हिटलर का चौथा जासूस काम करता था। जान-बूझकर खिड़की के निकट खड़ा होकर, मैं सर्वथा मनगढ़ंत और झूठी योजनाओं को लेकर अनिवार्य सैनिक महत्त्व के विषय पर, तर्क में तल्लीन हो गया—"सो रस्टी, समुद्री किनारे की रक्षा का प्रश्न हमारे सामने है। मैंने प्रधानमंत्री से कह दिया है कि 'सी-फोर' सर्वथा सुरक्षित है, लेकिन मैं जहाजों की पूरी सुविधा चाहता हूं, ताकि वक्त बरबाद न हो और आदमी और गोला-बारूद बराबर मुझ तक पहुंचते रहें।" और खाड़ी की ओर हाथ लंबा कर इशारा करते हुए बोला—"अगर हम सरकार से तीन बजे तक का खाड़ी का अधिकार प्राप्त कर लें, तो हमारे टैक्नीशियन प्लान नंबर ३०३ को अच्छी तरह फिट कर लेंगे।"

इस प्रकार मैं लगातार, बिना सिर-पैर की बातें बोलता रहा और राज्यपाल ने मुझे आंख से इशारा किया कि ठीक है, बकते रहो।

मेरा दूसरा पड़ाव अल्जीरिया था। यहां भी सावधानी से बीज़ारोपित अफवाहें हवा में उड़ रही थीं कि जनरल मांटगुमरी बहुत बड़ी योजना लेकर आ रहा है—संभवतः एंग्लो-अमरीकी सेना का संयोजन होगा और दक्षिणी फ्रांस पर आक्रमण किया जाएगा।

हवाई अड्डे पर जनरल विल्सन के सेनापतियों ने मेरा स्वागत किया। वहां मैंने पदाति सेनाओं का निरीक्षण किया। समीप ही नागरिकों की भीड़ खड़ी थी। इन लोगों के दिलों में अफवाहों के द्वारा दिलचस्पी पैदा कर दी गई थी और ये मांटी की एक झलक पाने के लिए यहां तक आए थे; लेकिन इन्हें क्या मालूम था कि वे असली नहीं, बल्कि नकली मांटी को देख रहे हैं!

भीड़ में दो इटालवी थे, जो प्रत्यक्ष में तो मित्रराष्ट्रों के समर्थक थे, किंतु असल में गैस्टापो के आदमी थे। हम जानते थे कि एक फ्रांसीसी मेजर उनका अफसर है। यह भी, प्रत्यक्ष में फ्रांसीसी सेना का पदाधिकारी था, किंतु वास्तव में शत्रु का सफल जासूस था। ज्योंही मैं

अल्जीरिया पहुंचा, इस फ्रांसीसी ने मुझे मांटी समझकर मुझसे मिलने की इच्छा प्रकट की और हमारे लोगों ने भेंट का समय भी निश्चित कर दिया।

हवाई अड्डे से मेरे रवाना होने से पूर्व ही, जनरल विल्सन के एक स्टाफ अफसर ने इस फ्रांसीसी का परिचय कराया। इसे देखकर, मैं जैसे डर गया। ऐसा भयंकर आदमी मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखा था। उसकी गहरी काली आंखों में बड़ी चमक थी। उसके पीले चेहरे पर एक बेहूदे घाव का दाग था। मुंह बड़ा क्रूर था और ऐसा प्रतीत होता था, यह आदमी कैसा भी भयंकर काम कर सकता है। मैं उसकी हलचल सावधानी से देखता रहा, कहीं यह मुझे गोली न मार दे। हमने सिर्फ हाथ मिलाया और एक-दूसरे के प्रति शुभ कामनाएं प्रकट कीं और बिना किसी दुर्घटना के हमारी मुलाकात खत्म हो गई। हवाई अड्डे से मुझे नगर की ओर ले जाने के लिए एक अमरीकी लड़की थी। वह यू० एन० आर्मी विमेंस कोर की वर्दी पहने थी। उसने सलाम ठोककर मुझसे आग्रह किया कि मैं उसे अपना आटोग्राफ दूं।

मैं संकट में पड़ गया, किन्तु ऐसे ही अवसर के लिए, आटोग्राफ के शिकारियों से मेरी रक्षा के लिए, कर्नल लिस्टर ने मुझे मांटी के हस्ताक्षरों के कुछ चित्र दिए थे। तत्काल मैंने आटोग्राफ का एक चित्र चालाक महिला को दिया और मुस्कराया तक नहीं, क्योंकि सब लोग जानते थे कि मांटी युद्ध के रंगमंच पर सुंदरियों की उपस्थिति से अप्रसन्न होता था।

हवाई अड्डे से नगर तक की यात्रा को मैं आजीवन नहीं भूल सकता। मेरे अमरीकी अंगरक्षक ने मुझे पहले ही सावधान कर दिया था कि इस रास्ते में मुझपर हमला हो सकता है। इस मार्ग में पहरे के लिए हमारी ओर से एक भी सैनिक की नियुक्ति नहीं की जा सकती थी, क्योंकि सैनिकों की कमी थी। इसलिए यह तय हुआ कि पूरी गति से गाड़ी छोड़ दी जाए। आगे-आगे भोंपू बज रहा था और पीछे-पीछे हमारी गाड़ी पूरे वेग से दौड़ रही थी, और मैं अपने अंगरक्षक कर्नल से मांटी की भांति बातचीत में मग्न था। जब हम

जनरल विल्सन के केन्द्रीय कार्यालय में पहुंचे, तब मेरे जी को चैन मिला। जान बची और लाखों पाए।

जनरल विल्सन का कार्यालय श्वेत पाषाण के एक बहुत बड़े भवन में था। ज्योंही मैं प्रविष्ट हुआ, दरवाज़े बन्द कर दिए गए। इसके साथ ही मेरे अभिनय का एक और अध्याय समाप्त हो गया। अगले कुछ दिन बड़े आराम से गुज़रे। जैसे मैं स्वप्नलोक में विचरण कर रहा था। मेरी दिनचर्या थी—सैनिकों की सलामियां लेना, सरकारी स्वागत-समारोहों में भाग लेना और हमेशा मोर्चाबन्दी की बे-बुनियाद बातें करते रहना। मेरे स्वागत में दर्शक नागरिकों की भीड़ उमड़ी हुई रहती, जिसमें शत्रु के जासूस भी शामिल रहते।

चूंकि, मैं सिर्फ एक अभिनेता था और मेरी आत्मा जानती थी कि मैं अभिनेता हूं और जनरल तो क्या, एक साधारण सिपाही भी नहीं हूं, इसलिए मुझे बड़े सैनिक अफसरों से मिलने में बड़ा डर लगता था। मुझे उनसे युद्ध-विषयक उच्चस्तर की बातें करनी पड़ती थीं और मैं अपना असली रूप छिपाकर कब तक उनसे विचार-विनिमय कर सकता था! वैसे इस कार्य के लिए मेरी नियुक्ति करनेवालों ने मेरा कार्यक्रम ही इस चतुराई से निश्चित किया था कि एक तो मैं अपना भोजन अकेला ही ग्रहण करता, दूसरे उन अफसरों से मुझे दूर रखा गया था, जो जनरल मांटगुमरी को निजी तौर पर भी जानते थे। मुझे सदैव जान-बूझकर दुश्मन के दलालों और जासूसों के बीच में फेंका गया। मुझे अच्छी तरह याद है, ब्रिगेडियर हैवुड एक दिन एक बुज़ुर्ग नागरिक को मेरे पास लाया था। उस बुज़ुर्ग की वेशभूषा इस तरह फटी-पुरानी और अस्तव्यस्त थी, मानो वह कोई पुराना आशिक हो या किसी दुखांत नाटक का नायक हो।

हैवुड मेरे पास आकर बोला—"क्षमा कीजिए, श्रीमान प्रोफेसर साल्वेदोर आपसे मिलकर बड़े प्रसन्न होंगे। आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि आप उन्हें विनम्र अभिवादन पेश करने का मौका दें। वे पुरातत्त्व विशारद हैं, बड़े मशहूर आदमी हैं और वफादार इटालवी हैं।"

पल-भर के लिए मैं विस्मय में पड़ गया। क्यों इस तरह मेरा

वक्त बरबाद किया जाता है? लेकिन मैंने सोचा, हैवुड ने अधिकारियों की योजना के अनुसार ही इस इटालवी पुरातत्त्ववेत्ता से मिलने का प्रस्ताव रखा होगा। हैवुड वर्षों से हमारे विभाग में काम कर रहा है। ऊंच-नीच समझता है और अपनी ज़िम्मेदारी का भी उसे भान है। अतएव मैंने पुरातत्त्व के प्रोफेसर साहब को मिलने की स्वीकृति दे दी।

प्रोफेसर से मैंने चन्द शब्दों में बातचीत की और जब नतमस्तक नमस्कार कर वह विदा हुआ आर चन्द कदम दूर चला गया, तो मैं हैवुड से झूठमूठ के मिलिट्री मामलों पर ज़ोर-ज़ोर से बहस करने लगा। इस बला से छुटकारा मिला, किन्तु मैं और हैवुड इतने पारंगत नहीं थे कि इस योजना के रंगमंच पर, प्रत्येक अभिनय और प्रत्येक परिस्थिति में सहज ही सफल हो जाएं। इस कठिनाई का संकट तब हमारे सामने आया, जब उत्तरी अफ्रीका के एक दूसरे शहर में एक फ्रांसीसी औरत से बातचीत करने का मेरा कार्यक्रम रखा गया। सरकार की दृष्टि में यह अत्यन्त आवश्यक था। मुझे हैवुड से मालूम हुआ था कि इस फ्रांसीसी औरत का पति पेरिस के प्रतिरोध-आंदोलन के समय जर्मन गेस्टापो के हाथों में पड़ गया था। इसके बाद जर्मनों ने इस औरत को भी गिरफ्तार किया और इसके सामने यह प्रस्ताव रखा कि या तो वह जर्मनी के लिए जासूसी करे या अपने पति की मृत्यु की प्रतीक्षा करे—जेल में उसे धीरे-धीरे तड़पाकर मार डाला जाएगा।

इस अभागिन ने इच्छा न रहते हुए भी प्रथम प्रस्ताव स्वीकार किया था और अब यह अल्जीरिया में रहकर जर्मनी के लिए जासूसी कर रही थी।

जब इस औरत को मेरे सामने पेश किया गया, तो मैंने देखा कि लंबे कद और सांवले रंग की सुंदर परिवेश वाली लगभग पचास वर्ष की आयु की एक महिला मेरे सामने खड़ी है। स्त्रियों से दूर रहने की मांटी-परंपरा के अनुसार मैंने उसका अभिवादन तो किया, किंतु रूखेपन से कुछ शब्दों का आदान-प्रदान किया। बाद में मैंने देखा कि उसकी नसें तन रही हैं और सहसा उसका आत्मनियन्त्रण अस्त-

व्यस्त हो गया है। हिस्टीरिया जैसी अवस्था में वह गहरी सिसकियां लेने लगी। उसका सारा शरीर कांपने लगा। वह ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर युद्ध को 'शैतान' का काम बताने लगी और मुझे युद्ध का बड़ा पुरोहित। मैं बड़ी दुविधा में पड़ गया कि अब क्या करूं। आखिर मैं दूर हट गया। तभी हैवुड आगे बढ़ा और उसे एक ओर ले गया। स्पष्ट था कि इस महिला के मन में उसके राष्ट्रप्रेम और अपने पति की प्राणरक्षा की कामना के बीच द्वन्द्व चल रहा था और इस द्वन्द्व ने उसके मस्तिष्क को, मार्ग न मिलने के कारण विकृत कर दिया था।

यही एक अवसर था, जबकि मैंने हैवुड को तटस्थ द्रष्टा के रूप में देखा। उसने इस विषय पर मुझसे कभी बातचीत नहीं की और मैं भी चुप रहा।

ज्यों-ज्यों दिन गुज़रने लगे, जनरल मांटगुमरी के अभिनय में मैं इतना दक्ष और पूर्ण बन गया कि सभी दृष्टियों से मैं स्वयं भी अपने-आपको जनरल मांटगुमरी समझने लगा। यहां तक कि जब मैं अकेला होता, तब भी जनरल मांटगुमरी की तरह रहता अथवा व्यवहार करता।

एक बार जब मैं और हैवुड एक अड्डे पर उतरनेवाले थ, हैवुड ने मुझसे पूछा—"हिम्मत तो है ?"

मैंने तत्काल मांटी की आवाज़ में मुंहतोड़ जवाब दिया—"क्या बकते हो हैवुड ?"

"क्षमा करें श्रीमान्।" कहकर वह अटेंशन में आ गया।

एक सप्ताह पश्चात् मैं अल्जीरिया लौट आया। मैं जानता था कि बिना किसी दुर्घटना के उत्तरी अफ्रीका में मैंने अपना अभिनय पूरा कर लिया है। जहां तक हमारी जानकारी थी, किसीने संदेह नहीं किया और मैं नकली जनरल मांटगुमरी बना रहा।

फ्रांस में, जोकि जर्मनी के अधिकार में था, आक्रमण होने में विलम्ब नहीं था। इसलिए मैं जनरल विल्सन के केन्द्रीय कार्यालय लौट आया। उन दिनों मैं अपनी ख्याति के सर्वोच्च सोपान पर था। जनरल मांटगुमरी की वर्दी छोड़कर मैं अपनी वास्तविक वेशभूषा में

आ गया। लेकिन समय बदलते देर नहीं लगती। अब मेरा वह सम्मान नहीं होता था—मेरा अभिनय जो समाप्त हो गया था। अब मुझे पानी तक के लिए कोई नहीं पूछता था।

एक दिन जनरल विल्सन के कार्यालय के पिछले दरवाज़े से मुझे चुपचाप खिसका दिया गया। फिर भी मुझपर एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी तो थी ही कि जब तक फ्रांस पर आक्रमण शुरू न हो जाए, मुझे छिपकर रहना पड़ेगा। जर्मनों को यह मालूम नहीं होना चाहिए कि दरअसल मैं जेम्स, मांटगुमरी बनकर अपनी कलाओं से उन्हें छका रहा था। इस रहस्य का आक्रमण से पूर्व उद्घाटन होना अत्यंत संकटपूर्ण था। इसीलिए मेरे अधिकारियों ने ठीक ही सोचा कि मैं मिस्र की राजधानी काहिरा जैसी दूर जगह चला जाऊं, जहां मुझे कोई नहीं पहचानता था। अतएव एक दिन तीसरे पहर मुझे एक वायुयान पर चुपचाप बिठा दिया गया और मैं काहिरा चला आया।

बाद में मुझे मालूम हुआ कि अब जर्मनों को, मुझ नकली जनरल की मध्यपूर्वयात्रा का संपूर्ण समाचार मिला था, तब जर्मन हाई कमांड ने अपने जासूसों को मेरा वायुयान आकाश-पथ में ही उड़ा देने अनिवार्य आदेश दिया था। ऐसा न हो पाए तो मुझ मांटी को स्पेन या अफ्रीका में क़त्ल कर देने का उसका हुक्म था। इससे पता चलता है कि मेरा काम कितना कठिन था। लेकिन इसके सफल हो जाने से मित्रराष्ट्रों को बहुत लाभ हुआ। मेरे अभिनय के जादुई असर में आकर फील्डमार्शल रोमेल की बख्तरबंद सेनाएं बहुत दूर चली गईं और फ्रांस पर आक्रमण करना सुगम हो गया।

वीरवर वान वेरा

दूसरे महायुद्ध की अवधि में एक ऐसे वायुयान-चालक का नाम इतिहास के सुनहरे पृष्ठों पर अंकित दृष्टिगोचर होता है, जो अपने समय का सर्वोच्च चालक ही नहीं, बहुत ही खूबसूरत नौजवान भी था। साहस, वीरता, त्याग और बलिदान, किसी भी गुण में वह किसी भी देश के वीर से कुछ कम न था। लड़ाकू वायुयानों के संचालन में वह अत्यन्त कुशल था। उसकी बुद्धिमत्ता, चतुराई और साहसिक वृत्ति ने ब्रिटेन की सुरक्षा के विरुद्ध उसे सबसे बड़ा संकट बना दिया था। ब्रिटेन का यह रिकार्ड है कि युद्धकाल में उसके किसी भी बंदीगृह से एक भी बन्दी निकलकर न भाग सका, किन्तु इस खूबसूरत जर्मन नौजवान वायुयान-चालक ने ब्रिटेन के इस दावे को भी गलत साबित कर दिया। इस घटना की कहानी अत्यन्त रोचक, रहस्यमय और रोमांचकारी है।

इस खूबसूरत नौजवान का नाम था। फ्रांज़ वान वेरा। स्वयं हेर हिटलर ने इसकी सेवाओं की प्रशंसा की और ब्रिटेन, कनाडा तथा अमरीका के समाचारपत्रों ने अपने इस शत्रु की वीरता की वन्दना की।

सन् १९४०। जर्मनी वायुयानों की लहर पर लहर लन्दन पर भीषण बमवर्षा कर रही थी। सारा ब्रिटेन विनाश के इस प्रचण्ड तांडव से चिन्तित था। अचानक एक दिन कॉकफास्टर्स के पुलिस-दफ्तर में दो मजबूत जमादार फ्रांज वान वेरा को अपने साथ लाए। एक सुन्दर और साफ़-सुथरे कमरे में वान वेरा को ले जाया गया। कमरे में भरपूर अंधेरा था, सिर्फ एक लैम्प की हलकी रोशनी फैल रही थी। लैम्प के पास में रॉयल एयर फोर्स का, बड़ी मूंछों वाला एक अफसर बैठा था। वान वेरा को देखते ही उस अफसर ने मुस्करा-

कर जर्मन भाषा में कहा—"बैठिए वान वेरा, मेरा नाम हावस है। मैं स्क्वैड्रन लीडर हूं।"

वान वेरा ने सैनिक शिष्टाचार के अनुसार हावस को फौजी सलामी दी। उसने देखा, हाक्स की मेज़ पर चांदी की मूठवाली छड़ी पड़ी हुई है। उसे याद आया, जर्मन अखबारों के व्यंग्य-चित्रों में चांदी की मूठ वाले छड़ीदार ब्रिटिश अधिकारी का मज़ाक उड़ाया जाता है।

"वान वेरा, तेरह ब्रिटिश वायुयान नीचे गिरा दिए गए और पांच-सात को बेकार कर दिया, यह आपकी साधारण सफलता नहीं है!" अधिकारी की वाणी में व्यंग्य का पुट था—"पहली लड़ाई के साधारण सिपाही के रूप में मैं दूसरी लड़ाई के आप जैसे असाधारण महारथी से मिलकर बेहद खुश हूं।" फ्रांज़ वान वेरा ने मुंहतोड़ जवाब दिया—"रॉयल फ्लाइंग कोर का मनोरंजक इतिहास पढ़ते समय मुझे आपके बारे में कोई उल्लेख नहीं मिला। अतः आपसे मिलकर मुझे विस्मय होता है। मैं कदापि जर्मनी की सामरिक सूचनाएं आपको नहीं दूंगा।...किन्तु धन्यवाद हेर मेजर, अवश्य आप ही ने मेरे वायुयान को नीचे गिराया।"

स्क्वैड्रन लीडर चुप बैठा रहा।

इसके बाद लम्बी खामोशी छा गई। उस खामोशी को वायु-आक्रमण की सूचना देनेवाले भोंपू की आवाज़ ने भंग किया। रह-रहकर भोंपू बजने लगे। वान वेरा मन ही मन मुस्करा रहा था। सिर पर अनेक जर्मन बमवर्षक वायुयान मंडरा रहे थे। यह सन् १९४० के सितम्बर मास की सातवीं तारीख थी। ब्रिटेन के विरुद्ध भयंकर संग्राम चल रहा था।

सहसा स्क्वैड्रन लीडर हाक्स उठ खड़ा हुआ। बत्ती बुझा दी और अपनी छड़ी उठाकर खिड़की की ओर गया। भोंपुओं की आवाज़ के बीच में भी वान वेरा ने हावस के पैरों की आवाज़ सुनी और उसे ज्ञात हुआ कि हाक्स एक पैर से लंगड़ा है।

हाक्स ने ब्लैक आउट के पर्दे खींच दिए और वापस आकर अपनी कुर्सी पर बैठ गया। अब उसने लैम्प इस तरह जलाया कि

उसकी तेज़ रोशनी वान वेरा के मुख पर पड़ती थी।

"मुझे बताइए मेरे मित्र वान वेरा, आप तो यहां हमारी गिरफ्त में हैं, उधर आपके निवास-स्थान में आपके प्यारे शेर के नन्हे बच्चे की देखभाल कौन करेगा ? मेरा खयाल है, उसका नाम सिम्मा है ? शायद सन्नी है ?"

वान वेरा चकित रह गया। अवश्य उसने अपना नाम, पद और क्रम बतलाया था, लेकिन ब्रिटिश गुप्तचर पुलिस का अधिकारी तो सब कुछ जानता है ! "आपका मित्र दूसरे ग्रुप का स्टाफेल क्या शेर के बच्चे की संभाल कर लेगा ?" अरे, यह तो उसके मित्र का नाम भी जानता है ! इतना ही नहीं, बातचीत के बाद वान वेरा को मालूम हुआ कि हाक्स इस तथ्य से भी परिचित है कि वान वेरा बेरन की उपाधि का प्रयोग करता है। हालांकि बेरन होने का उसका अधिकार उतना सही नहीं है।

इसके बाद लगभग दो घंटे तक हाक्स ने अपना आक्रमण जारी रखा। उसकी बातचीत भयंकर थी। उसकी बोली में कड़वाहट थी और शब्दों में मार-काट थी। इनके कारण इस जर्मन नौजवान के दंभ और दर्प की दुनिया में गहरे-गहरे घाव बन गए।

हाक्स ने कहा—"वान वेरा, आत्मप्रचार की आपकी प्रणाली पर मैं आपको बधाई देता हूं।" इतना कहकर हाक्स ने जर्मन रेडियो पर वान वेरा की वार्ता की एक प्रतिलिपि प्रस्तुत की। इस वार्ता में वान वेरा ने बतलाया था कि उसने ब्रिटेन के पांच हरिकेन वायुयानों को नीचे गिरा दिया और चार को ज़मीन पर ही नष्ट कर दिया और यह सब एक ही हमले में कर दिखाया। जर्मनी में इस चमत्कार की परम प्रशंसा हुई और इसे 'युद्धकाल का महानतम कार्य' बताया गया।

हाक्स अपनी मेज़ के किनारे पर वान वेरा की ओर तनिक झुककर बैठा हुआ था। उसने कहा—"यह तो हम दोनों जानते हैं कि इस 'महानतम कार्य' का रहस्य क्या है। वास्तव में आपने इतने हरिकेन वायुयान तो विनष्ट नहीं किए। वान वेरा महोदय, अगर इस असलियत का पता आपके देशवासियों को लग जाए, तो क्या

हाल होगा ? और यदि यहां ब्रिटेन की जेल में आपके साथी कैदियों को, जोकि आपके ही देशवासी हैं, जर्मन हैं, मालूम हो जाए कि वान वेरा बढ़ा-चढ़ाकर अपनी वीरता का वर्णन करता है, तो जेल में आपकी क्या दशा होगी ? क्या आपके साथी जर्मन आपकी मज़ाक नहीं उड़ाएंगे ?" वान वेरा ने हल्की मुस्कान के साथ कहा—"हेर मेजर, मैं जानता हूं मेरा रहस्य न बतलाने का वादा करके आप मुझसे क्या चाहते हैं ! मैं कदापि आपकी इच्छा पूरी नहीं करूंगा। मैं हरगिज़ वह कीमत नहीं दूंगा। मैं अपने स्वदेश से गद्दारी नहीं करूंगा। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि मेरे दोस्त और हमवतन मेरा मज़ाक उड़ाएंगे, मज़ाक उड़ाएं, फिर भी मैं उनके बीच में रह लूंगा। आखिर वे मेरे अपने ही लोग हैं और उन्हें मेरा मज़ाक उड़ाने का भी हक है। वे मेरी तारीफ भी तो करते हैं। लेकिन गद्दार बनने पर मैं अपनी ही निगाह में गिर जाऊंगा और न भीड़ में, न अकेले में ही रह पाऊंगा। यह तो और भी बुरा होगा।"

बात खत्म हो गई। इंटरव्यू समाप्त हो गया। स्क्वैड्रन लीडर हाक्स की पूछताछ के बावजूद वान वेरा चक्कर में नहीं आया। वह टस से मस नहीं हुआ। हाक्स ने घंटी बजाई। बंदी वान वेरा ने पुनः अपनी अपराजेय जीवनशक्ति का परिचय दिया—"हेर मेजर, मेरे पास दस बढ़िया सिगरेट हैं, क्या आप उनके बदले में मुझे थोड़ी-सी शैम्पेन देंगे ?"

अच्छा हुआ कि हाक्स ने स्वीकार नहीं किया, वरना वान वेरा अपनी दस सिगरेट खो बैठता।

छब्बीस वर्षीय नौजवान, साहसी, सुंदर, महत्वाकांक्षी और हठी फ्रांज़ वान वेरा पांच साल से लुफ्टवेफ (जर्मन वायुसेना का नाम) में काम कर रहा था। जब से, पांच साल पूर्व, लुफ्टवेफ की रचना हुई, वान वेरा उसका सदस्य बना। बहुत तेज़ी से उसने उन्नति की। पूरे जर्मनी में उसकी चर्चा होने लगी। उसके जिन गुणों ने जर्मन सरकार और जनता को प्रभावित किया वे थे—उसका भयंकर साहस, निर्भयता, आत्मत्याग और स्वदेशप्रेम।

नकली लड़ाइयों में वान वेरा अपने साथियों से एकदम आगे

निकलकर पहला इनाम पाता। लेकिन वह बड़ा खतरनाक उड़ाका था, बड़ा मज़ाकिया और कौतुकप्रिय नौजवान था। कई बार वह बड़े पुल के नीचे से अपना वायुयान निकाल ले जाता। आकाश से गोता लगाकर अपनी मित्र-लड़कियों की छतों पर चक्कर काटता और बीच सड़क पर उड़ता हुआ गुज़र जाता। जबकि उसके दूसरे सहयोगियों के पास पालतू कुत्ते, मुर्गे या सूअर थे, वान वेरा के पास शेर का बच्चा था। इस गौरव को परिवर्द्धित करने के लिए उसने सरदार की उपाधि ग्रहण की थी, और हिटलर की सेना में उसका पर्याप्त प्रभाव था।

जब युद्ध शुरू हुआ, तब सभी चालक और उड़ाका नौजवान यह चाहते थे कि अपना कौशल और साहस दिखलाकर जल्द से जल्द सर्वोत्तम चालक का पद प्राप्त कर लें। उन दिनों वान वेरा ने आठ वायुयान गिराए। नार्वे, पोलैंड, हालैंड और बेल्जियम की वायु-शक्ति नष्ट-भ्रष्ट कर दी गई। कुछ ही सप्ताह में रॉयल एयर फोर्स को भी गहरी क्षति पहुंची। यदि रफ्तार वही रहती तो रॉयल एयर फोर्स भी मटियामेट हो जाता। नाज़ी जर्मनी के सभी लड़ाके उड़ाके उच्चपद और उपाधि के लिए उतावले, बावले बन रहे थे। इन सबमें वान वेरा ने ब्रिटिश हरिकेन बमवर्षकों को नष्ट करके सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया था। इसपर जर्मन सरकार ने उसे 'नाइट क्रॉस' का पदक देना स्वीकार किया था, किंतु दुर्भाग्यवश पदकप्राप्ति के पूर्व ही, दसवीं बार जब वह ब्रिटेन पर अपना बमवर्षक लेकर आक्रमण करने गया, तो उसका वायुयान नीचे गिरा लिया गया।

उन दिनों नाज़ी जर्मनी के बमवर्षक वायुयानों के चालक इतने बड़े पैमाने पर सफलता प्राप्त कर रहे थे कि वे बहुत लापरवाह हो गए थे। इससे ब्रिटेन के जासूस-विभाग को बहुत लाभ पहुंचा। अक्सर उनके पास गुप्त दस्तावेज़, नक्शे, डायरियां, बस की टिकटें, सिनेमा की टिकटें और दबी-कुचली रसीदें मिल जातीं, इनसे ब्रिटिश जासूस-विभाग सहज ही अनुमान लगा लेता कि जर्मनी के विभिन्न हवाई अडडे किन विशेष स्थानों पर बने हुए हैं। लेकिन वान वेरा

का विमान ज्योंही गिरा, उसने अपने सारे कागज़ात जला दिए थे।

अपनी गिरफ्तारी के बाद वान वेरा को यह विश्वास हो गया कि जर्मन नेताओं का कथन यथार्थ था : ब्रिटिश अधिकारी मूर्ख हैं। एक प्रौढ़ और सुसभ्य कप्तान ने उसे सिगरेट दी और बंदी शत्रु से जैसा व्यवहार करना चाहिए, वैसा न करके उसने वान वेरा से लगभग बराबरी का व्यवहार किया और ऐसा प्रतीत होता था, वह तो सिर्फ जर्मनी की राजनीति, नाज़ी, आदर्श, उपनिवेशों के विषय में जर्मनी के दावे और ऐसे ही अन्य मामलों पर बातें करता रहा; और जब वान वेरा को यह भली भांति विदित हो गया कि कप्तान साहब सामरिक बातों में दिलचस्पी नहीं रखते हैं और न ही उनके विषय में सवाल पर सवाल करते हैं, तो उसे बड़ी राहत मिली और वह मुक्तमन से वार्तालाप करने लगा।

यद्यपि जासूस-विभाग के दूसरे प्रश्नकर्ता हाक्स के ज़बरदस्त सवालों के कष्टकारी वातावरण से वान वेरा छुट्टी पा गया था, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं था कि रॉयल एयर फोर्स का खुफिया-विभाग उसकी ओर से निश्चिंत हो गया था। परिणामतया आगामी कई दिनों तक रात और दिन के सभी घंटों में उससे निरन्तर पूछताछ होती रही और जर्मन भाषा जाननेवाले विभिन्न छः-सात अधिकारियों ने उसे अपना शिकार बनाया। उन्होंने अपनी गुप्त साजिश के अनुसार अपने व्यवसाय के प्रत्येक उपाय के द्वारा उसे बातचीत करने को मजबूर कर दिया।

वान वेरा की खुशामद की गई, उसे ललचाया गया, फुसलाया गया, बहलाया गया और नाराज और उत्तेजित किया गया। उसके सम्मुख यह प्रस्ताव भी रखा गया—वेस्ट एंड तक सादे लिबास में वह सैर के लिए जा सकता है; हां, प्रहरी तो रहेंगे ही, लेकिन सादे लिबास में। वहां वह चाहे तो बढ़िया होटल में भोज का प्रबंध हो सकता है, सिनेमा भी देखा जा सकता है और निशा-क्लब में रात बिताई जा सकती है। दूसरी बार मैत्रीपूर्ण बातचीत के बहाने, मेज पर बढ़िया शराब की बोतल और सिगरेट के डिब्बे रख दिए गए और

फिर पूछताछ भी चली, लेकिन माई का लाल वारवर वान वेरा किसी चक्कर में नहीं फंसा। न वेस्ट एंड का, न होटल और भोज का, न निशा-क्लबों का और न शराब और सिगरेट का प्रलोभन ही उसे लुभा सका। वान वेरा ने एक भी चीज़ न छुई। ब्रिटिश खुफिया-विभाग को पूरा यकीन हो गया कि वान वेरा असली जर्मन फौलाद का बना हुआ बहादुर आदमी है।

अब उसके शत्रुओं ने दूसरा जाल फका और दंडनीति से काम लिया। कई दिनों तक उसे एक छोटी-सी कालकोठरी में कैद रखा। इसके बाद उसके यूनिट के दूसरे एक बंदी कार्ल वेस्टरहाफ के साथ एक कमरे में बंद रखा।

वान वेरा और वेस्टरहाफ दोनों घनिष्ठ मित्र थे। दोनों जब मिले, तो वेस्टरहाफ ने कुशल-क्षेम पूछते हुए प्रश्नों की झड़ी लगा दी; लेकिन वान वेरा इतना सावधान था कि वह मौन रहा। वह अपने मित्र को उस कमरे के एक अंधेरे कोने में ले गया और लपककर उसके कंधे पर चढ़ गया, फिर उसने झांककर छोटी-सी खिड़की के बाहर देखा—कई लाउडस्पीकर लगे हुए थे और कमरे का संबंध टेप-रिकार्डरों से था। वान वेरा को ब्रिटिश अधिकारियों की इस मोटा बुद्धि पर हंसी और दया आई। उसे मज़ाक सूझी। उसने चिल्लाकर कहा—"हेलो, रॉयल एयर फोर्स के खुफिया-विभाग, वान वेरा बोल रहा है। मेरे कमरे की खिड़की के नीचे एक माइक्रोफोन छिपा हुआ है, आप आकर उसे अपने अधिकार में लीजिए। क्या आप मेरी बात सुन रहे हैं? वान वेरा बोल रहा है और माइक्रोफोन की जांच कर रहा है।......"

यह दैवयोग भी हो सकता है, किंतु उसी दिन वान वेरा और वेस्टरहाफ को दूसरे एक कमरे में रखा गया। इस अवधि में लगभग तीन सप्ताह तक जासूसों के प्रश्नों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा। लेकिन वान वेरा ने जाने-अनजाने अपने देश के सामरिक रहस्य के विषय में एक शब्द भी मुंह से न बतलाया। किंतु इस अवधि में उसने यह भी जान लिया कि ब्रिटेन के गुप्तचर अधिकारियों की प्रश्न करने की प्रणाली पूर्णरूपेण प्रभावशाली है!

अब, आयर समुद्र से बीस मील की दूरी पर स्थित, घने वन-प्रदेश के एक बंदीगृह ग्रिज़डेल हॉल में वान वेरा को रखा गया। चालीस कमरे की यह बहुत ही मजबूत और पथरीली इमारत थी। इसके चारों ओर पक्का पहरा था। एक जर्मन यू-बोट का कमांडर वरनर लॉट, जो बंदी बनाया गया था, यहीं रखा गया था। लॉट ने निकल भागने की कोशिश की थी, लेकिन वह तारों के भीतरी घेरे से बाहर निकलने में भी सफल नहीं हुआ था। चूंकि बंदी जर्मनों का यह विश्वास था कि विजयिनी जर्मन सेनाएं शीघ्र ही आकर उन्हें छुड़ाएंगी, बंदीजन निश्चिंत रहते थे और भागने के प्रयास यदा-कदा ही होते थे। लेकिन वान वेरा जानता था कि ब्रिटेन को इतनी जल्दी हरा देना इतना सरल काम नहीं है, जैसाकि उसके देश के नेता कहते हैं कि वे बड़े दिन तक ब्रिटेन को हरा देंगे। ब्रिटेन में अपने आसपास उसने जो भी तैयारी देखी और जिसके कारण सिर्फ उसीके यूनिट के पन्द्रह प्रशिक्षित प्रचालक पकड़ लिए गए, उससे उसे विश्वास हो गया था कि युद्ध अधिक दिन चलेगा।

और इसलिए ग्रिज़डेल हॉल में आने के उपरांत सिर्फ दस ही दिन में, वान वेरा ने अपने निकल भागने की एक योजना तैयार कर ली। तब उसने अपनी योजना अपने दूसरे चार देशवासियों के सम्मुख रखी। बड़े जर्मन अफसर मेजर विल्लीबाल फनेल्सा की अध्यक्षता में, तीन सदस्यों की परामर्श-समिति ने वान वेरा की योजना पर विचार-विमर्श किया। चूंकि पूर्वकालीन योजनाएं असफल सिद्ध हुई थीं, वे लोग बहुत सावधान थे।

प्रत्येक दूसरे दिन सभी चालीस बंदी खुली हवा में कसरत और कवायद के लिए बाहर ले जाए जाते थे। घुड़सवार सार्जेंट प्रहरी की मर्ज़ी पर उन्हें उत्तर या दक्षिण दिशा में ले जाया जाता था। घुड़-सवार सार्जेंट भी बराबर साथ रहता था। तीन किलोमीटर तक उन्हें काफी तेज़ चाल से चलाया जाता। इसके बाद सड़क के मोड़ पर दस मिनट का विश्राम दिया जाता और वहां से पुनः वापस लाया जाता। अनुशासन बहुत कठोर रहता और पहरा एकदम कड़ा। घुड़सवार सार्जेंट के अतिरिक्त एक पैदल इंचार्ज अफसर भी रहता।

चार गार्ड आगे-आगे और चार गार्ड पीछे-पीछे चलते।

उत्तर की ओर विश्राम का जो स्थान था, वहां कांटेदार तारों के बाहर चरागाह का खुला मैदान था और कहीं कोई ओट न थी। दक्षिणी दिशा में विश्रामस्थल एक दीवार के साये में था। यदि वान वेरा के अन्य साथी गार्ड लोगों को बातचीत में लगा दें और दूसरे साथी उन्हें घेरकर चारों तरफ जमा हो जाएं और बातचीत बढ़ाते रहें तो वान वेरा दीवार फांदकर भाग जाएगा और कुछ ही दूर पर वनप्रदेश में ओझल हो जाएगा। एक बार मुक्त हो जाने पर वह सागरतट तक पहुंच जाएगा और वहां किसी तटस्थ देश के जहाज़ पर निकल जाने का प्रयत्न करेगा। वान वेरा ने अपनी योजना के प्रत्येक कदम का विस्तृत विवरण तैयार किया और उसका आरम्भिक परीक्षण भी किया।

मेजर फनेल्सा ने कहा—"अब तक जितनी योजनाएं पेश की गई, उनमें यह एक सीमा तक उत्तम है।" पलायन-परामर्श-समिति ने वान वेरा के लिए गरम कपड़े और वनप्रदेश के नक्शे का प्रबंध किया। स्वयं वान वेरा ने ब्रिटिश सिक्के में तीन शिलिंग जुटा लिए और बंधनकाल में उसे जो चॉकलेट मिलते थे, उन्हें वह भविष्य के लिए बचाकर रखता गया।

दो ही दिन बाद योजना कार्यरूप में परिणत की गई!

मेजर फनेल्सा ने वन्दीगृह के कैम्प-कमांडर से निवेदन किया कि कसरत और कवायद का समय सुबह साढ़े दस बजे से बदलकर दिन में दो बजे रख दिया जाए ताकि सुबह में कैम्प की पढ़ाई के कार्य में विघ्न न आए। लेकिन वास्तव में मेजर फनेल्सा की यह गहरी चाल थी—यदि दोपहर बाद का समय रहे और वान वेरा भाग जाए तो उसे, जल्दी ही रात हो जाने के कारण, छिपकर रहने में आसानी हो और रात्रि के समय खोजकर्ताओं को खोजने में कठिनाई रहे। यही हुआ।

जब बन्दीजन कसरत और कवायद के लिए बाहर लाए जा रहे थे तब इस बात का भय था कि कहीं घुड़सवार सार्जेंट उत्तर की

ओर मार्च करने का आदेश न दे दे, एक सावधान और चतुर जर्मन बंदी ने दक्षिण दिशा में मुड़ने की आवाज़ लगा दी। किसीने इस पर ध्यान न दिया। इंचार्ज अफसर समझा कि घुड़सवार सार्जेंट ने आदेश दिया है और सार्जेंट समझा कि इंचार्ज अफसर का यह काम है !

रोज़ की तरह जब विश्राम का वक्त आया, गार्ड सड़क की तरफ नाका संभालकर बैठ गए और कैदी सामने दीवार के नीचे भीड़ बनाकर खड़े हो गए। उस वक्त सड़क पर फल बेचनेवाले की एक गाड़ी जा रही थी। गार्ड उससे सेब खरीदने में लग गए और सार्जेंट ने एक सेब अपने घोड़े को खिलाया।

योजना के अनुसार, अपने सबसे लम्बे साथियों के पीछे वान वेरा खड़ा रह गया। फिर चुपचाप वह दीवार पर चढ़ गया। उसके साथी यह देखते रहे कि गार्ड का ध्यान दूसरी तरफ लगा हुआ है। वान वेरा दीवार के उस पार कूद पड़ा। उसने ज़रा भी आवाज़ न होने दी। लेकिन उस ओर खेतों में काम करनेवाली दो औरतों ने वान वेरा को देख लिया और वे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगीं और इशारा करने लगीं कि कैदी भाग रहा है। किन्तु वे आधे मील से कम दूर नहीं थीं। ज्योंही सार्जेंट ने विश्राम के बाद कैदियों को एकत्र कर मार्च का हुक्म दिया, अत्यन्त कुशाग्रबुद्धि वाले एक जर्मन कैदी ने उन चिल्लाती हुई औरतों की तरफ जवाब में चिल्लाना और इशारा करना शुरू कर दिया। उसे देखकर सभी कैदी हाथ हिला-हिलाकर चिल्लाने लगे और उन औरतों का शोर नक्कारखाने में तूती की तरह दब गया। गार्ड और सार्जेंट तक उनकी आवाज़ पहुंची ही नहीं।

साथी कैदियों ने वान वेरा को वचन दिया था, बराबर इस बात का संकेत देते रहेंगे कि आरम्भ में ही उसके भागने का पता तो नहीं लग गया है। इसलिए निश्चित योजना के अनुसार, विश्रामोपरांत, मार्च करते ही तीन सौ गज़ की दूरी के निश्चित स्थल पर पहुंचते ही उन्होंने बड़े उल्लासपूर्वक एक जर्मन गीत गाना शुरू कर दिया। बड़े ज़ोर-ज़ोर से आनन्दपूर्वक बंदीजन गीत गाने लगे। भागता हुआ

वान वेरा समझ गया कि अभी पता नहीं चला है। वान वेरा ने चिल्लाती और हाथ हिलाती हुई उन औरतों की ओर बड़ी खुशी से हाथ का इशारा किया और तेज़ी से सड़क पार करता हुआ सामने घने जंगल में ओझल हो गया।

नियम यह था कि मार्च के वक्त किसी प्रकार का गीत न गाया जाए, अतएव जब कैदी पूरा गला फाड़कर ज़ोर-ज़ोर से गाने लगे, तो गार्ड लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ। घुड़सवार सार्जेंट ने चिल्लाकर उन्हें चुप रहने का आदेश दिया। दूसरे अफसर चिल्लाए। गला साफ कर जोर से चिल्लाए कि कैदी खामोश रहें और उन्होंने अपनी छड़ियां भी घुमाई, किन्तु कुछ भी प्रभाव न पड़ा, जर्मनों ने गाना बन्द करने से इन्कार कर दिया।

अब इस गाना बन्द न करने की नीति से गार्ड और सार्जेंट लोगों को शंका हुई कि ज़रूर दाल में कुछ काला है! तो, घुड़सवार सार्जेंट कैदियों की आरम्भ से अंत तक की पंक्तियों के इधर-उधर घूमकर, उनकी संख्या गिनने लगा। लेकिन ज्योंही वह उधर की पंक्ति में जाता, चुपचाप इधर का एक कैदी उधर खिसककर एक की संख्या बढ़ा देता और जब वह बेचारा इधर की गिनती करता, उधर का कैदी इधर खिसक आता। यह चतुराई और चालाकी वान वेरा की थी—वही यह तरीका बतला गया था। लेकिन सार्जेंट ने संख्या की पूर्णता पर विश्वास नहीं किया और पिस्तौल निकालकर खड़ा हो गया और कैदियों को रुकने का हुक्म दिया। कैदी जब रुक गए तो एक प्रहरा ने उनकी गिनती शुरू की। संख्या कम निकली। पहले चौबीस के चौबीस आ रहे थे, अब दो ही मिनट में चौबीस के तेईस रह गए! लेकिन गार्ड और सार्जेंट को न कम होने का विश्वास हो रहा था और न बराबर होने का ही विश्वास हो रहा था। बड़ी मुसीबत में पड़े थे। अतः उन्होंने सावधानीपूर्वक फिर से गिनती शुरू की। उन्होंने आगे से पीछे तक, पीछे से आगे तक, शुरू से अंत तक और अंत से शुरू तक, सभी प्रकार से गिनती और जांच कर ली, अब उन्हें विश्वास हो गया—एक कैदी कम हो गया है।

ग्रिज़डेल हॉल के उस प्रदेश के रहनेवालों को आज भी यह भली भांति याद है कि वान वेरा के भाग जाने के बाद सरकारी कर्मचारियों की दुनिया में कितना बड़ा तूफान उठा था !

शाम के साढ़े पांच बजे तक उस क्षेत्र की समस्त पलायन-विरोधी शक्तियां काम में लग गईं। लारियां, स्टाफ कारें, बंदूक-धारी गाड़ियां और मोटर साइकलें पूरे क्षेत्र में चारों ओर तेज़ से तेज़ रफ्तार से दौड़ने लगीं। होमगार्ड और पुलिस के सभी जवान टूट पड़े। तीन जासूस कुत्ते इस काम के लिए प्रेस्टम से एक कार में भेजे गए, किंतु उनके आने से पूर्व ही भारी वर्षा हुई और कुत्ते बेकार हो गए। पुलिस, होमगार्ड और जासूस ही नहीं, फौज के सिपाही भी एक-एक कदम ज़मीन छान डालने के लिए उस जंगल में भेजे गए। चारों तरफ सर्चलाइटों की रोशनी से तलाश जारी रही। कोई उपाय बाकी न रहा; लेकिन तीन दिन और तीन रातें बीत गईं, वान वेरा का कोई निशान नहीं मिला। ज्यों-ज्यों दिन जाने लगे और भागे हुए कैदी का कोई निशान न मिला, ज़्यादा से ज़्यादा पुलिसमैन और फौज के सिपाही खोज के लिए भेजे जाने लगे। यहां तक कि वान वेरा के पीछे कई हज़ार आदमी लग गए। यह जर्मन तो जैसे अदृश्य हो गया था और पुलिस को शंका थी कि किसी अंग्रेज़ ने ही उसे छिपा रखा है, या सर्दी लग जाने से या घायल हो जाने से मर गया है।

मगर ऐसी कोई बात नहीं थी। पुलिस का अनुमान गलत था। लेक ज़िले के घने जंगली भागों में भी पत्थर की झोंपड़ियां थीं। इंग्लैंड के होमगार्डों ने एक-एक कर प्रत्येक झोंपड़ी छान डाली। चौथे दिन दो होमगार्ड रात को ग्यारह बजे एक ऐसी झोंपड़ी के पास पहुंचे जिसमें अति मन्द रोशनी जल रही थी। बस, वान वेरा पकड़ में आ गया। उसका चेहरा सूख गया था, कपड़े चिथड़े बन गए थे और जूते फट चुके थे। एक होमगार्ड तो बन्दूक तानकर खड़ा रहा और दूसरे ने वान वेरा की कलाई को अपनी कलाई से कसकर बांध लिया। जबकि दोनों होमगार्ड उसे लेकर जा रहे थे, वान वेरा ने मौका देखकर रोशनी को ठोकर मार दी और साथ ही बन्दूक

वाले गार्ड को भी एक ही धक्के में लिटा दिया। फिर तत्काल उछल-कर अपनी कलाई की पट्टी भी तोड़ डाली और उस आदमी की पहुंच से परे भाग गया। रात के अंधेरे में वह गायब हो गया।

रात-दिन की निरन्तर दौड़-धूप के बाद भी उसका पता न चला। छठे दिन वान वेरा बारह सौ फुट ऊंची एक पहाड़ी पर इधर से उधर दुबका हुआ चल रहा था कि दूर से किसी गड़रिये ने उसे देख लिया और उसने जाकर पुलिस के घुड़सवार दस्ते को सूचना दी। तत्काल उन्होंने पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया और फिर से वान वेरा पकड़ में आ गया।

इस बार वह भागकर न जा सका।

भागने के प्रयास के अपराध में वान वेरा को इक्कीस दिन की कालकोठरी की सजा मिली। साथ ही उसे ग्रिज़डेल हॉल से हटा-कर स्वानविक् के युद्धबंदी शिविर में भेज दिया गया। लेकिन एक बार भागने का प्रयास करने पर उसे गहन आत्मविश्वास हो गया था कि वह पुनः प्रयास कर सकता है और करेगा। अतएव इस नई जगह में आते ही उसने नये शिविर के सुरक्षा-प्रबंध को बहुत गौर से देखा।

स्वानविक् के चारों ओर भारी कांटेदार तार लगे हुए थ, और कुछ जगह छोड़कर फिर ऐसे ही तार लगे थे; और दोनों के बीच निरन्तर पहरा लगता था। बाहरी बाड़े के निकट पचास-पचास गज़ की दूरी पर चौकियां बनी हुई थीं, जिनमें सर्चलाइट और मशीनगनों का प्रबंध था। रात में इस क्षेत्र में तेज़ रोशनी जलती रहती थी; लेकिन जब हवाई हमला होता तो रोशनी गुल कर दी जाती और साथ ही पहरा बढ़ा दिया जाता। वान वेरा ने निश्चय किया कि सुरंग के द्वारा ही इस स्थान से भागा जा सकता है। धीरे-धीरे वान वेरा ने हिसाब लगाया कि उसकी कोठरी से बाहरी बाड़े तक चौदह फुट की सुरंग काफी होगी, चूंकि इमारत बाड़े के करीब है। लेकिन उसने सोचा कि यह मार्ग चौकी के बहुत करीब से गुज़रेगा; लेकिन परवाह नहीं, कुछ पेड़ और झाड़ियां जो

वहां हैं, छिपने का स्थान दगी ही।

अब वान वेरा को अपने निकल भागने की यह नई योजना सर्वथा सम्भव प्रतीत हुई। शीघ्र ही पांच और जर्मन अफसर, जो वान वेरा के साथ ही बंदी थे, उसकी योजना में शामिल हो गए और उन्होंने अपने इस गुप्त प्रयास का गुप्त नाम रखा—'स्वानविक् खदान कम्पनी।' इसके बाद कई बाधाओं के बीच भी वान वेरा अपना कार्य योजनाबद्ध रूप में करता रहा। उसने हिसाब लगाया कि प्रतिदिन वह छः घंटे खुदाई का काम कर सकता है, क्योंकि डेढ़ सौ कैदी सिर्फ एक ब्रिटिश अफसर के चार्ज में थे। सुरंग कुछ तैयार हो गई, लेकिन उसमें आगे काम करना मुश्किल हो गया, क्योंकि ताज़ा हवा नहीं मिलती थी और उसमें कुछ ही देर खुदाई करने पर भारी सरदर्द होने लगता था। लेकिन बाहर निकलने के छोटे-से छेद से हवा का प्रश्न हल हो गया। वान वेरा को उसके सभी साथियों ने पूरी मदद दी। जब कुछ साथी खुदाई का काम करते, बाकी लोग इस बात की चौकसी रखते कि खुदाई की आवाज़ संतरियों के कानों में तो नहीं पड़ रही है? कोई बड़ा पत्थर हटाने की गूंज तो नहीं उठ रही है? और इसके लिए गुप्तसंकेत-शब्द रखे गए, जिन्हें दूर से ही उसके साथी चिल्लाते थे। जब खुदाई की आवाज़ टलने जैसी नहीं होती या काम ही इस किस्म का होता, दूसरे सहयोगी कैदी इस आवाज़ को डुबोने के लिए ज़ोर-ज़ोर से गाना शुरू कर देते अथवा चिल्लाते हुए ताश खेलते या झूठ-मूठ मार-पीट पर आ जाते और गाली-गलौज करते। इस प्रकार गुप्तरूपेण वान वेरा का काम चलता रहा। सिर्फ एक महीने में सुरंग तैयार हो गई, इसमें आदमी रेंगता हुआ निकल सकता था।

पांच आदमियों ने भागने की तैयारी की। उन्होंने बड़ी चतुराई से एक गार्ड को हीरे की अपनी अंगूठी बेचकर बीस शिलिंग लिए और प्रत्येक व्यक्ति ने चार-चार शिलिंग रख लिए। इनमें से दो आदमी इस पैसे से बस का किराया चुकाते हुए लिवरपुल जाने को तैयार हुए। वहां से स्वतंत्र और तटस्थ आयरलैंड में भाग जाने का उनका इरादा था। दूसरे दो ग्लास्गो की राह, किसी तटस्थ देश के

जहाज़ पर चढ़ जाना चाहते थे। सिर्फ वान वेरा अकेला रहा और अकेला ही यात्रा करना चाहता था। लेक ज़िले की जेल से भागने का उसका अनुभव कहता था कि ब्रिटेन में जर्मन बंदी को भागने पर हमेशा पकड़े जाने का संकट रहता है। इसलिए उसे जल्द से जल्द ब्रिटेन छोड़ देना चाहिए, खोज-खबर शुरू होने से पहले ही ब्रिटेन से निकल जाना चाहिए। यह तो विमान-यात्रा से ही सम्भव था। इसलिए वान वेरा ने योजना बनाई कि वह विमान द्वारा ही भागेगा। उस बहादुर जर्मन बंदी ने वीरता का साहसपूर्ण मार्ग अपनाया। उसने सोचा कि वह निकटस्थ हवाई अड्डे पर जाकर चतुराई से लोगों को बातों में फंसाकर एक वायुयान लेकर भाग जाएगा। उसने अपने परिचय के लिए भी एक किस्सा गढ़ डाला कि वह डच परिचालक है और जर्मनी पर बम गिराकर लौट रहा था कि यहां से कुछ ही मील पर उसका वायुयान गिर पड़ा और अब वह थका-हारा आ रहा है। लेकिन परिचालक बनने के लिए ब्रिटिश परिचालक की वर्दी ज़रूरी नहीं थी, क्योंकि इन दिनों कई देशों के परिचालक ब्रिटेन में नौकर थे और भांति-भांति की वर्दियां पहनते थे। इतना ही नहीं, वान वेरा ने अपनी फौजी कमान के एक नाम की भी रचना कर डाली और झूठ-मूठ ही नाम रखा—'मिक्स्ड स्पेशल बॉम्बर स्क्वैड्रन, कोस्टल कमांड।' इसका अड्डा 'एबरडीना' बताना उसने तय किया, क्योंकि वह जगह काफी दूर थी। एक बंदी के पास परिचालक की वर्दी थी, वही उसने भेंट कर दी। दूसरे ने फरदार जूते भेंट किए, और तीसरे ने चमड़े के दस्ताने दिए। अब उसके पास ब्रिटिश विमान-विभाग का परिचय-पत्र भी होना चाहिए। परंतु उसके साथी भी कुछ कम न थे। उनके सम्मिलित 'जालसाज़ी-विभाग' ने नकली परिचय-पत्र भी बनाकर दे दिया।

२० दिसम्बर की रात को नौ बजे वान वेरा ने बाहर निकलकर प्रस्थान किया। उसने अपने पतलून पर एक काला पायजामा पहन लिया था, ताकि पतलून खराब न हो। नौ बजे के लगभग उसने बड़ी सावधानी से निकलने के मार्ग को बड़ा किया और बाहर आ गया। बाहर अद्भुत दृश्य था—अंधेरी रात थी और हवाई हमला

होनेवाला था। इसलिए रोशनियां बुझा दी गई थीं। वातावरण पूरा शांत था। ज्योंही वह बाहर निकलकर मुक्त हो गया, कैम्प के कैदियों ने इस उत्सव की खुशी में समवेत गीत गाना शुरू कर दिया।

धीमे-धीमे वान वेरा अंधकार में आगे बढ़ा और कुछ देर बाद एक-एक कर उसके साथी सुरंग से बाहर आ गए। दो सौ गज की दूरी पर एक खलिहान में उनका सम्मिलन हुआ और चुपचाप चारों मित्रों ने वान वेरा से विदा ली और अपने-अपने रास्ते चले गए। वान वेरा ने सोचा कि अब आगे नहीं बढ़ना चाहिए, क्योंकि हवाई हमले के वक्त किसी जर्मन विमान से गिरे हुए परिचालक के रूप में पुलिस उसे पकड़ सकती थी। इसलिए वह खलिहान के पास छिपा रहा और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करता रहा।

लगभग सुबह तीन बजे भोंपू बजा और ख़ैरियत की सूचना दी गई। 'लन्दन टाइम्स' की कॉपी बगल में दबाए वह खेतों के बीच से निकलता हुआ आगे बढ़ गया। वान वेरा का खयाल था कि सुबह की हाज़िरी से पहले उसके भागने का पता न लगेगा; लेकिन बाज़ी उलट गई और आधी रात के बाद ही कैदियों के भागने की खबर लग गई, क्योंकि एक कैदी मेजर क्रेमर पकड़ लिया गया था। मेजर क्रेमर ने भागते समय एक साइकल उड़ाने की कोशिश की थी। साइकल एक बंद दुकान के बाहर पड़ी थी और उसका मालिक, गांव का पुलिसमैन, वहीं दुकान के पीछे जांच के लिए कुछ ही देर के लिए गया था, सो जल्द लौट आया और क्रेमर साहब रंगे हाथों पकड़े गए।

गांवों की सड़कों पर वान वेरा कई मील चला, लेकिन रास्ते-भर उसे एक भी आदमी नहीं मिला। सुबह होने में ज़्यादा देर नहीं थी, अतः अब उसे चिंता होने लगी—दिन निकल आएगा तो इसका काम कठिन हो जाएगा। लगभग साढ़े चार बजे पास की पटरी पर एक रेलवे इंजन की छक्पक् उसे सुनाई दी। वह उसपर चढ़ गया। इंजन के ड्राइवर ने गुस्से से उसकी ओर देखा और कहा—"तुम यहां क्या चाहते हो ?"

"मैं रॉयल डच एयर फोर्स का कप्तान वान लॉट हूं। पर

आजकल ब्रिटिश रॉयल एयर फोर्स में हूं।" वान वेरा ने इस तरह सफेद झूठ बोला मानो वह साक्षात् सत्य का अवतार है—"अभी ही वेलिंगटन में मुझे अपना विमान सहसा नीचे उतारना पड़ा है। मैं डेनमार्क पर बमवर्षा कर लौट रहा हूं। मुझे तत्काल किसी आर० ए० एफ० अड्डे पर पहुंचा दो। फोन कहां है ?"

इंजन ड्राइवर ने सहयोग दिया—"मेरे साथी हैरॉल्ड की ड्यूटी पूरी हो गई है। वह तुम्हें स्टेशन तक पहुंचा देगा।" लगभग साढ़े पांच बजे वान वेरा फायरमेन हेरॉल्ड के साथ स्टेशन पहुंचा। लेकिन वहां टेलीफोन बुकिंग ऑफिस में था जो इस वक्त बंद था और बुकिंग क्लर्क सेम ईटन छ: बजे से पहले आनेवाला नहीं था। निराश होकर वान वेरा राह देखने लगा।

जब ईटन आया तो वान वेरा ने उसे अच्छी तरह उल्लू बनाया कि किस तरह कुछ ही मील दूरी पर उसका बॉम्बर विमान गिर पड़ा है और टेलीफोन की तलाश में वह यहां तक आया है। "अब आप मुझे किसी हवाई अड्डे तक पहुंचा दें या फोन कर दें। एबरडीन से कोई विमान मुझे लेने के लिए आ जाएगा।" तब उस बुकिंग क्लर्क ने पुलिस को फोन कर दिया।

एक कुली ने चाय बनाई। ईटन और वान वेरा ने चाय पी और दोनों पुलिस की राह देखने लगे। वान वेरा के व्यक्तित्व का जादू अपना रंग दिखलाने लगा और उसकी कहानियां सुनकर बुकिंग क्लर्क बहुत प्रभावित हुआ। तब उसने पूछा कि आप कहें तो हक्नेल के अड्डे को फोन किया जाए। वान वेरा ने कहा कि अवश्य फोन कीजिए। इसके बाद बुकिंग क्लर्क ने हक्नेल के कार्यालय को सारा किस्सा सुनाकर स्वयं वान वेरा की बातचीत वहां के ड्यूटी अफसर से करा दी।

हक्नेल का ड्यूटी अफसर बड़ा काइयां आदमी था। उसने बॉम्बर के गिरने के बारे में कई सवाल पूछे, फिर भी उसने जल्द ही एक गाड़ी भेजने को कहा।

हक्नेल से गाड़ी आने के पहले सात बजे के करीब पुलिस आ गई। वर्दीधारी एक सार्जट के साथ दो सादे कपड़ों में गुप्तचर भी

थे। कुछ देर वे वान वेरा को ठंडी नज़रों से देखते रहे। न मित्र की उनकी दृष्टि थी न शत्रु की। गुप्तचरों ने वान वेरा से कई प्रश्न किए, लेकिन उसे यह विश्वास हो गया था कि ये लोग उसे पकड़ने के लिए नहीं आए हैं, वरन् पूछताछ के लिए आए हैं। वान वेरा ने अंग्रेज़ी अखबारों में ब्रिटेन के हवाई आक्रमणों के बारे में कई समाचार पढ़े थे, उनके आधार पर उसने बातचीत जारी रखी, और उससे गुप्तचरों को और सार्जेंट को यह विश्वास भी हो गया कि सचमुच यह ब्रिटेन का सेवक डच उड़ाका है। इसपर वान वेरा का व्यक्तित्व अपना जादू बिखेरता रहा और उसकी हंसी और मुस्कान भी जांच करनेवालों को पराजित करती रही।

फिर भी सार्जेंट ने पूछा—"आपके कागज़ात कहां हैं?"

इस वक्त वान वेरा का धैर्य सराहनीय रहा। उसने कहा—"क्या आप नहीं जानते हैं कि हम परिचालकों के लिए यह नियम है कि विमान में कागज़ात नहीं ले जाएं? और फिर हम स्पेशल स्क्वैड्रन वालों के लिए तो नियम और भी कड़े हैं।" इसके बाद उन्होंने कोई सवाल नहीं किया। यह जानकर कि हक्नेल से वान वेरा को लेने के लिए एक कार आ रही है, वे लोग संतुष्ट हो गए। उनमें से एक गुप्तचर ने उठकर उसे शाबाशी देते हुए कहा—"वाह, कोस्टल कमांड के आप बहादुरों का क्या कहना! दूसरे गुप्तचर ने इस सराहना का समर्थन किया। तीसरे ने कहा—"पिछली रात कुछ जर्मन कैदी जेल तोड़कर भाग गए हैं। पहले तो हमने सोचा, आप भी उनमें से एक हैं।" इतना कहकर वह हंसने लगा तो वान वेरा भी ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। लेकिन मन में तो वह डर गया कि उसके और उसके साथियों के पलायन का पता चल गया है!

पुलिस के इन आदमियों को गए पांच मिनट बीते होंगे कि एक आदमी आया और सलाम ठोंककर वान वेरा से बोला—"हुज़ूर, हक्नेल के लिए गाड़ी तैयार है।"

कार में बैठा वान वेरा बहुत खुश हो रहा था। उसका मन उड़ानें भर रहा था, दस ही मिनट में वह अड्डे पर पहुंच जाएगा और एक हवाई जहाज़ चुराकर अपने देश जर्मनी पहुंच जाएगा!

वान वेरा के लिए कार भेजनेवाला हक्नेल का ड्यूटी अफसर कम चतुर नहीं था। उसने इसलिए गाड़ी नहीं भेजी कि वान वेरा की बातचीत पर उसे विश्वास हो गया था। नहीं। और उसने अपने अविश्वास का पूरा प्रबन्ध भी कर लिया था। हालांकि अभी उसे यह पता न चला था कि स्वानविक् से कुछ कैदी भाग गए हैं। अफसर के मन में यह भी शंका थी कि यह आदमी झूठा हो सकता है। और उसके पास अभी तक किसी बमवर्षक विमान के गिरने की कोई सूचना भी नहीं आई थी। अतएव उसने वान वेरा को लानेवाली कार के ड्राइवर को एक बन्दूक दे दी थी और सचेत कर दिया था कि वान लॉट नामक यह आनेवाला व्यक्ति कोई तोड़-फोड़ करनेवाला अथवा भगोड़ा कैदी भी हो सकता है। अतएव उसने निश्चय कर लिया कि यहां पहुंचने पर वह स्वयं वान लॉट के कागज़ात और ड्रेस देखेगा और उसकी सारी घटना को सामने बैठकर सुनेगा। इतना ही नहीं, ड्यूटी अफसर ने अपने कार्यालय के सभी दरवाज़े और खिड़कियां बन्द कर दीं, सिर्फ एक ही दरवाज़ा खुला रखा। कमरे की अंगीठी को उसने इतना तेज़ करा दिया कि वान लॉट को गर्मी के मारे अपना परिचालक का ड्रेस उतारना पड़े और भीतर की वर्दी अफसर देख सके।

कार के द्वारा वान वेरा जब हक्नेल कार्यालय में पहुंचा, उस समय सूरज निकल आया था। ड्यूटी अफसर ने वान वेरा को कन-खियों से देखा—लगभग पौने छः फीट लम्बा, घुंघराले बालों वाला तरुण चेहरे वाला एक बहुत ही खूबसूरत जवान सामने खड़ा था। उसके चेहरेपर बहुत ही साफ, सरल और मधुर, मन्द मुसकान थी। न तो वह उचक्का मालूम पड़ता था और न ही अति सम्भ्रान्त। अफ-सर ने देखा, वान लॉट का ड्रेस कुछ और ही किस्म का है—हलका भूरा और हरा। उसने तुरन्त कहा—"मैं आपका ज़्यादा समय नहीं लूंगा श्री वान लॉट। अच्छा हो, अपना ऊपरी ड्रेस आप उतार दें, कमरा बहुत गरम है। आराम से बैठ जाइए, कोई तकल्फुफ न कीजिए।"

इसपर वान वेरा ने उत्तर दिया—"तकल्लुफ की कोई बात

नहीं। एबरडीन से मेरा विमान किसी भी वक्त आ सकता है, इसलिए ड्रेस उतारने से विलम्ब हो सकता है; और आप तो साहब जानते हैं, हमारी ज़िन्दगी···।"

ड्यूटी अफसर, जो खिड़कियों के पर्दे गिरा रहा था, पास आ गया। अपने हाथ पोंछकर उसने वान वेरा से हाथ मिलाया। वान वेरा बोला :

"मैं आपको तकलीफ देना नहीं चाहता। मैं कण्ट्रोल टावर के निकट जाकर अपने विमान की राह देखूंगा।"

"कोई आवश्यकता नहीं है। कण्ट्रोल वाले खुद ही मुझे फोन कर देंगे।"

चूंकि आगन्तुक कमरे की गर्मी के कारण किसी प्रकार की बेचैनी नहीं दिखला रहा था, अफसर स्वयं उलझन में पड़ गया। खुद उसे भी गर्मी लग रही थी और अब वह दूसरे उपाय की तलाश में था। उसने कहा—"वान लॉट महोदय, बमवर्षक की इस दुर्घटना पर भी भाग्यवान हैं कि आप बच गए। फोन पर तो सारी बातचीत अस्पष्ट रही। बेहतर तो यही है कि आप मुझे फिर से सारी घटना सुना दें। आप तो जानते हैं, मुझे इसकी रिपोर्ट करनी पड़ेगी।"

वान वेरा अपने हवाई हमले और बमवर्षक का किस्सा सुनाने लगा और ड्यूटी अफसर उसका बयान लिखने लगा और साथ ही प्रश्न भी पूछने लगा। वान वेरा ने पूछा कि क्या सचमुच यह सब ज़रूरी है, क्योंकि पहले ही पुलिस इंटरव्यू ले चुकी है। इससे अफसर उलझन में पड़ गया। यदि गुप्तचर-विभाग जांच कर चुका है तो वान लॉट सही आदमी साबित होता है और इस रिपोर्ट वगैरह की कोई ज़रूरत नहीं रहती है।

अफसर ने फोन उठाया और यह तय किया कि वह एबरडीन फोन करेगा। तब परिचय-पत्र का प्रश्न उठा। ज्योंही वान वेरा ने परिचय-पत्र के लिए हाथ बढ़ाया, उसे महसूस हुआ कि पसीने और शरीर की गर्मी के कारण पत्र का पुट्ठा तक गल गया है। तभी फोन की घंटी बज उठी और वान वेरा पत्र दिखाने की कठिनाई से बच गया। अफसर फोन में लग गया। हाथ धोने के बहाने वान वेरा वहां

से चलता बना। फोन खराब था इसलिए अफसर ज़ोर से चिल्ला-चिल्लाकर बात कर रहा था।

अब वान वेरा के सामने सबसे बड़ा सवाल समय का था। वह वहां से उस स्थान की ओर बढ़ा, जहां कई विमान रखे हुए थे। कई लोग, राज और मिस्त्री वगैरह वहां काम कर रहे थे। कई दो इंजन वाले विमानों पर दृष्टि डालता हुआ वह आगे बढ़ गया। ये विमान उसे पसन्द नहीं आए।

आगे हरीकेन विमान थे। एक ओर रोल्सरायस विमानों का परीक्षण-केन्द्र था। इसी गुप्त और पक्के पहरे वाली जगह वान वेरा घुस गया। निर्माण-कार्य ज़ोरों से चल रहा था। उस गड़बड़ में वान वेरा को मौका मिल गया।

वान वेरा ने एक मेकेनिक को अपना परिचय दिया और बताया कि मैंने अभी हरीकेन नहीं उड़ाए हैं। ड्यूटी अफसर ने मुझे इसलिए भेजा है कि मुझे हरीकेन के कंट्रोल और जांच की उड़ान का अनुभव हो जाए; तो कौन-सा विमान तैयार है? बेचारे मेकेनिक को यह तो मालूम था कि इन दिनों कई विदेशी कप्तान भी आए हुए हैं और एयर ट्रांसपोर्ट कमांड की ओर से विमान लेने भी ये लोग आते हैं। फिर भी उसने कहा—"मैं अपने मैनेजर से पूछ लूं। आपको विज़िटर्स बुक में हस्ताक्षर करने पड़ेंगे। अच्छा, अब एक मिनट रुकिए, मैं आता हूं।" जब मेकेनिक चला गया, वान वेरा ने हरीकेन विमान की ओर देखा—बहुत ही सुन्दर और एकदम नया विमान चमक रहा था। उसकी इच्छा हुई कि इसे उड़ा दे। परंतु कहीं कंट्रोल अवश्य होने चाहिए, इसलिए उसे धैर्य रखना पड़ा।

तब तक मेकेनिक अपने मैनेजर के साथ आ गया। मैनेजर ने कहा कि आप कागज़ों की खानापूरी कर दीजिए मैं आपको हरीकेन के कंट्रोल समझा दूंगा। वान वेरा का दिमाग तेज़ी से काम कर रहा था—अब तक ड्यूटी अफसर ने कहीं फोन पर बातचीत समाप्त न कर ली हो। वान वेरा फिर भी मैनेजर के साथ गया और फार्म की खानापूरी करने लगा। यह तो पूरे दो पेज का फार्म था और

उसमें दुनिया-भर के सवालात थे। फिर उसे यह भी भय था कि उसकी रोमन लिपि इतनी दुरुस्त नहीं है और वह भी जर्मन शैली की ! फिर भी उसने साहसपूर्वक अपना नाम, पता और अपने विमान-स्थल आदि का पता लिख दिया और पास खड़े हुए एक पुलिसमैन ने उसे सहायता दी। मैनेजर ने कहा कि सब कुछ ठीक है, सिर्फ हरीकेन मिलने का आदेशपत्र अथवा रसीद दिखाई जाए। इस पर चतुर वान वेरा ने उत्तर दिया—"अवश्य, ये चीज़ें हमारे विमान किसी भी क्षण लेकर आ सकते हैं। तब तक समय बचाने के लिए क्या आप कृपया मुझे हरीकेन के कंट्रोल बता देंगे ?"

"बिलकुल ठीक।" मैनेजर ने कहा। मेकेनिक वान वेरा के साथ हो गया। वहां से निकलकर वान वेरा ने तरकीब से चारों ओर दृष्टि डाली, कहीं वह ड्यूटी अफसर तो नहीं आ रहा है। हे ईश्वर, पांच मिनट और मिल जाएं !

अब वान वेरा विमान में बैठ गया। मेकेनिक उसे समझाने लगा कि कौन-कौन-से नये यंत्र हैं और कंट्रोल का क्या तरीका है। अत्यन्त तन्मयतापूर्वक वान वेरा ने एक-एक शब्द सुना; किंतु उसका ध्यान अनिवार्य यंत्रों की ओर था, ताकि विमान को ऊंचा उठाते समय कोई दुर्घटना न हो जाए। मेकेनिक बेचारा वान वेरा के मन की बात कैसे जानता ! वान वेरा ने तो विमान चालू करने का स्टार्टर बटन दबा दिया।

"अरे, ऐसा न कीजिए। ट्रॉली एक्यूम्युलेटर के बिना स्टार्ट नहीं कर सकते।" मेकेनिक बोला।

"तो, जाओ, ले आओ।" वान वेरा ने हुक्म दिया।

"इस वक्त तो कोई दूसरा उसका उपयोग कर रहा है।"

वान वेरा ने अपनी मधुर मुस्कान के साथ कहा—"जल्दी ले आओ, भाई, मैं बहुत जल्दी में हूं, क्योंकि मेरा काम बहुत महत्त्वपूर्ण है।"

मेकेनिक चला गया और शीघ्र ही पटरी पर इलेक्ट्रिक स्टार्टर चलाता हुआ आया। इंजन के नीचे उसे रोक दिया। वान वेरा ने फ्यूअल इंजेक्शन पम्प चालू कर दिया।

सुंदर हंस की गति से विमान इधर-उधर डोलने लगा।

तभी एक शांत और गम्भीर आवाज़ उसके पीछे से आई—"बाहर निकलो, गेट आउट !"

वान वेरा ने देखा—उसकी ओर पिस्तौल तनी हुई थी और ड्यूटी अफसर की ठंडी निगाहें उसपर जमी हुई थीं।

बंदीगृह से भागे हुए पांचों कैदी फिर से पकड़ लिए गए। ब्रिटिश अधिकारी चकित रह गए कि वीरवर वान वेरा ब्रिटिश हवाई अड्डे तक इस प्रकार पहुंचकर विमान में बैठ गया। अगर उसे कुछ क्षण और मिल जाते तो वह सीधा जर्मनी जाकर रुकता !

पांचों भगोड़े कैदियों को चौदह दिन के लिए कालकोठरी का एकांतवास मिला। शीघ्र ही उन्हें केनाडा भेजा जानेवाला था।

१० जनवरी, १९४१ के दिन 'डचेस ऑफ यार्क' नामक जहाज़ पर वान वेरा और दूसरे एक हज़ार कैदी केनाडा की ओर चले। इस जहाज़ पर वान वेरा को विशेष केबिन में रखा गया और उसपर पहरा भी बड़ा कड़ा रहा। वान वेरा को तो यह अपना सम्मान ही प्रतीत हुआ। जहाज़ की इस यात्रा-अवधि में वान वेरा प्राय: बर्फ से भी ज़्यादा ठंडे पानी से स्नान किया करता और उसके पहरेदार उसे सनकी समझते। लेकिन वान वेरा की पूरी एक योजना थी—अगर मौका मिल जाए तो किसी छोटे-बड़े बन्दरगाह पर जहाज़ के रुकते ही वह भागने की कोशिश में समुद्र में कूद पड़ेगा। इसीलिए, वह शीतल जल से स्नान कर अपने-आपको प्रत्येक परिस्थिति के योग्य बना रहा था।

जब तक जहाज हेलिफेक्स पहुंचा, उसे कोई अवसर न मिला। तब उसे यह आशा बंधी कि कैदियों को जब जहाज़ से ट्रेन तक ले जाया जाएगा, अथवा ट्रेन में मौका पाकर वह झपट्टा मार देगा। वान वेरा के डिब्बे में पैंतीस कैदी और बारह गार्ड थे। प्रबन्ध इतना पक्का था कि शौचालय का द्वार भी खुला रखा जाता था और सन्तरी वहां भी अड़ा हुआ रहता था। डिब्बे की सभी खिड़कियां बन्द थीं और उनपर बर्फ जम जाने से तो वे और भी भिड़ गई थीं। उन्हें छूना तक कैदियों के लिए मना था। खाना भी कैदियों

को उनकी जगह पर परसा जाता और पहले-पहल जो ताज़ा और गरमागरम खाना दिया गया, वह इतना अच्छा था कि कैदी मस्त हो गए और उनमें से अनेक तो भागने की अपनी योजना ही भूल गए।

लेकिन वान वेरा नहीं भूला था। उसने यह पता लगा लिया कि गाड़ी जिस जेल की ओर जा रही है, उससे पहले अमरीका की सीमा के समीप से गुज़रेगी। वहां यदि वह भाग सके तो एक ही दिन की दौड़ पर अमरीकी सीमा में प्रवेश कर जाएगा और अभी अमरीका ने युद्ध में प्रवेश नहीं किया है, इसलिए अमरीका में कोई उसपर हाथ भी नहीं उठा सकता।

भागने का सबसे अच्छा मौका वह होगा, जब गाड़ी रुकने के बाद फिर से स्पीड बढ़ाने लगे। किसी खिड़की से बर्फ में कूदना होगा; और ऐसा करना उस वक्त तो गलत ही होगा, जब गाड़ी पूरी स्पीड में हो। गाड़ी रुकने पर गार्ड सावधान हो जाते हैं, इस-लिए उस समय भी अवसर नहीं मिलेगा।

वान वेरा ने अपना कार्य शुरू कर दिया। उसके साथी तो गार्ड की ओर देखते रहे और वह चुपचाप खिड़की को ऊंचा खिसकाता रहा। उसने खिड़की को लगभग एक इंच ऊंचा उठा दिया। इस एक इंच का बड़ा महत्त्व था, क्योंकि इस छेद से होकर डिब्बे की गर्मी बाहर जाती थी और वह बर्फ को पिघला देती थी। धीमे-धीमे बर्फ पिघलती रही और वान वेरा ने अपने सभी साथी कैदियों को संकेत दे दिया कि वे उष्णता के सभी यंत्रों को पूरी तेज़ी से चला दें। चौबीस घंटे बीत गए। उस शाम के भोजन में सेब दिए गए। कैदियों ने बहुत दिन से फल नहीं खाए थे इसलिए वे सेबों पर टूट पड़े और पूरी पेटी साफ कर दी। लेकिन भरपूर बढ़िया भोजन और ऊपर से सेब खा लेने से कैदियों को दस्त पर दस्त लगने लगे। शौचालय के बाहर कैदियों की लम्बी लाइनें लग गईं और कुछ कैदियों को तो गार्ड लोगों के लिए सुरक्षित शौचालय में ले जाना पड़ा। इस सेवा-कार्य में पहरेदार गार्ड लोगों को बड़ा मज़ा आ रहा था और वे पूरी तरह मज़ाक और मनोरंजन में डूब गए।

कुछ कैदी अपने ओवरकोट पहने पेट पकड़कर उछल-कूद कर

रहे थे। वान वेरा भी बन-ठनकर दोनों हाथों से सिर थामकर बैठ गया, मानो वह भी भीषण पीड़ा से परेशान है। अब तक गार्ड काफी लापरवाह और बेखबर हो गए थे। लेकिन खिड़की तक कैसे पहुंचा जाए ? स्टेशन भी निकट आ गया था। वान वेरा को एक उपाय सूझा। उसके कई साथियों ने शौचालय में जाने के लिए हाथ उठा दिए। गार्ड इतनी संख्या देखकर खिलखिलाकर हंसने लगे। कुछ कैदी ओवरकोट और कम्बल ओढ़ने के बहाने उन्हें उठाने और लपेटने और फैलाने लगे। इस ओट में वान वेरा ने धीमे से खिड़की को खोल दिया। वह आसानी से खुल गई।

अब वान वेरा ने बाहर छलांग भरी। पहले सिर निकाला। बर्फ पर वह गिर पड़ा, हल्का-सा चकराया, परन्तु तनकर खड़ा हो गया। किसीने देखा नहीं। उसके साथी कैदियों ने तुरन्त, हौले से, खिड़की बन्द कर ली।

वान वेरा के ट्रेन में से फिर से भाग जाने का पता उस समय लगा जब ट्रेन घटनास्थल से कई सौ मील दूर चली गई थी।

केनाडा सरकार के अधिकारियों का कहना था कि वान वेरा स्मिथफाल्स नामक स्थान के निकट ट्रेन से निकल भागा। यह स्थान अमरीकी सीमा से सिर्फ तीस मील दूर था।

२४ जनवरी की शाम के सात बजे वान वेरा सेंट लारेंस नदी के किनारे पहुंचा। उसका विचार हुआ, नदी पर बर्फ जमी हुई है, सामने अमरीका के आग्डेन्सबर्ग की रोशनी जगमगा रही है, क्यों न नदी पर चलकर ही रास्ता तय कर ले ! लेकिन, कुछ दूर चलने पर खुला जल नज़र आया। वह लौट पड़ा। इधर-उधर तलाश करने पर उसे एक नौका मिल गई। नौका क्या, छोटी-सी एक डोंगी थी, बर्फ में औंधी पड़ी थी और फंसी हुई थी। बहुत परिश्रम करके वान वेरा ने उसे बाहर निकाला। पतवार का प्रश्न आया। क्या किया जाए, डोंगी के पतवार ही नहीं थे ! किन्तु भाग्य ने वान वेरा का साथ दिया। वह बिना पतवार के ही डोंगी को तैराता हुआ अमरीकी किनारे तक, उस पार पहुंच गया। ज्योंही वान वेरा की डोंगी किनारे पर पहुंची, वह उसे छोड़कर दौड़ पड़ा।

पहली ही सड़क, जो वान वेरा के सामने थी, उसपर एक मोटर-कार खड़ी थी। उस कार पर न्यूयार्क का नाम और नम्बर लगा था। फिर भी वान वेरा ने अपने जी को तसल्ली देने के लिए कार ड्राइ-वर से, जो अस्पताल की एक नर्स थी, पूछा :

"क्या यह अमरीका है ?"

"महाशय, आप आग्डेन्सबर्ग में हैं।" नर्स ने उत्तर दिया।

वान वेरा बड़े आनन्द में मुस्कराया—"मैं जर्मन एयर फोर्स का एक अफसर हूं। मैं युद्धबन्दी हूं···नहीं, युद्धबन्दी था !"

वाशिंगटन में जर्मन प्रतिनिधि ने मैक्सिको के मार्ग से वान वेरा के लौटने का गुप्त प्रबन्ध कर दिया। १८ अप्रैल, १९४१ के दिन वह बर्लिन पहुंचा। मार्शल गोरिंग ने उसे उच्च पद प्रदान किया और स्वयं हिटलर ने उससे हाथ मिलाया और उसे बधाई दी। 'नाइट-क्रॉस' की सर्वोच्च उपाधि, जिसका बहुत पहले से वह अधिकारी था, उसे दी गई। जर्मनी में सर्वत्र उसके सम्मान में दावतें दी गईं और स्वागत-समारोहों का आयोजन हुआ। अमरीका में भी उन दिनों उसका बड़ा नाम हुआ। अखबारों में, रेडियो पर, सब जगह वान वेरा नाम गूंज उठा। ब्रिटेन में वान वेरा ने जो कुछ देखा, सुना और अनुभव किया, उससे जर्मन सरकार ने बड़ा लाभ उठाया। 'इंग्लैण्ड से मैं कैसे बच निकला ?' नामक एक पुस्तक भी उसने लिखी।

जर्मनी ने जब रूस पर आक्रमण किया तो उसे बमवर्षक वायु-सेना का कमांडर बनाया गया। उसने वायुयुद्ध में आठ बार और विजय प्राप्त की।

हालैंड पर उड़ते हुए उसके विमान के इंजन में कुछ खराबी पैदा हो गई और वान वेरा और उसका विमान दोनों समुद्र में गिर पड़े। इस दुर्घटना पर सारे जर्मनी में शोक छा गया।

मैं एक रात्रि-क्लब में जासूस थी

सन् १९४२ के फरवरी मास में अमरीकी सेनाओं ने बतान से पलायन किया, तब मैं और मेरी बेटी डिएन उनके साथ गईं। हमारा उद्देश्य यह था कि मेरे पति, जो उन दिनों सेना में थे, हम अधिक से अधिक उनके निकट रह सकें। लेकिन जापानियों के ज़बरदस्त हमले के कारण अमरीकी सेनाओं को पीछे हटना पड़ा और सारे प्रदेश को जापानी विजेताओं ने विनष्ट कर दिया। हम, मां-बेटी, पहाड़ियों पर भाग गईं और वहां लगभग छिपकर रहने लगीं।

लेकिन पहाड़ियों में हम कब तक रह सकती थीं ? डिएन को मलेरिया हो गया। उसका इलाज ज़रूरी था। कोई उपाय न देखकर, लुकती-छिपती हम दोनों मनीला चली गईं, जहां मेरे पूर्वपति, डिएन के पिता के एक संबंधी ने हमें शरण दी।

जिन दिनों हम उन जंगली पहाड़ियों में रहने को बाध्य थीं, मेरे मन में जापानियों के विरुद्ध घोर घृणा का भाव भर गया था। अत: मैंने अपने मेज़बान रोक्सेस से कहा कि मैं तो जापानियों के विरुद्ध जासूसी करूंगी। रोक्सेस ने मुझे ऐसा न करने की सलाह दी—"इसमें तुम सफल नहीं हो सकतीं, जापानी तुम्हें ज़रूर पकड़ लेंगे और गोली मार देंगे।"

मगर मैंने जापानी शासन के दुर्दिन देखे थे और मेरा मन उनकी व्यवस्था और प्रणाली के प्रति घृणा से भरा था, इसलिए मैं अपने निश्चय पर अटल रही।

आरम्भ में, मैं अन्ना फ़े के रात्रि-क्लब में मदाम डॉट के नकली नाम से गायिका का काम करने लगी, ठीक जापानियों की नाक के नीचे; और उन्हें कुछ शक भी नहीं हुआ ! अब मेरी योजना थी कि समुद्रतट के अति निकट एक रात्रि-क्लब की स्थापना करूं ताकि

सेनाओं और जहाज़ों का आवागमन मेरी निगाह में रहे, साथ ही मैं जापानी ग्राहकों से खबरें भी पाती रहूं। रोक्सेस ने फिर समझाया, लेकिन मैंने एक न सुनी।

अन्ना फ़े के रात्रि-क्लब में मैंने अपने-आपको इटालवी और अपने पति को फिलिपिनो बतलाया। उन दिनों मैंने मनीला के रात्रि-क्लबों के अध्ययन पर यह अनुभव प्राप्त किया कि यदि मैं भारी चार्ज वसूल करूं और केवल बड़े जापानी अफसरों का ही मनोरंजन करूं, तो मैं भली भांति अपना काम चला सकती हूं।

मैंने अपनी एक घड़ी और हीरे की अंगूठी रहन रखी और उससे प्राप्त पूंजी से अपना काम शुरू कर दिया। मैंने बन्दरगाह के समीप एक ऐसा मकान चुना जहां से मैं जहाज़ों पर नज़र रख सकूं। मैंने अपने क्लब का नाम 'सुबाकी क्लब' रखा। एक फिलिपिनो नर्तकी फेली कुकुआरा को मैंने अपने यहां रख लिया। यह लड़की बड़ी वफादार साबित हुई और इसने कई बार मेरी जान बचाई।

हमारा पहला दिन सन् १९४२ का १५ अक्टूबर था। मैं स्वागत के लिए द्वार पर खड़ी रही। ज्योंही एक जापानी अफसर आया, मैंने सिर झुकाकर उसका स्वागत किया और धीमे से कहा—'कोम्बारा', यानी मैं आपको अत्यन्त नम्रतापूर्वक सायंकालीन अभिवादन करती हूं। इसी प्रकार मधुर विनम्रतापूर्वक मैं अपने ग्राहकों का स्वागत करने लगी और मेरी आमदनी बढ़ गई। जबकि मनीला के दूसरे क्लब सप्ताह में एक बार शो देते थे, मेरे क्लब में प्रति रात शो होता था। फेली कुकुआरा जापानी गीत गाती थी; प्राय: प्रेमगीत गाए जाते और फिलिपिनो लड़के-लड़कियां लोकनृत्यों का प्रदर्शन करते।

आरम्भ में मुझे कई आपत्तियों का सामना करना पड़ा। जब मैं उनमें से कुछ विलासियों को साफ-साफ कह देती कि यह वैसी जगह नहीं है जैसीकि वे चाहते हैं, तो वे थप्पड़ मार देते और बेचारी फेली या किसी दूसरी लड़की को भी पीट देते। मेरे क्लब के ऊंचे दरों का भी उन्होंने विरोध किया। परंतु क्लब की सफाई, व्यवस्था और नृत्य-संगीत के स्तर को देखते हुए उन्होंने इस चीज़

को तो चुपचाप स्वीकार कर लिया। प्राय: नौजवान अफसर बीयर मदिरा पीकर नशे में तोड-फोड़ शुरू कर देते—बोतल ज़मीन पर पटककर, पैसा दिए बिना ही चलते बनते। एक बार तो एक दुष्ट जापानी अफ़सर ने एक लड़की के सिर पर बीयर की बोतल तोड़ दी। लेकिन जापानियों की एक उत्तम प्रणाली यह थी कि सरकारी हुक्म के अनुसार, अफसरों के दुर्व्यवहार की रिपोर्ट अवश्य की जानी चाहिए। लेकिन मैंने कभी उनके खिलाफ शिकायत नहीं की। मैं सद्‌भावना बढ़ाना चाहती थी।

नृत्य-गान के विरुद्ध जापानी सरकार के बड़े कड़े नियम थ और वह उन्हें युद्ध-प्रयासों के मार्ग में बाधक मानती थी, तथापि अफसर लोग प्राय: मेज़बान लड़कियों को नाचने पर मजबूर करते थे। एक रात एक लड़की एक जापानी कप्तान के साथ नाच रही थी कि मिलिट्री पुलिस का एक सिपाही आया और उसने नाचनेवाले कप्तान को एक थप्पड़ मारा। कप्तान को गुस्सा तो बहुत आया, परंतु वह नाच बंद कर चुपचाप चला गया। मुझे चिंता लगी, जापानी मेरा क्लब बंद कर देंगे और मेरे सारे प्रयत्न विफल हो जाएंगे। फेली ने मुझे आश्वासन दिया—"सारा भार मुझपर छोड़ दो।"

तब फेली और एक फौजी अफसर ने उस मिलिट्री पुलिसमैन को बतलाया कि हमने तो विरोध किया था, लेकिन कप्तान नहीं माना और उसने नृत्य के लिए मजबूर किया। फौजी अफसर ने कुछ रिश्वत वगैरह भी दी और वह पुलिसमैन शिकायत की रिपोर्ट फाड़-कर चल दिया और तब से मेरे प्रति विश्वास भी बढ़ गया। इन दिनों मेरी ग्राहकी बहुत बढ़ गई थी और आमदनी भी। अब यही अवसर था कि मैं जापानी हलचलों के समाचार अमरीकी अफसरों तक पहुंचाऊं। कप्तान जॉन बून से मेरा सम्पर्क स्थापित हुआ। कप्तान बून बतान ज़िले के छापामार गुप्त सैनिकों का कमांडर था। उसने मेरा नाम 'हाई पॉकेट' रखा, और मेरी सूचना के लिए शब्दों को साग-भाजी के नाम दिए, जैसेकि कोई बात महत्त्वपूर्ण होती तो वह लिखता—'मटर बड़े अच्छे हैं।' और सूचना गलत होती, तो वह लिखता—'गोभी पहुंचते ही खराब हो गई।'

मेरे और कप्तान बून के बीच जो हरकारा था, जापानियों ने एक दिन उसे रंगे हाथ पकड़ लिया और मार डाला। लेकिन दूसरा हरकारा धरपकड़ से बचा रहा। उसके जूते के दो तले थे और इनमें वह लिखित समाचार छिपाकर ले जाता था। इसके अलावा हम केले के गुच्छे में से बीच के केले में कागज़ रखकर, वापस उसे छिलके से बंद कर देते थे। प्रतिमास मैं बून के पास भोज के पदार्थ, फल-फूल और दवाइयां भेजती और इन्हींमें गुप्त समाचार भी। यदि कभी आवश्यक कार्य होता तो मेरा एक फिलिपिनो वेटर बड़ा कुशल था, वह सीधा पहाड़ियों में दौड़ जाता। कप्तान बून का आदेश था कि मैं सभी जापानी जहाज़ों की हलचल का पता रखूं और जापानी सेनाएं कब, कहां, कितनी जा रही हैं, इसकी खबर कप्तान को देती रहूं।

एक रात जापानी रेडक्रॉस के जहाज़ी अस्पताल का एक नौ-सैनिक कप्तान आया। वह बहुत पिए हुए था, इसलिए उसने बताया कि वह बहुत-से सैनिकों के साथ बूगेनविले से आ रहा है। मैंने पूछा कि क्या वे लोग घायल हैं? उसने अट्टहास के साथ जवाब दिया—"कुछ तो घायल हैं और बाकी बहुत अच्छी हालत में हैं, क्योंकि हम जानते थे, ये बेवकूफ अमरीकी रेडक्रॉस का नाम सुनते ही जहाज़ को निकल जाने देंगे।"

उस रात तत्काल मैंने पहाड़ियों पर खबर भेजी कि जापानी लोग जहाज़ी अस्पताल सैनिकों के लिए काम में लाते हैं। ये उनके परिवहन के प्रमुख साधन हैं। इस जापानी कप्तान ने मुझे यह भी बताया कि जितने आदमी ज़्यादा घायल थे, उन्हें हमने मारकर दफन कर दिया है। और क्या करते? बेचारे यों भी मुर्दे जैसे हो रहे थे, बेकार अमरीकी उनपर ज़ुल्म करते!

एक रात मैं एक जापानी अफसर के पास बैठी हुई थी कि अचानक वह बोला—"मैंने तुम्हें पहले कहीं देखा है!"

"आपका मतलब है, जापानियों के आने से पहले······" उसने सुनते ही इतने ज़ोर का घूंसा मारा कि मैं ज़मीन पर गिर पड़ी। वह चिल्लाने लगा—"तुम पतित लोग, हमेशा यही कहते हो···

जापानियों के आने से पहले। अमरीका सदा के लिए जा चुका है। अब तो जापान का राज्य है। इस बात को कभी न भूलना।"

एक बार जापानी पनडुब्बी बेड़े का कमांडर अपने तीस-चालीस साथियों के साथ आया। मैंने बड़ी चतुराई से यह पता लगाया कि ये बेड़ा सोलोमन द्वीप जा रहा है। मैं बड़े मनोयोगपूर्वक नाचती रही और साथ ही कप्तान जॉन बून को पहाड़ियों पर समाचार भेज दिया कि जापानी पनडुब्बी बेड़ा कहां जा रहा है। मेरी इस सूचना के फलस्वरूप अमरीकी लड़ाकों ने सारा बेड़ा डुबो दिया। यह खबर मुझे एक जापानी अफसर से मिली—"मैं ही एक आदमी बचकर आया हूं।"

इन सब कामों के मध्य मैं किसी ऐसे आदमी की तलाश में भी रही जो केबेनातुआन बंदीगृह में मेरे पति से गुप्त सम्पर्क स्थापित कर सके। हमारे पास इस बात का प्रमाण था कि रेडक्रॉस का जो सामान अमरीकी बंदियों को भेजा जाता था, उसे बन्दियों को न देकर जापानी चुपचाप बाज़ार में बेच देते थे। इन दिनों मेरे पास पर्याप्त पूंजी थी और मैं अपने पति की सेवा करना चाहती थी। जब मैंने बन्दीगृह के एक आदमी को तैयार किया, तो वह समाचार लाया कि मेरे पति का देहांत दो सप्ताह पूर्व हो चुका है। जापानियों ने मृत्यु का कारण मलेरिया बतलाया; किंतु मुख्य कारण भुखमरी थी। फिर भी बन्दीगृह के दूसरे कैदियों के लिए हमने कई प्रकार का सामान भेजा और पहरेदारों को रिश्वत में घड़ियां, पेन और कैमरे आदि सामग्री दी।

अचानक मैं मुसीबत में फंस गई। मई १९४४ में, मैं सुबह के नाश्ते के लिए बैठने ही वाली थी कि मुझे भयंकर समाचार मिला, रेमान नामक हमारा हरकारा गुप्तचर पकड़ लिया गया है। उसी वक्त बड़ी तेज़ी से चार फौजी अफसर मेरे कमरे में घुसे और उनमें से दो ने अपने पिस्तौल मेरी पसलियों पर टिका दिए—"कहां हैं तुम्हारे कागज़ात ? तुम जासूस हो !" मेरा दिल डूब गया, जासूसों को फौरन गोली मार दी जाती है। उन्होंने मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी और मुझे एक कमरे में डाल दिया। जांच शुरू हुई। उन्होंने

मेरा गुप्त नाम 'हाई पाकेट' जान लिया था। एक गुप्त पत्र पकड़ा गया था और वे उसे पढ़ने में सफल भी हो गए थे। यदि यह बून के नाम लिखा पत्र था, तो ज़रूर मेरी मौत निश्चित थी। इसके बाद जापानी अफसरों ने मुझे बहुत पीटा। मेरी नाक और मुंह में हौज़-पाइप से पानी भरा गया। इससे बन्दी को ऐसा प्रतीत होता है—मानो कोई डूब रहा है। मैं बेहोश हो गई। जब होश आया, तो मेरी पिंडलियों को वे जलती सिगरेट से दागने लगे।

तीन सप्ताह तक मैं एक काली कोठरी में रखी गई। मेरी आंखों पर पट्टी बंधी रही। मुझे सिर्फ एक कप चावल और तीन कप पानी दिया जाता। एक दिन एक जापानी से, जोकि बरामदा साफ कर रहा था, मैंने इशारा किया कि मुझे पानी मिल जाए तो गंदे कपड़े धो लूं। इसपर उसने अपनी बाल्टी का गंदा, मैला पानी मेरे मुंह पर मार दिया। मेरे बाल उलझ गए थे, उनमें जुएं पड़ गई थीं, सारे बदन पर मैल की तहें जम गई थीं। खटमल, जूं और मक्खियों के बीच में मुझे रहना पड़ता था। भोजन की कमी के कारण मैं बहुत कमजोर पड़ गई थी और सारा शरीर सूखकर ठठरी हो गया था। सिगरेट से मेरे पैर पर जो निशान बनाए गए थे, वे गहरे घाव बन गए थे—ऐसे घाव, जो आजीवन नहीं मिटेंगे। मैं जीवित हूं या मर गई हूं, यह जानने के लिए मैं बड़बड़ाया करती और अपनी ही आवाज़ सुनने और समझने की कोशिश करती।

तीन सप्ताह के पश्चात् मुझे सानतियागो जेल में ले जाया गया। वहां, ग्यारह दूसरी औरतों के साथ, आठ फुट लम्बी दस फुट चौड़ी कालकोठरी में बंद कर दिया गया। तीन महीने बाद अचानक एक जापानी अफसर हमारी कोठरी की खिड़की के पास से गुज़रा। यह मेरे क्लब में आया करता था। इसलिए मैंने इसे पहचान लिया और कहा—"क्या मेरे मामले की जांच करा सकते हो ? मैं तो पागल हो जाऊंगी।" उसने मेरी मदद की।

मुझे जांच वालों ने बुलाया और मेरे सामने मेरे ही हाथ का लिखा एक खत रख दिया। अत्यन्त सर्वतापूर्वक मैंने इस पत्र में लिखा था—"मैं यहां हूं। एक अमरीकी औरत जापानी रात्रि-क्लब

चला रही हूं।"

इसके पश्चात् जांच वाला जापानी अफसर बहुत गुस्से में आया और दांत पीसकर चिल्लाया—"तुम चोर अमरीकी ! तुम्हारी ये हिमाकत ! जापानियों की जेब का पैसा लूटकर पतित अमरीकियों के लिए सामान खरीदती हो !" उन्होंने मुझे बहुत कष्ट दिया। मेरी उंगलियों के पोरों पर, नाखूनों के नीचे कीलें रखकर हथौड़े से ठोक दीं। इससे उंगलियों से एक भयंकर दर्द की लहर दौड़ जाती है। जापानियों ने मार-मारकर मेरी ऐसी दशा कर दी कि मैं चाहती तब भी बातचीत नहीं कर सकती थी।

एक सप्ताह के बाद मुझे, आंख पर पट्टी बांधकर, एक कोठरी में ले जाया गया। पट्टी हटा दी गई। मेरे सामने हाथ में नंगी तलवार लिए एक जापानी अफसर खड़ा था। उसने हुक्म दिया—"अपने खुदा का नाम लो। तुम्हारा अंत निकट है।" मैं तो इतनी कमजोर थी कि हिल-डुल भी नहीं सकती थी। मैंने आंखें बंद कर प्रार्थना का प्रयत्न किया। अचानक अफसर बोला—"तुम बहादुर औरत हो। हमने तुमसे दूसरे लोगों के नाम बताने को कहा, तुमने नहीं बताए, इसलिए हम तुम्हारा विश्वास करते हैं।" मैं उस वक्त बेहोश हो रही थी।

तीन दिन बाद वे मुझे फोर्ट मेककिन्ले ले गए, जहां मेरा कोर्ट मार्शल हुआ। जब मैंने अपने बचावपक्ष में कहना शुरू किया, तो मेरे मुंह पर इतने ज़ोर का घूसा पड़ा कि मेरा आधा दांत टूट गया—"तुम सिर्फ इतना ही कहो कि मैं अपराधी हूं।" मैंने सोचा कि इस मुसीबत से छुटकारा पाने के लिए यह कह देना अच्छा है। मेरे इतना कहते ही मुझे 'जासूस' घोषित कर मौत की सज़ा दी गई। लेकिन मुझे मृत्युदंड नहीं दिया गया, हालांकि प्रत्येक दिन और प्रत्येक रात मैं यही सोचती रही कि अब मुझे लेने आते हैं और अब गोली मारते हैं। कुछ दिन बाद मुझे फिर से नई ट्रायल के लिए ले जाया गया। परिणाम में मुझे मृत्युदंड के बजाय बीस वर्ष का कठोर कारावास दिया गया।

अंत में, तीन मास भी न बीते होंगे कि वह स्वर्गीय दिवस आ

गया। मुक्तिसेनाएं आईं। अब मैं फिर से अपने अमरीका और अपनी बेटी डिएन को देख सकूंगी। नंगे पैर, चिथड़ों में, थकी-हारी, नरकंकाली-सी मैं विजयिनी अमरीकी सेनाओं के सामने गई। मैंने अपना नाम बताया—'क्लेयर फिलिप्स'।

जर्मन जनरल को कैसे उड़ाया ?

काहिरा के एक काफे में दो नौजवान सैनिक बैठे थे। दोनों ब्रिटिश फौजी असफर थे। दोनों की उम्र पच्चीस से कम थी। लम्बी लड़ाई के बाद वे छुट्टी पर थे। बैठे हुए वे सोच रहे थे कि कोई ऐसी शैतानी करामात दिखाई जाए कि नाज़ी जर्मनी का अपमान भी हो और उसे धक्का भी गहरा लगे।

सन् १६४४ का साल था और रात का वक्त !

दोनों सैनिकों के दिमाग में सहसा यह खयाल आया कि क्यों न किसी जर्मन जनरल को उड़ा लिया जाए ? वैसे, ऊपर से देखने पर, यह योजना बेसिर-पैर की प्रतीत होती थी। जर्मन जनरल का उड़ा लेना क्या साधारण बात है ? काम जितना असम्भव है, उतना ही कठिन ! लेकिन काहिरा और लंदन के ब्रिटिश उच्चाधिकारियों को यह खयाल पसंद आया। जिस बेचारे जनरल को शिकार बनाने का फैसला किया गया, उसका नाम था—मेजर-जनरल कार्ल क्रीप। जनरल क्रीप हिटलर के वेह्रमास्ट का सम्मानित सदस्य था। लेनिनग्राद के भीषण संग्राम का नायक था और इन दिनों यूनानी द्वीप, क्रीट में स्थित २२,००० जर्मन सैनिकों का कमांडर था।

जनरल क्रीप को पकड़कर उड़ा लेना जितना दुष्कर था, उतना ही महत्त्वपूर्ण भी था। इस जनरल को उड़ा लेने पर, भूमध्यसागर में नाज़ी जर्मनी के सभी मनसूबे छिन्न-भिन्न हो जाते थे। जनरल क्रीप के गायब होने का मतलब था—जर्मनी की एक पसली निकाल लेना। यदि ऐसा हो जाए, तो उन लाखों लोगों की खुशी का ठिकाना न रहेगा, जा नाज़ियों के शिकंजे के नीचे गुलामी में तड़प रहे हैं। हंसते-हंसते उन लोगों के पेट में बल पड़ जाएंगे—'वाह ! हिटलर को खूब छकाया !'

बात सुनते ही हंसी आती है !

और जो लोग हंसते हैं, वे डरते नहीं। अथवा हंसी उन्हींकी है, जो निर्भय हैं।

निदान, योजना के अनुसार, फरवरी मास की एक रात्रि में क्रीट द्वीप के पहाड़ी इलाके पर एक ब्रिटिश वायुयान घने अंधेरे में उड़ानें भर रहा था। इन पहाड़ों में गुरिल्ला लड़ाका यूनानियों के छिपने के स्थान बने हुए थे। उक्त ब्रिटिश वायुयान ने एक छतरी-धारी सैनिक नीचे उतारा, जो स्वयं योजनाकारों में से एक था, नाम था—मेजर लेह-फार्मर। यह एक खूबसूरत आयर था। केवल सैनिक ही नहीं, यह यूनानी भाषा का विद्वान भी था। इसका पहाड़ों में उतरना था कि एक दुर्घटना हो गई—इसके पूर्व कि दूसरा साथी मेजर स्टेन्ली मॉस छतरी से कूदता, वायुयान बादलों में खो गया और उसे लौटकर जाना पड़ा। आगामी छ: सप्ताह तक मॉस कई बार फिर से आया, किंतु लेह-फार्मर अथवा विद्रोही क्रीटवासियों से उसका सम्पर्क स्थापित न हो सका। दस बार घने कुहरे और अंधेरे में उसने कोशिश की, लेकिन असफल रहा। अंत में जलनौका के द्वारा उसने प्रवेश किया और जर्मनी के समुद्री पहरुओं की नजर बचाता हुआ लेह-फार्मर तक पहुंच गया। लेह-फार्मर और उसके साथी, जो क्रीटवासी पहाड़ी लोग थे, तैयार खड़े थे, क्योंकि मॉस अपनी नौका में बहुत-सी बंदूकें और गोला-बारूद लाया था। और रात के गहन अंधकार में वे अपनी गुप्त गुफाओं की ओर बढ़ गए, क्योंकि दिन के उजियाले में पहाड़ पर चढ़कर गुफाओं तक जाने में पकड़े जाने का डर था। रात में यह डर कम हो जाता था, किंतु असुविधाएं अनेक थीं; तथापि सुबह चार बजे के करीब जब वे अपनी गुफा के द्वार पर पहुंचे, उनके पैर सूज गए थे, जूते फट गए थे और रात-भर ठोकरें खाकर गिरते रहने से उनके सारे शरीर पर काले-नीले दाग पड़ गए थे !

अगली दो और रातों तक यह गिरोह उत्तर की ओर बराबर बढ़ता रहा। इनकी इसी राह होकर जर्मन पहरुओं की टुकड़ियां गुजरी थीं। दिन में ये ग्रामवासियों के झोंपड़ों में छिपे रहते और

रात-रात-भर अंधेरे में राह काटते। कभी ऐसा भी होता कि लेह-फार्मर, मॉस और दूसरे साथी घास-फूस में छिपे होते कि बाहर जर्मन टुकड़ियां गुज़रतीं। सांस रोककर ये लोग उनके भारी बूटों की आवाज़ें सुनते !

जनरल क्रीप के डेरे के निकट अपना डेरा डालकर लेह-फार्मर भेस बदलने में तल्लीन हो गया। उसने अपनी मूंछें काले रंग से रंगीं, फटा-सा पतलून पहना और माथे पर एक रूमाल बांध लिया। मिकी उपनाम का एक यूनानी गुरिल्ला उसका सहयोगी था। मिकी जनरल क्रीप की प्रत्येक प्रवृत्ति से परिचित था, क्योंकि वह उसके पड़ोस में ही रहता था।

लेह-फार्मर ने देखा कि जनरल के घर में घुसकर जनरल को उड़ा लेने का प्रश्न ही नहीं उठता था, क्योंकि जनरल का बंगला कांटेदार तारों की तीन-तीन पंक्तियों से घिरा हुआ था और उन तारों में निरन्तर बिजली बहती रहती थी। इससे अलावा, पहरुए कुत्तों और सैनिकों की एक टुकड़ी का भी ज़बरदस्त पहरा था। अतएव, अगले चार दिनों तक नौजवान लेह-फार्मर, छिपकर, मिकी की खिड़की से जनरल पर नज़र रखता रहा। धीरे-धीरे उसने जनरल के सारे समय और कार्यक्रम का अनुभव पा लिया।

प्रत्येक प्रभात जनरल क्रीप अपनी कार में पांच मील दूर स्थित केन्द्रीय सैनिक कार्यालय जाता था। प्रत्येक सायंकाल अंधेरा होने पर वह लौटता था। इससे यह योजना बनी कि एक न एक रात ये लोग जनरल को बीच राह में फंदे में फंसा सकते हैं। लेह-फार्मर और मिकी ने सड़क का अध्ययन किया। इन्होंने देखा कि एक स्थान पर सड़क बड़ी तेज़ी से मुड़ जाती थी; चाहे जैसी गाड़ी या मोटर-कार हो, ब्रेक लगाना ही पड़ता था और गीयर बदलना पड़ता था !

इस अध्ययन के पश्चात् लेह-फार्मर उस गुप्त स्थान पर लौट आया, जहां मॉस छिपा हुआ था। उसने मॉस से विचार-विनिमय किया। इनकी भावी योजना के लिए बारह आदमियों की आवश्यकता थी—आठ आदमी तो सड़क के किनारे खाइयों में छिपे रहें और चार आदमी दूर से ही जनरल के आगमन की पूर्वसूचना दें। दो

ब्रिटिश अफसर जर्मन मिलिट्री पुलिस की वर्दी में सड़क पर खड़े रहें। इस काम के लिए गुरिल्लाओं ने दो जर्मन वर्दियां प्राप्त कीं, लेकिन इनमें से हरएक पोशाक के गुप्त स्थान पर मिकी की पत्नी ने आत्महत्या के लिए ज़हरीली गोलियां रख दीं। अगर ये पकड़ लिए गए, तो भेद छिपाए रखने के लिए, प्राण त्याग देना ज़रूरी था !

अब तक जर्मनों को गंध मिल गई थी कि एक न एक प्रकार का ब्रिटिश गुप्तदल इस द्वीपसमूह पर अपना काम कर रहा है। नतीजा यह हुआ कि इस छोटे-से गिरोह को रात-भर पहाड़ों में इधर से उधर भागते रहना पड़ा और प्रति रात अपना निवास-स्थान बदलना पड़ा। कई बार तो पकड़े जाने से ये बाल-बाल बचे।

२३ अप्रैल तक तैयारियां पूरी हो गईं। दूसरी रात का मुहूर्त निश्चित किया गया। किंतु दूसरी रात जनरल क्रीप ने रंग में भंग कर दिया। उसने तो जैसे अपना कार्यक्रम ही बदल दिया। लगातार तीन दिन तक वह रोशनी रहते घर लौटा, मानो उसे किसी दुर्घटना की आशंका थी।

चौथे दिन भी ये लोग टोह में बैठे रहे, लेकिन दिन उदय होकर अस्त हो गया, मगर जनरल का कहीं कोई चिह्न न दिखाई दिया।

उस दिन इन बारहों आदमियों ने अपनी शिकार की ताक में अपनी-अपनी जगह संभाली। बड़ी देर तक ये घात लगाए बैठे रहे। अचानक पूर्वसूचना देनेवालों की ओर से टार्च की रोशनी का संकेत मिला। तुरंत जनरल की खूबसूरत गाड़ी सड़क पर दौड़ती नज़र आई।

ज्योंही मोड़ की जगह गाड़ी धीमी हुई, लेह-फार्मर और मॉस ने, जोकि जर्मन मिलिट्री पुलिस की वर्दी पहने हुए थे, गाड़ी रोकने का इशारा किया। लेह-फार्मर ने फौरन दरवाज़ा खोलकर, जनरल क्रीप को बाहर खींच लिया। लेकिन बाहर आते ही क्रीप लेह-फार्मर से गुत्थमगुत्था हो गया। वह उसे गाली देने और कोसने लगा। वह लातें फेंक रहा था और घूंसों से पीट रहा था। तब तक तीन गुरिल्लाओं ने उसके हाथों में हथकड़ी डाल दीं और उसीकी गाड़ी की पिछली सीट पर उसे पटक दिया। इस बीच, जब जनरल के ड्राइवर ने

रिवाल्वर निकालने का प्रयत्न किया, मॉस ने उसकी भरपूर पूजा की और उसे बेहोश करके पास की एक खाई में फेंक दिया। इसके बाद मॉस तो ड्राइवर की जगह स्टीयरिंग संभालकर बैठ गया और लेह-फार्मर ने जनरल का टोप पहन लिया और स्वयं जनरल बनकर मॉसरूपी ड्राइवर के पास बैठ गया। जनरल क्रीप को बीच में दबोचकर, दो गुरिल्ला पीछे बैठ गए। दोनों गुरिल्लों के हाथों में खुले छुरे थे, और उन्होंने अस्फुट स्वर में जनरल क्रीप को साफ-साफ कह दिया कि अगर वह ज़रा भी हिला या बोला, तो एक सेकंड में जान से हाथ धो बैठेगा।

आगे चलकर एक जर्मन कंट्रोल-पोस्ट पर मॉस ने गाड़ी कुछ धीमी कर दी, ताकि वहां खड़ा हुआ संतरी जनरल की झंडी देख सके।

ज्योंही संतरी की नज़र जनरल की झंडी पर पड़ी, वह एक ओर हट गया। मॉस ने तुरंत गाड़ी तेज़ कर दी। आगे चलकर ज़्यादा खतरनाक जगह सामने आती थी। जनरल का बंगला राह में पड़ता था। उसके गेट के सामने ज्योंही गाड़ी पहुंची, गेट खुल गया और दो संतरी पहरेदार अटेन्शन में खड़े हो गए। मॉस ने तनिक हॉर्न बजाया और लेह-फार्मर ने इशारा किया कि अभी नहीं आ रहे हैं। और गाड़ी हवा हो गई।

इस प्रकार उन्होंने बाईस जर्मन कण्ट्रोल-पोस्ट पार कीं। सबसे कठिन अवसर हेराक्लियॉन में उपस्थित हुआ। वहां, सिनेमाघर से कितने ही जर्मन सिपाही बाहर आ रहे थे, क्योंकि अभी ही शो खत्म हुआ था। मॉस ने फिर से हलका हॉर्न बजाया। सैनिकों ने सलामियां दीं। लेह-फार्मर साहब ने, जो बड़ी शान से जर्मन जनरल की हैट पहने हुए था, सिर हिलाया।

एक बार शहर पार करना था कि इन लोगों की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्हें लौटकर काहिरा जाना था। लेकिन, काहिरा अभी दूर था। उन्होंने कार छोड़ दी और पहाड़ों में प्रवेश किया। वे भली भांति जानते थे कि जर्मन सेना के बाईस हज़ार सैनिकों में से प्रत्येक सैनिक कुछ ही देर बाद जनरल की खोज में लग जाएगा।

ये सैनिक क्रीट टापू की १६५ मील की लम्बाई और ३५ मील की चौड़ाई की पूरी धरती छान डालेंगे।

और यही हुआ !

दूसरे दिन दोपहर तक सारा आकाश जर्मन वायुयानों से भर गया। बार-बार वायुयानों से पर्चे गिराए जा रहे थे—"अगर जनरल क्रीप को तीन दिन में नहीं लौटाया गया तो हेराक्लियॉन ज़िले के सभी विद्रोही गांवों को मिट्टी में मिला दिया जाएगा।" और जर्मनों ने अपनी धमकी का पालन भी किया। उन्होंने अनोइया के कस्बे को समूचा नष्ट कर दिया। यह कस्बा नौ सौ साल पुराना था। जर्मनों ने वहां की ईंट से ईंट बजा दी।

अब तो इन ब्रिटिश अफसरों की कठिनाई का पार न रहा। कदम-कदम पर खतरा था। पूरब से दक्षिण तक वे छिपते-भागते फिरते थे। बेचारा जनरल भला आदमी था। उसने बराबर कदम से कदम मिलाया और लम्बी मंज़िलें पार कीं और शिकायत भी नहीं की। जनरल क्रीप को सिर्फ एक ही चिंता थी कि उसकी बहनों का क्या होगा ? वैसे वह अविवाहित था और अपनी बहनों का पालन-पोषण करता था, लेकिन जर्मन सेना का यह नियम था कि ज्योंही कोई सैनिक बंदी बना दिया जाता, उसका वेतन और भत्ता आदि बंद हो जाता।

उन दिनों लेह-फार्मर और मॉस अपना गुप्त रेडियो सम्पर्क खो चुके थे। सामने से जो रेडियो-चालक उनके लिए जहाज़ का प्रबंध करनेवाला था, उससे सम्पर्क स्थापित नहीं हो रहा था और इससे इनकी घबराहट बढ़ गई थी। तब एक रात, एक आदमी इनकी तलाश में आया। उसने रेडियो से कांट्रेक्ट करने की कोशिश की। लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। उसका ट्रांसमीटर खराब हो गया था।

ऐसा प्रतीत होता था, मानो, आरंभ के दिनों का उनका सौभाग्य उनका साथ छोड़ रहा है। क्रीप द्वीप पर स्थित दूसरे रेडियो-ऑपरेटरों के पास अपने आदमी भेजे और कहलाया कि काहिरा समाचार भेज दें। ये ऑपरेटर काफी दूर पर थे और

इधर जर्मनों की ओर से पहाड़ों के चौतरफ कड़ी कार्यवाही चल रही थी।

अब ये लोग निराश ही न हो गए थ, वरन् थककर चूर भी हो गए थे। तभी खबर आई कि सैकड़ों जर्मन सैनिक पहाड़ को घेर रहे हैं। इन्हें यह स्थान छोड़कर भाग जाना चाहिए।

इसका मतलब हुआ—आधी रात के वक्त, पूरी तेज़ी से आठ हज़ार फुट ऊंचे ईडा पहाड़ की चढ़ाई ! सांझ के धुंधलके में इन्होंने अपनी गुफा छोड़ी और बारह घंटों तक लगातार चढ़ते रहे। बर्फ नरम पड़ गई थी और उसने खंदकों के मुंह को ढक दिया था। इससे खतरा बहुत बढ़ गया था। ज़रा-सी चूक होने पर हज़ारों फुट नीचे, दो पहाड़ों के बीच में, सदा के लिए सो जाना पड़ता था। चोटी के पास हल्की वर्षा हो रही थी। इन लोगों के पास खाने को कुछ भी नहीं था। बड़ी कठिनाई से ये ऐसी जगह पहुंचे, जहां किसी गड़रिये ने झोंपड़ी बनाई थी। उसकी छत उड़ चुकी थी। इस झोंपड़ी में रात-भर ये छिपे रहे और तब इन्होंने नीचे उतरना शुरू किया। नीचे आने पर, झाड़-झंखाड़ों में इनके कपड़े फट गए और हाथ-पैर तथा चेहरे पर डालियों की मार से निशान पड़ गए। इन कठिनाइयों से गुरिल्लाओं का मूड इतना खराब हो गया कि मॉस और उसके साथी को चिंता लग गई कि कहीं ये लोग जनरल को मार न डालें। इस घटना के चौबीस घंटे बाद, बरसती बरसात में, ये लोग एक खाई में छिपे हुए थे कि लेह-फार्मर नें 'सावधानी' के उस संदेश को फिर से पढ़ा, जिसके कारण इन्हें ईडा पवत पर ऊंचा चढ़कर छिपना पड़ा था। इनके अनुवादक ने भूल की थी, संदेश में तो लिखा था—'अपनी जगह मत छोड़ो।'

तब दूसरी मुसीबत सामने आई। जिस जगह से इन्होंने समुद्र-तट पर जहाज़ द्वारा पलायन के प्रबन्ध की योजना बनाई थी, उस जगह दो सौ जर्मन सैनिक घेरा डालकर बैठे थे। अब तो पूरी योजना बदलनी होगी और पूरा नया प्रबंध करना होगा। एक गुप्त रेडियो-ऑपरेटर से सम्पर्क होने पर इन्होंने नये प्रबंध का संदेश दिया। मॉस कहने लगा—"ऐसा लगता है, सब कुछ हमारे हाथ से

चला जाएगा।" किंतु इस वक्त, जबकि जर्मन सैनिक इनके चारों ओर घेरे का दायरा छोटा करते जा रहे थे, भाग्य पलटा। एक हत्यारा और दो भेड़चोर इनके दल में शामिल हो गए। वे बहुत होशियार और तेज़ चलनेवाले लोग थे और प्रत्येक पहाड़ी रास्ते से परिचित थे। कई गुप्त स्थान उनकी दृष्टि में थे। उनकी सहायता से मॉस और उसके साथी जर्मन सैनिकों के पंजे से बचते रहे।

तारीख १४ मई की रात को, तीन सप्ताह की भगदड़ के बाद, एक संदेशवाहक ने इन्हें जगाया—"कल रात, तुम्हें लेने के लिए रोडाकिनो-तट पर एक नौका आएगी। वक्त पर वहां पहुंच जाना।" अपने हत्यारे और भेड़चोर पथ-प्रदर्शकों की सहायता से, लगातार चलकर, ये लोग रोडाकिनो-तट के करीब एक पहाड़ी पर आकर छिप गए।

इस स्थान से कुछ ही दूर पर एक जर्मन कैम्प था। फिर एक मील दूरी पर दूसरा कैम्प था। उस रात नौ बजे ये चुपचाप समुद्र-तट तक खिसक आए और तभी इन्होंने संसार की सबसे सुखकर और मधुर आवाज सुनी—छोटी नौका के इंजन की धीमी-धीमी आवाज़।

तीन दिन बाद सकुशल ये काहिरा पहुंच गए! लेह-फार्मर और मॉस ने जनरल क्रीप से विदा ली। जनरल क्रीप मुस्कराया। उसके मन में कोई घृणा नहीं थी, क्योंकि वह जानता था कि ब्रिटेन की जेल में उसकी जान बच जाएगी, जबकि उसके दो साथी जनरलों को फांसी दी गई थी।

लेह-फार्मर और मॉस को इन सेवाओं के सम्मान में डी० एस० ओ० की उच्चतम उपाधि से विभूषित किया गया।

बम्बई में भीषण विस्फोट

शुक्रवार, १४ अप्रैल १९४४ के दिन बम्बई शहर के बन्दरगाह मित्रदेशों के जहाजों की ध्वज-पताकाओं से सुशोभित हो रहे थे। जापान पर सुयोजित आक्रमण की ज़बरदस्त तैयारी हो रही थी। शहर में सड़क-सड़क और चौराहे-बाज़ारों में, देश-देशांतरों के सैनिकों की भीड़ थी। ये लोग रेशमी साड़ियां, हाथीदांत के खिलौने और दूसरे भारतीय सामान खरीदने में व्यस्त थे। उधर गोदी-क्षेत्र में मजदूर और अधिकारी अपने दैनिक कार्यक्रम में लीन थे।

बन्दरगाह की बड़ी घड़ी ने साढ़े बारह का घंटा बजाया। गोदी कामगार श्रमिक काम छोड़कर, दोपहर के भोजन के लिए चल पड़े। ठीक उसी समय बन्दरगाह में बेलरे नामक नार्वे का व्यापारी जलयान लंगर डाले खड़ा था। उसकी दूसरी मंज़िल से नीचे जाते समय चतुर जहाजी रॉय हेवर्ड ने देखा कि एक जहाज़ फोर्ट स्टिकिन के रोशनदान से धुंए जैसा कुछ उठ रहा है। ७,१४२ टन का यह माल ढोनेवाला जहाज़ था। लगभग सात सप्ताह पूर्व यह जहाज़ बीस लाख पौंड की सोने की छड़ें लेकर आया था, ताकि उस सोने की सहायता से भारतीय मुद्रा को दृढ़ता मिल सके। इसके अतिरिक्त, इस जहाज़ पर भारी संख्या में शस्त्रास्त्र लदे हुए थे, गोला-बारूद था, हवाई जहाज़ थे और दूसरा बहुत-सा सामान था।

ठीक डेढ़ बजे गोदी कामगार भोजनोपरांत लौटे। उनमें से कई फोर्ट स्टिकिन पर काम करते थे। ज्योंही उन्होंने जहाज में प्रवेश किया, उन्होंने देखा कि बहुत-सा धुआं उठ रहा है। तत्काल 'आग-आग' का शोर मच गया।

बम्बई फायर ब्रिगेड के आदमी दौड़े और उन्होंने अपने भारी जल-पाइप और हौज़ आग बुझाने में लगा दिए। किंतु उनके नायक

का निर्णय था कि ब्रिगेड के कार्यालय से और बहुत-से आदमी बुलाए जाएं, क्योंकि शस्त्रास्त्र वाले जहाज़ के जलने का खतरा है। किसी भी क्षण भयंकर विस्फोट हो सकता है। नायक का सहायक फोन नम्बर २९० को संकेत देने के लिए दौड़ा; लेकिन वह कठिनाई से सीढ़ियां पार कर सका, क्योंकि सैकड़ों मज़दूर किनारे पर जाने की जल्दी कर रहे थे। जब यह सहायक फोन के निकट पहुंचा, तो क्या देखता है कि फोन का डायल ही गायब है। तब दौड़कर वह बन्दरगाह के फायर अलार्म स्थल पर गया और उसका शीशा तोड़कर खतरे की घंटी बजाई। इस प्रकार, फायर ब्रिगेड के कंट्रोल-रूम को दो पम्प भेजने की साधारण सूचना मिली। उस वक्त दोपहर के दो बजकर सोलह मिनट हुए थे।

फोर्ट स्टिकिन का बहुत-सा सामान कराची में उतार दिया गया था और वहां से ८,७०० रुई की गांठें और तेल के सैकड़ों पीपे, लकड़ी, गंधक, मछली का खाद आदि चीजें जहाज़ पर चढ़ाई गई थीं। यह बहुत खतरनाक सामान था, क्योंकि आग लग जाने पर बड़ी खुशी से धू-धू जलता था।

जहाज़ पर सूखी मछलियां भी थीं, जिनकी दुर्गंध भयंकर होती है, इसलिए जहाज़ के कप्तान ए० जे० नैस्मिथ ने कामगारों को मछलियां पहले उतार देने का आदेश दिया था, किंतु इस कारण रुई की गांठें और दूसरे ज्वलनशील पदार्थ जहाज़ पर लदे रह गए थे। जिस वक्त आग लगी, रुई की गांठों पर ६,००० क्यूबिक फुट लकड़ी चढ़ी हुई थी। इस लकड़ी पर विस्फोटक पदार्थों के डिब्बे रखे हुए थे और सबसे नीचे शस्त्रास्त्रों की पेटियां सजी हुई थीं।

सूचना मिलने के आठ मिनट बाद ही फायर ब्रिगेड का एक अफसर दो पम्प लेकर घटनास्थल पर हाज़िर हो गया; लेकिन स्थिति देखते ही उसने कंट्रोलरूम को तुरंत नया संदेश भेजा कि आठ और पम्प फौरन भेजे जाएं। दो बजकर पैंतीस मिनट पर, बम्बई फायर ब्रिगेड का सर्वोच्च अधिकारी नॉर्मन कूम्स आया। उसे कपड़े बदलने का अवसर भी नहीं मिला था।

इस बीच आयुध-विभाग का एक अधिकारी कप्तान बी० टी०

ओवर्स्ट भी आ पहुंचा और उसने कप्तान नैस्मिथ से कहा कि जहाज को फौरन हटा दिया जाए और उसे डुबोने के लिए पेंदे में सुराख बना दिए जाएं। कूम्स ने भी यही राय दी—"जहाज़ पर इतना विस्फोटक पदार्थ लदा हुआ है कि बम्बई के सभी बन्दरगाह उड़ जाएंगे।" उच्चाधिकारियों के एकमत न होने के कारण, कप्तान नैस्मिथ कोई निर्णय न ले सका, क्योंकि ओबर्स्ट के प्रस्ताव का विरोध बंदरगाह के जनरल मैनेजर कर्नल जे० आर० सेडलर ने किया—"नीचे पानी चार फुट से ज़्यादा गहरा नहीं है, इसलिए, सुराख बना देने पर भी पानी भीतर ऊंचाई तक नहीं चढ़ सकेगा।"

इस प्रकार मतभेद चलता रहा।

लगभग एक घंटे तक आग बुझानेवाले जलते जहाज़ पर जल की अनन्त धाराएं बरसाते रहे। इस समय भी बन्दरगाह के हज़ारों मज़दूर निश्चित मन से अपने-अपने काम में तल्लीन थे। इधर फोर्ट स्टिकिन ने लाल झंडा भी नहीं फहराया, जिसका अर्थ था—इस जलते हुए जहाज़ में विस्फोटक पदार्थ भरे हुए हैं। इसके अलावा जहाज़ ने खतरे के धड़ाके भी नहीं किए। पास ही दूसरा जहाज़ जेपालैण्डा खड़ा था। उसका एक नाविक, जो इस अग्निकांड को देख रहा था, इस दृश्य से ऊबकर नीचे केबिन में चला गया और जाकर पुस्तक पढ़ने में लग गया।

किंतु इन सभी दर्शकों में एक बहुत ही समझदार और अनुभवी दर्शक भी था—रॉय हेवर्ड। उसने अपने जीवन में लन्दन में कई भयंकर अग्निकांड देखे थे। उसने देखा कि फोर्ट स्टिकिन से जो लपटें उठ रही हैं, उनका रंग निश्चय ही पीला-भूरा है। तत्काल उसके मस्तिष्क में अपने अध्ययन-काल का एक वाक्य गूंज उठा—'यदि लपटों का रंग पीला-भूरा हो, तो समझो, यह रंग विस्फोटक पदार्थों के कारण है!' उसने अपने साथियों को पुकारा—"नीचे भागो।" तब तक वह बेलरे जहाज़ की तोप के निकट मुंह के बल गिर पड़ा। सहसा फोर्ट स्टिकिन से गरजती हुई एक भीषण ज्वाला उठी। वह जहाज़ के ऊंचे मस्तूल से भी ऊंची थी। इसके एक ही क्षण बाद धरती और आकाश के टुकड़े-टुकड़े कर देनेवाला विस्फोट हुआ।

पूरे बम्बई नगर की इमारतें हिल गईं और खिड़कियों के शीशे चकनाचूर हो गए। बन्दरगाह में फोर्ट स्टिकिन के आसपास जितने जहाज़ खड़े थे, उनपर जलती हुई रुई के गोलों और आग की चिन-गारियों की वर्षा होने लगी। फोर्ट स्टिकिन की अग्नि शांत करने में सेवालीन आग बुझानेवाले बहादुरों में से छियासठ तो तत्काल मर गए और तिरासी घायल हुए। विस्फोट के कारण सागर-जल से इतनी भयंकर लहर उठी कि जेपालैण्डा जहाज़ का अग्रभाग साठ फुट ऊंचा उठ गया और जाकर सीधा एक शेड से टकराया।

इस विस्फोट ने प्रलयंकर और पैशाचिक चमत्कार दिखलाए—दूर सड़कों के राहगीर मुफ्त में मारे गए। धातुओं के गरम टुकड़े शहर पर बरसने लगे और जहां-तहां लोग उनसे मरने लगे। कप्तान सिडनी केली अपने एक मित्र के साथ टहल रहा था कि गरम धातु का उड़ता हुआ टुकड़ा आया और उसने कप्तान केली के दो टुकड़े कर दिए। उसका मित्र भाग्यवान था, बच गया।

बन्दरगाह पर कप्तान नैस्मिथ और हैंडरसन से स्टीवेंसन नामक एक सर्वेयर विचार-विमर्श कर रहा था कि जैसे, विस्फोट इसपर होकर गुज़र गया। उसने इतना ही देखा कि उसका सारा शरीर काला पड़ गया है और वह नंगा है। उस क्षण के बाद नैस्मिथ और हैंडरसन को फिर किसीने नहीं देखा।

गोदी से लगभग एक मील की दूरी पर डी० सी० मोतीवाला अपने मकान की तीसरी मंज़िल के बरामदे में बैठा था। सोने की एक छड़ जहाज़ों से उड़ी और छत को छेदती हुई मोतीवाला के सामने आ गिरी।

इसी समय हेवर्ड जहाज़ के डेक पर आया। उसने देखा कि सारा डेक घायलों और मृतकों से भरा हुआ है। अकेले हेवर्ड ने कई लोगों को मौत के मुंह से बचाया। कई बार उसने जहाज़ से सड़क तक की दौड़-धूप की और पंगु लोगों को अपनी पीठ पर लादकर अस्पताल पहुंचाया। पहला विस्फोट दायें-बायें बिखरा था, किंतु दूसरा विस्फोट आकाश की ओर उठा और उसने जहाज की सामग्री को तीन हज़ार फुट ऊंचा उछाला। यह सामग्री नौ सौ गज़ की परिधि

में गिरी। इसमें जलती हुई धातु के टुकड़े, चद्दरें, लकड़ी और रुई आदि थी। जब धूल और धुआं साफ हुआ, तो फायर ब्रिगेड के नॉर्मन कूम्स ने देखा कि बन्दरगाह में सर्वत्र आग लगी हुई है। बन्दरगाह की आग को बुझाने का कार्यभार सेना को सौंपकर, वह अपने लोगों को शहर के उन मोहल्लों में ले गया जहां सैकड़ों मकान धू-धू जल रहे थे।

दूसरे विस्फोट के कारण मृतकों की जो संख्या सामने आई, वह दिल दहला देनेवाली थी। सिर्फ दो ही घंटे में सेंट जार्ज अस्पताल में ३७१ घायल भर्ती हुए। अस्पताल में डाक्टरों और नर्सों की कमी पड़ गई। घायलों के बाद मृत व्यक्तियों के शव लाए गए। रविवार की भोर तक अस्पताल का मुर्दाघर शवों से खचाखच भर गया। फिर भी सैकड़ों शव ऐसे थे, जिन्हें किसीने नहीं उठाया।

राहत और सेवा का कार्य बड़े जोर-शोर से चला। इन दिनों बम्बई में हिंदू-मुस्लिम दंगे बाढ़ पर थे, किंतु इस समय सभी जातियों और देशों के नागरिकों ने सम्मिलित रूप से अपनी सेवाएं अर्पित कीं।

भारतीय और ब्रिटिश सैनिकों ने, रॉयल एयर फोर्स के कर्मचारियों ने और सेना के विभिन्न विभागीय व्यक्तियों ने रात-दिन काम किया। उन्होंने शस्त्रास्त्रों और गोला-बारूद की ४०,००० पेटियां एलेक्ज़ेंड्रा गोदी से दूसरी जगह पहुंचाई। इनमें से हरएक पेटी का वज़न ११५ पौंड था। इधर रेडक्रॉस की स्वयसेविकाओं ने जलती ज्वालाओं की रोशनी में काम करनेवाले वीरों की सेवा की। वे निरतर चाय और अन्य पेय पहुंचाती रहीं, जबकि उनके चारों ओर गोले फट रहे थे और बारूद के धड़ाके हो रहे थे। उन्होंने तब तक अपनी जगह नहीं छोड़ी, जब तक प्रत्येक व्यक्ति को अपना पेय नहीं मिल गया।

एच० एम० एस० सुसेक्स की तेज़ सर्चलाइट की रोशनी में सैनिक, नाविक और बन्दरगाह के कर्मचारियों ने सोलह जहाज़ों को एलेक्ज़ेंड्रा गोदी से हटाया। ये लोग इन्हें दूर समुद्र में ले गए। इनमें से सात जहाज़ों पर भी भारी गोला-बारूद लदा था। आदमियों

की इतनी कमी थी कि कई स्वयंसेवकों ने बड़े-बड़े काम किए, ऐसे काम, जैसे जहाज़ चलाना आदि ! उन्नीस घंटों तक निरन्तर इन्होंने कार्य किया और एक भी जहाज़ अपने हाथ से नहीं खोया। लेकिन इससे पहले बन्दरगाह के अति निकट खड़े हुए सत्ताईस जहाज़ नष्ट-भ्रष्ट हो चुके थे। जितनी हानि हुई थी, उसका हिसाब लगाना बहुत मुश्किल था। जहाज़ों की सम्पूर्ण सम्पत्ति के अतिरिक्त नगर को भी अपार हानि पहुंची। बन्दरगाह के दो पुल तहस-नहस हो गए। विक्टोरिया डॉक का दरवाज़ा बाहर और भीतर से बन्द हो गया, क्योंकि भीतर पांच सौ टन का एक जहाज़ आ फंसा था और बाहर तीन सौ टन की एक नौका टूट गिरी थी। इसके अलावा टूटे हुए मस्तूलों के ऊंचे-ऊंचे ढेर लगे थे। बन्दरगाह की सभी इमारतें मिट्टी में मिल गई थीं। आसपास के भव्य भवनों की केवल नींवें नज़र आ रही थीं।

दस लाख टन कूड़ा-करकट एकत्र हो गया था। इसे साफ करने में छः मास लगे। छः हज़ार भारतीय और दो हज़ार ब्रिटिश सैनिकों ने रात-दिन घोर परिश्रम किया, तब जाकर कहीं बन्दरगाह की शक्ल सामने आई।

लेकिन आज तक यह पता नहीं चला कि इस भीषण विस्फोट का कारण क्या था। यह तो अब तक एक विस्मयकारी रहस्य बना हुआ है। सम्भवतः यह 'शत्रु' की कार्यवाही हो, किंतु इसके पक्ष में कोई प्रमाण नहीं मिला।

बम्बई के जिन नागरिकों ने और देशी-विदेशी मुसाफिरों और मेहमानों ने अपनी आंखों इस अमानवीय विस्फोट को देखा अथवा अपने कानों इसके गर्वित गर्जन को सुना, निश्चय ही वे आजन्म अपने रोमांचकारी अनुभव को भूल न सकेंगे !

लंदन का रक्षक

सन् १९४३। दूसरी बड़ी लड़ाई का पांचवां साल चल रहा था। अक्टूबर का महीना था। सुबह का वक्त था। वन-प्रदेश था। ऐसे समय लगभग पैंतालीस वर्ष का एक नाटा, ठिगना किंतु मज़बूत आदमी सीमा पार करने का प्रयत्न कर रहा था। व्यक्ति यह फ्रांसीसी था। नाम था माइकेल होलार्ड। तटस्थ देश स्विट्ज़रलैंड-प्रवेश का उसका प्रयास था।

माइकेल के कंधे पर एक थैला था, जिसमें कुछ आलू थे। हाथों में एक कुल्हाड़ी थी। बाहरी दिखावे से वह एक लकड़हारा लगता था। घने वन में पेड़ों और झाड़ियों के बीच में बड़ी तेज़ी से वह गुज़र रहा था—इस फुर्ती और चालाकी से, मानो वह आदमी नहीं बनबिलाव है। पेड़ों से छन-छनकर सुबह के सूरज की रोशनी आ रही थी, लेकिन माइकेल का ध्यान उसकी तरफ नहीं था। उसको तो यही चिंता थी कि तनिक-सी आवाज़ भी न हो जाए, क्योंकि उस वक्त आवाज़ का मतलब 'मौत' था। कारण, उस जंगल में और पहाड़ियों के पीछे बड़े चौकन्ने कान प्रत्येक ध्वनि को सुनते थे—ये कान थे, जर्मन पहरेदारों के और जर्मन पुलिस के चतुर कुत्तों के।

वैसे इन पहरेदारों और इनके ज़बरदस्त और खूंख्वार कुत्तों को छका देना माइकेल के लिए बड़ी बात नहीं थी। अब तक वह उनचास बार सीमा पार कर स्विट्ज़रलैंड में जा चुका था। वास्तव में होलार्ड एक औद्योगिक डिज़ाइनर था, जोकि स्वदेश की सेवा के निमित्त एक जासूस बन गया था। उसने बड़ी सेवाएं की थीं। सीमा पार कर कई महत्त्वपूर्ण सूचनाएं वह लाया था, जिन्हें ब्रिटेन भेज दिया गया था।

माइकेल और उसके साथियों ने फ्रांस में बने हुए नाज़ी जर्मनी के कई हवाई अड्डों का भेद प्राप्त किया था। किन-किन सागरतटों पर तोपें लगी हैं, बोलोन में पनडुब्बियों के गुप्त अड्डे कहां हैं और कौन-कौन-सी सैनिक टुकड़ियां कब, कहां से प्रयाण करनेवाली हैं—सबका पता माइकेल ने लगाया।

लेकिन इस वक्त माइकेल जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और रहस्यमय समाचार ले जा रहा था, उसकी तुलना में पिछले समय के सभी रहस्य फीके पड़ जाते थे। इस समय उसकी थैली के आलुओं में एक छोटा-सा किंतु अतिशय महत्त्व का एक कागज़ पड़ा था। यही वह रहस्यमय कागज था, संसार का सबसे कीमती कागज़ का टुकड़ा, जिसने लन्दन नगर को भयंकर विनाश का शिकार होने से बचा लिया। इतना ही नहीं, इसके कारण लड़ाई भी जल्दी खत्म हो गई।

माइकेल के थैले में था—परम प्रतापी हिटलर के नये अस्त्र, उड़नेवाले बम, वी–१ का नक्शा। इस नक्शे से सहज ही पता लग सकता था कि किस स्थान से हिटलर अपने इस सर्वसंहारकारी अस्त्र को उड़ाएगा।

अब हिटलर की योजना थी कि लंदन नगर पर पचास हज़ार वी–१ बरसाए जाएं। पांच हज़ार बम प्रतिमास गिरें। इस बम-वर्षा की सारी तैयारी बहुत ही गुप्त रखी गई थी। फिर हिटलर जैसा पहले नम्बर का शक्की आदमी! शक पैदा होने से पहले ही गोली मार दे! भला, ऐसी जगह से और ऐसी व्यवस्था के साये से रहस्य को खींच लाना कितना कठिन! नाज़ी जर्मनी ने यह भी चतुराई दिखाई कि इन गुप्त अड्डों पर जो मज़दूर काम करते थे, वे उस देश-प्रदेश की भाषा या बोली नहीं जानते थे और यों, गूंगे-बहरे से अधिक थे। पोलैंड और हालैंड के बेगारी मज़दूरों से भी काम लिया जाता था—इनके श्रम से लगभग एक सौ जगहों पर गुप्त अड्डे बन रहे थे, जहां से वी–१ के ज़बरदस्त ज्वालामुखी भेजे जा सकते थे।

इन एक सौ जगहों के, संसार के सबसे मूल्यवान रहस्य का पता लगाकर जासूस माइकेल होलार्ड, धीमे-धीमे दुश्मन की सीमा

से निकलकर, तटस्थ राष्ट्र की सीमा में प्रवेश करनेवाला था। स्मरण रहे, मित्रराष्ट्रों के लाखों जासूसों में माइकेल ही ऐसा था जिसे इस विनाशकारी आयोजन का रहस्य ज्ञात था।

सीमान्त सम्मुख था। माइकेल दौड़ने लगा। सामने कांटेदार तार लगे थे, जो फ्रान्स और स्विट्ज़रलैंड को अलग करते थे। ज्योंही उसे महसूस हुआ कि उसका घुटना किसी फौलादी शिकंजे में अचानक ही जकड़ लिया गया है, माइकेल ने अपनी कुल्हाड़ी और थैली कांटेदार तारों के पार फेंक दीं। अब यह फौलादी शिकंजा क्या था? यह तो एक खूंख्वार और भयंकर जर्मन पुलिस कुत्ते का जबड़ा था। माइकेल के घुटने को अपने जबड़े में दबाए कुत्ता वहीं अचल खड़ा रह गया। माइकेल हिल नहीं सकता था; लेकिन यह ज़रूरी था कि माइकेल कुत्ते के जबड़े से छुटकारा पाए, क्योंकि वह जानता था कि कुत्ते के साथ काम करनेवाले पहरेदार अब आनेवाले होंगे।

माइकेल के पास कोई भी हथियार नहीं था। उसका भेस एक साधारण ग्रामीण का था। यदि वह हथियार रखता तो सहज ही में संदेह होता। माइकेल ने घबराकर इधर-उधर देखा—ऐसी चीज़ मिल जाए, जिससे कुत्ते का मुंह खुलवाया जा सके। माइकेल के भाग्य से समीप ही एक मज़बूत लकड़ी पड़ी नज़र आई। बड़े जतन से उसने उस लकड़ी को कुत्ते के जबड़े में डालकर एकदम श्वास-नली में घुसेड़ दिया। दो ही मिनट में कुत्ता गिर पड़ा और मर गया। माइकेल तारों से उलझता हुआ निकल गया, किंतु सामने एक लम्बा-तगड़ा स्विस गार्ड बन्दूक ताने खड़ा था। उसका निशाना माइकेल नहीं था, वरन् उसका पीछा करनेवाले दो जर्मन सैनिक थे, जो उसे गोली मारने ही वाले थे। गार्ड को देखकर जर्मनों ने अपनी बंदूकें नीची कर लीं और बड़बड़ाते हुए चुपके से चले गए।

माइकेल के इस घटनापूर्ण निष्क्रमण को अभी कुछ ही दिन बीते होंगे कि मित्रदेशों के बममार वायुयानों ने वी–१ के जर्मन अड्डों को तहस-नहस करना शुरू कर दिया। सिर्फ पांच ही सप्ताह में लगभग तिहत्तर अड्डे बरबाद कर दिए गए। यद्यपि जर्मनों ने नये अड्डे बनाए, मगर लन्दन नगर को राख कर देने की उनकी भारी

योजना स्वयं नष्ट हो गई। अंतर इसीसे स्पष्ट है कि हिटलर महोदय पचास हज़ार बमों के स्थान पर केवल दो हज़ार बम ही गिरा सके, और ये भी सन् १९४३ में नहीं, सन् १९४४ के मध्य में। यदि १९४३ में गिराए जाते तो ब्रिटेन को बड़ी हानि होती, किंतु अब तो काफी देर हो चुकी थी।

इस चीज़ का महत्त्व आइज़नहावर ने इस प्रकार बताया—"यदि जर्मनी वी–१ का निर्माण छः मास पूर्व पूरा कर लेता तो यूरोप पर हमारा आक्रमण बहुत मुश्किल हो जाता, शायद असम्भव !"

इस कथा का विस्मयकारी अंश तो यह है कि माइकेल होलार्ड ने जो कुछ किया अपनी मर्ज़ी से। स्वेच्छा से उसने गुप्तचर का कार्य किया। वह किसी नौकरी में नहीं था। उसकी सेवाओं ने उसे विश्व का सबसे बड़ा गुप्तचर बना दिया। जब भी उसके पास मित्रदेशों को देने योग्य कोई सूचना होती, वह स्विट्ज़रलैंड में प्रविष्ट होता। न तो उसके पास रेडियो था, न पैराशूट की छतरी थी और न दूसरा कोई साधन था।

माइकेल होलार्ड एकदम सादा आदमी था। योग्यता से कम वेतन वह पाता था और अन्वेषण की एक संस्था में काम करता था। फ्रान्स जब हार गया और जर्मन सेनाओं ने राजधानी पेरिस में प्रवेश किया, तब माइकेल की संस्था जर्मनों के लिए काम करने लगी। माइकेल ने सोचा, यही मौका है। उसने इस्तीफा दे दिया और कोयला-गैस के कारखाने में काम करने लगा। आगे चलकर उसकी यह नई नौकरी बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई, क्योंकि इसके कारण उसे बार-बार सीमान्त निकट के वनप्रदेश में जाने का बहाना मिल गया—वह कोयले के योग्य लकड़ी की तलाश में था।

एक दिन चुपचाप उसने स्विट्ज़रलैंड की सीमा पार की और ब्रिटिश अधिकारियों को जासूस के रूप में अपनी सेवाएं सौंप दीं। बाद में जर्मनों ने उसे पकड़ लिया, लेकिन वह किसी तरह बातें बनाकर लौट आया। अब तो वह निरन्तर इधर से उधर जाने-आने लगा, किंतु इसके लिए उसे भारी कीमत चुकानी पड़ी—उसे अपने तीन बच्चों और पत्नी से अलग होना पड़ा। विभिन्न स्थानों में छिप-

कर रहना पड़ा, किंतु उसने हिम्मत न हारी और कई फ्रांसीसी नागरिकों को अपना सहयोगी बना लिया। इन लोगों में रेलवे मज़दूर, ड्राइवर और होटल वाले थे। उसने जर्मन सेनाओं की हलचल का पता लगाया और ब्रिटेन को उसकी सूचना दी। आरम्भ में माइकेल के पास सिर्फ पांच आदमी थे, बढ़ते-बढ़ते ये एक सौ बीस हो गए। इनमें से बीस जासूसों को जर्मन नाज़ियों ने पकड़ लिया और मृत्युदंड दिया।

माइकेल की सबसे महत्त्वपूर्ण सफलता का आरम्भ अगस्त सन् १९४३ में रोओं के एक काफे में हुआ। उस दिन के बाद वह वी–१ सम्बन्धी योजना का पता लगाने में लग गया। उसके एक जासूस ने खबर दी कि दो ठेकेदार परस्पर बातचीत कर रहे थे—अमुक जगह अजब तरह का इमारती काम चलनेवाला है, जिसमें बहुत बड़े परिमाण में सीमेंट और कंक्रीट का उपयोग होनेवाला है।

यह खबर मिलते ही पादरी का भेस बनाकर माइकेल रोओं जा पहुंचा। वहां एम्प्लॉयमेण्ट ऑफिस में उसने बताया कि वह मज़दूरों के कल्याण के निमित्त अपना जीवन अर्पण कर चुका है। उसने अपने थैले में से निकालकर कई बाइबल दिखाईं। उसने पूछा कि इमारती काम कहां चल रहा है, ताकि वह मज़दूरों को धर्म और मुक्ति का मार्ग बता सके। सूचना पाकर वह आगे बढ़ा। एक स्थान पर जाकर उसने देखा कि सैकड़ों आदमी काम कर रहे हैं। कंक्रीट डाली जा रही है और इमारतें ऊंची उठ रही हैं।

स्मरण रहे, इस समय माइकेल मज़दूर के भेस में था। अब तो वह भी भीड़ में शामिल हो गया और बड़ी फुर्ती से ईंटें झेलने लगा। किसीने उसे रोका नहीं।

यहां एक नई समस्या सामने थी। मज़दूर फ्रांसीसी भाषा नहीं जानते थे। उनमें से एक-दो, जो टूटी-फूटी फ्रांसीसी बोल सकते थे, उन्होंने बताया कि गैरेज बन रहे हैं। लेकिन यह सही नहीं था, क्योंकि इमारतें बहुत छोटी थीं और भला, शहर से इतनी दूर गैरेज क्या करें? माइकेल के लिए सबसे अधिक विस्मयकारी और

सम्मोहक दृश्य तो यह था—लम्बी, नीली पट्टी वाली लगभग पचास गज़ लम्बी कंक्रीट की एक पट्टी ! माइकेल ने तुरंत अपनी जेब से कम्पास निकाला। कम्पास की सुई पट्टी का मुंह लन्दन की ओर बता रही थी। बस, यही वह जगह है, जहां से वी-१ उड़नबम लन्दन पर बरसाए जाएंगे। फिर ज्ञात हुआ, जर्मन अधिकारी एक-एक दिन में तीन-तीन पाली बदलकर मजदूरों से लगातार काम ले रहे हैं।

माइकेल वहां से चुपचाप खिसक गया। उसने ब्रिटेन को रिपोर्ट दी। लन्दन में मित्रदेशों के नेता बड़े चिंतित और परेशान थे, नाज़ी क्या कर रहे हैं ? उन्हें यह तो संकेत मिल गया था कि जर्मनी 'चालकरहित वायुयान' बना रहा है, परन्तु वह क्या और कैसी चीज़ होगी, कुछ भी मालूम न था। और जर्मनी जो कुछ न करे कम। मित्रों की आशंका थी कि ज़र्मनी कोई अद्वितीय और भयंकर अस्त्र बना रहा है। इस कार्य में बाधा डालना आवश्यक था, अन्यथा सर्वनाश निश्चित था।

माइकेल और उसके चार जासूस नवनवीन सूचनाएं पाने के लिए साइकलों पर निकल पड़े। उनकी जेबों में नक्शे थे। उत्तरी फ्रांस उन्होंने छान डाला। धीरे-धीरे लोगों से बात करते, पता लगाते तीन सप्ताह बीत गए। इतना ही ज्ञात हुआ कि साठ जगह विचित्र प्रकार का इमारती काम चल रहा है। दो-चार सप्ताह और प्रयत्न करने पर उन्होंने चालीस और ऐसे स्थानों का पता लगा लिया। ये सभी स्थान दो सौ मील लम्बे और तीस मील चौड़े गलियारे में थे। ये समुद्रतट के समानान्तर थे और सभी अड्डों का मुंह लन्दन की ओर था। लेकिन, आखिर ये क्या चीज थे ?

कभी-कभी जासूसी के क्षेत्र में भी किस्मत अपना चमत्कार दिखाती है। और यह किस्मत की चाल ही थी कि कई बार माइकेल हिटलर के गुप्ततम रहस्यों तक पहुंच गया। आंद्रे नामक एक फ्रांसीसी की सहायता से माइकेल को वी-१ की सबसे बड़ी योजना का पता पाने में सफलता मिली।

जिस जर्मन अधिकारी के अधिकार में इस योजना का नक्शा था, वह हर वक्त सावधान रहता था और अपने ओवरकोट की जेब

में नक्शे को सुरक्षित रखता था। कभी भूलकर भी ओवरकोट उतारता न था। यहां तक कि दफ्तर में भी इस कोट को पहने रहता। सिर्फ सुबह नौ बजे, जब वह नित्यकर्म के निमित्त स्नान-घर में जाता, ओवरकोट उतारकर रख देता। ऐसे ही एक दिन आंद्रे ने नक्शा उड़ा लिया। माइकेल ने उसकी प्रतिलिपि रख ली।

यही प्रतिलिपि थी जो आलुओं के बीच रखी थी जबकि उस दिन माइकेल सीमा पार कर रहा था और जर्मन पुलिस के कुत्ते ने उसकी टांग पकड़ ली थी।

इस कार्य की समाप्ति पर माइकेल को ब्रिटिश सरकार से धन्यवाद और बधाई का तार मिला। माइकेल इतना थक चुका था कि अब वह कोई नया काम हाथ में लेना न चाहता था। उसका तन-मन थक गया था। एक जगह से दूसरी जगह भागते उसे वर्षों हो गए थे। शंका और भय की अशांत मानसिक स्थिति में रहते वह थक गया था। ब्रिटिश सरकार ने उसपर ज़ोर दिया कि वह स्विट्ज़रलैंड में ही रहे। वह भी अपने काम के आकर्षण और प्रलोभन को रोक न सका।

फ्रांस में अपनी ज़रा-सी चूक के कारण माइकेल गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद जर्मन नाज़ियों ने उसे भयंकर कष्ट दिया, किंतु वे उससे किसी प्रकार की कोई सूचना न पा सके। प्रमाण के अभाव में उसे जेल में डाल दिया गया।

युद्ध जब समाप्ति के निकट आया जर्मनों ने सभी कैदियों को अधटूटी नौकाओं में बिठाकर समुद्र में छोड़ दिया। जर्मनों का खयाल था कि मित्रदेशों के बमवर्षक वायुयान इन नौकाओं को डुबो देंगे; किन्तु भाग्य ने माइकेल का साथ दिया और अंतिम समय रेडक्रॉस ने डूबती हुई नौकाओं के बंदियों को बचा लिया।

दो-तीन मास अस्पताल में रहने पर माइकेल स्वस्थ हुआ। रॉयल एयर फोर्स का एक विशेष वायुयान उसे लेने के लिए भेजा गया। लन्दन में उसके स्वागत-समारोह की तैयारियां हो रही थीं। उसे डी० एस० ओ० के सम्मान से सम्मानित किया जा रहा था। किसी भी विदेशी नागरिक को मिलनेवाली ब्रिटेन की यह सबसे

बड़ी उपाधि थी।

तब सर ब्रियन हॉरॉक्स ने कहा था :

"इसमें दो मत नहीं हो सकते कि माइकेल होलार्ड को वीरता के लिए सर्वोच्च सम्मान-पदक मिलना चाहिए। सही अर्थों में माइकेल ही वह आदमी है जिसने लन्दन की रक्षा की, जिसने लन्दन को सर्वसंहारकारी सत्यानाश से बचा लिया !"

नकली नोटों का चमत्कार

जर्मनी आत्मसमर्पण कर चुका था।

एक दिन फ्रेंकफर्ट नगर में मित्रसेना के कार्यालय में फोन की घंटी बज उठी। युद्धकाल था, अतः अमरीकी मेजर जार्ज मेक्नेली ने तुरंत रिसीवर उठाया। फोन के दूसरे छोर से, आस्ट्रिया से, मित्रों का जासूस बोल रहा था—"आज हमें एक जर्मन कप्तान ने एक मोटर लॉरी सौंपी है, जिसमें करोड़ों पौंड के बैंक ऑफ इंग्लैंड के नोट हैं। इसके अलावा, एन नदी में हज़ारों नोट तैर रहे हैं। कई ग्रामवासी तथा मित्रसेनाओं के सैनिक उन नोटों की शिकार में व्यस्त हैं।

उस समय, जाली सिक्कों और नकली नोटों से, मित्रों की सेनाओं को सुरक्षित रखने के काम पर ही, मेजर मेक्नेली नियुक्त था।

प्रायः युद्धकाल में, आक्रमण और अधिकार के अवसर पर, करोड़ों की राशि के नकली नोट चल जाते हैं।

सूचना मिलते ही मेक्नेली उस जगह गया, जहां जर्मन कप्तान ने वह लॉरी सौंपी थी। वहां उसने तेईस बड़े-बड़े बक्सों में बैंक ऑफ इंग्लैंड के नोटों के सैकड़ों बंडल देखे। देखकर मेजर मेक्नेली को बेहोशी आ गई।

बढ़िया दूरबीन से भी मेक्नेली के लिए यह पता लगाना मुश्किल था कि ये नाट असली हैं या नकली। उसने तुरंत बैंक ऑफ इंग्लैंड को फोन किया, लेकिन फोन पर उसकी रिपोर्ट सुनकर जैसे बैंक के सुननेवाले श्रोताओं को सांप सूंघ गया!

उसी वक्त बैंक ऑफ इंग्लैंड ने मेजर मेक्नेली के पास अपने निष्णात रीव्ज़ को भेजा। बड़े गौर से रीव्ज़ ने इन नोटों को देखा,

परखा, सूंघा, छुआ और उंगलियों से फरफराया और अंत में आकाश की ओर देखता हुआ गूंगे-सा खड़ा रह गया।

उस समय रीव्ज़ के साथ स्काटलैंड यार्ड के तीन जासूस भी थे। उन्होंने और मेक्नेली ने मिलकर इस मामले की तह तक जाने का भरपूर प्रयत्न किया।

बड़ी मुश्किल से पता चला कि नाज़ी जर्मन सरकार ने इस कार्य को एक गुप्त और सांकेतिक नाम दिया था—'आपरेशन बर्नार्ड'! यह एक ऐसा ज़बरदस्त धोखा था, जैसा संसार में आज तक किसी सरकार ने दूसरी सरकार को अथवा एक दुश्मन ने दूसरे दुश्मन को कभी नहीं दिया था।

खोज करने पर मालूम हुआ कि लगभग चार साल पहले, सन् १९४३ में, स्टाकहोम, लिस्बन और ज्युरिक आदि तटस्थ देशीय राजधानियों से बैंक ऑफ इंग्लैंड के नाम के नकली नोट लंदन में प्रविष्ट हो रहे थे।

जब-जब मौका मिलता, कम से कम एक लाख पौंड के नोट लंदन में लाए जाते। बड़ी तेज़ी से इन नोटों की बनावट और सफाई में सुधार हो रहा था। इससे बैंक के निष्णातों के सामने यह बात स्पष्ट हो गई कि बहुत ही चतुर कारीगरों ने इन नोटों को बनाया है और बहुत ही चालाक गुर्गों ने इनका वितरण किया है।

उन्हीं दिनों एडिनबरा में एक जर्मन जासूस पकड़ा गया। उसके सूटकेस में बैंकनोट थे—बहुत ही सावधानी से बनाए गए खूबसूरत नोट, ऐसे कि बैंक ऑफ इंग्लैंड भी देखकर विस्मित रह जाए।

यह सब कलाकारिता देखकर बैंक ऑफ इंग्लैंड को महसूस हुआ कि अब उसकी टक्कर सीधी नाज़ी जर्मन सरकार से है और विकट संकट की यह एक बहुत ही नाज़ुक घड़ी है। सारे ब्रिटेन की इज़्ज़त और साख खतरे में है। कई युगों से समस्त संसार के बैंक इंग्लैंड के नोटों से इस तरह व्यवहार चला रहे थे मानो वे नोट नहीं खरा सोना हैं। देश-देशांतरों में सभी जातियों और मुल्कों के लोगों ने, आपत्काल में अपनी सुरक्षा के निमित्त, बैंक ऑफ इंग्लैंड के नोटों का संग्रह किया था।

और आज ऐसी घड़ी आई थी, जब ब्रिटेन से बाहर के बाज़ारों में करोड़ों रुपयों के नकली ब्रिटिश नोट प्रचार पा गए थे। यदि इस विकट वेला में, युद्ध के दौरान, यह घोषित कर दिया जाए कि लोग सावधान रहें, नकली नोट फैल गए हैं, तब तो परिणाम और भी भयंकर हो जाए; मित्र और तटस्थ देशों में ब्रिटेन के लिए आत्म-संहारकारी परिस्थिति पैदा हो जाए और युद्धकार्य में बहुत बड़ी बाधा खड़ी हो जाए ! अतएव, बैंक ऑफ इंग्लैंड ने इस दुर्घटना को दैव का दुर्निवार कोप जानकर, सिर झुका लिया।

अब, मेजर जार्ज मेक्नेली, रीव्ज़ और स्काटलैंड के तीनों जासूसों के पास जो कुछ सूत्र थे, उनके आधार पर उन्होंने अपनी खोज जारी रखी। कौन वे लोग थे जिन्होंने ये नोट बनाए और कहां और कैसे वे यन्त्र थे जहां इन नोटों का निर्माण हुआ ?

मेजर मेक्नेली और उसके साथियों ने तुरन्त उस जर्मन कप्तान को जा पकड़ा, जिसने नकली नोटों के बक्से सौंपे थे। उसने बताया कि रेड्ज़ीप नामक गांव में उसे यह सामग्री एक जर्मन अफसर से मिली थी। वह इन नोटों को पास की एक झील में डुबाने के लिए ले जा रहा था।

रेड्ज़ीप में मेक्नेली को पता लगा कि अलपाइन रिडाउट् नामक स्थान में अन्तिम मोर्चा बनाने की जर्मनी नाज़ियों की योजना थी। यहीं पर्वतमाला के नीचे छिपे हुए भाग में, मालगोदामों और कारखानों का जाल बिछा हुआ था। यहीं सोलह नम्बर की गैलरी में बैंकों के नोट छापने के मुद्रणयन्त्र मिले। यह गैलरी पर्वत काट-कर बनाई गई थी और लगभग दो सौ फुट लम्बी थी। लेकिन, जब इस यन्त्रालय में कोई प्रमाण—कागज़, तस्वीर या छपाई के ब्लॉक—न मिले तो रीव्ज़ बोला—"हूं, अब हमें उन लोगों का पता लगाना पड़ेगा जो इस यंत्रालय के संचालक थे।"

पूछताछ पर पता चला कि इस भूगर्भ यंत्रालय में जो लोग काम करते थे, उन्हें जर्मनी के आत्मसमर्पण के कुछ दिन पूर्व, यहां से चालीस मील दूर स्थित, एबेंसी नामक मृत्यु-शिविर में भेजा गया था।

अब तो खोजियों का यह दल फौरन एबसी पहुंचा। लेकिन वहां कुछ भी हाथ नहीं आया, क्योंकि यन्त्रालय में एक सौ चालीस आदमी काम करते थे, वे नौ दो ग्यारह हो चुके थे।

घटना इस प्रकार थी कि जिस जर्मन कमांडर को एक सौ चालीस आदमियों को 'गेसचेम्बर' में भस्म कर देने का काम सौंपा गया था, उसने इनका चार्ज लिया और बहाना भी पूरा बनाया कि जैसे वह उन्हें भस्म ही कर रहा है, किन्तु उसने कुछ न किया। तब तक मित्र-सेना उस कमांडर के मृत्यु-शिविर तक पहुंच गई। इधर, कमांडर अपने प्राण बचाकर भागा, उधर एक सौ चालीस कारीगर भी भाग-कर अपनी राह लग गए।

अब क्या हो!

मेजर मेक्नेली और उसके साथियों के सौभाग्य से जर्मनों ने मृत्यु-शिविर का रिकार्ड अच्छी तरह रखा था। एक रजिस्टर में सभी लोगों के नाम और पते लिखे थे। अब तो ऐसी खोज शुरू हुई जिसमें खोजियों को विगत जर्मन साम्राज्य के एक कोने से दूसरे कोने तक भटकना पड़ा।

एक के बाद एक, यों, कुल चालीस प्रमुख कर्मचारियों का पता लग गया। तब चेकोस्लोवाकिया के एक आदमी, ऑस्कर स्कला, से पता चला कि 'आपरेशन बर्नार्ड' नाम इसलिए पड़ा था कि सन् १९४२ में जर्मन मेजर बर्नार्ड क्रुज़र इस कार्य के लिए डायरेक्टर बनाया गया था। वह हिमलर के जर्मन जासूस-विभाग, गेस्टापो के सर्वोच्च अधिकारी सर्वसत्ताधारी हेनरिक हिमलर के स्वप्न को कार्य रूप में परिणत करने के लिए रखा गया था। हिमलर की योजना थी कि नकली नोटों के ज़रिये ब्रिटेन की आर्थिक अवस्था को बरबाद कर दिया जाए।

इसके लिए क्रुज़र ने कई कारीगर एकत्र किए, जिनमें अनेक बंदी भी थे, जिन्हें सुविधाजनक जीवन का आश्वासन देकर लाया गया।

एकदम आधुनिक ढंग का मुद्रणालय स्थापित किया गया। बहुत ही होशियारी से ब्लॉक और प्लेट तैयार किए गए। युद्धोपयोगी

उत्पादन रोककर जर्मनी के सर्वश्रेष्ठ उत्पादकों ने मुद्रणालय के लिए आवश्यक यन्त्र बनाए और भेजे। कागज़ के एक कारखाने ने बैंक ऑफ इंग्लैंड के विशेष जल-चिह्न वाला कागज़ बनाया, जो बहुत ही पतला, हल्का और अच्छा था।

नोट जब छपकर तैयार हो गए, तो मेजर बर्नार्ड क्रूज़र ने तुर्की, स्पेन, स्विट्ज़रलैंड और स्वीडन के जर्मन राजदूतावासों और व्यापार-भवनों के गेस्टापो-जासूसों के पास उनके बंडल के बंडल भेजे। उन्हें यह आदेश दिया कि इन नोटों को स्थानीय बैंकों में चलाने तथा भुनाने का प्रयास करें। इस कार्य में जासूस प्रतिनिधियों को पूरी सफलता मिली। हिमलर सुनकर खुशी से उछल पड़ा।

अब यह प्रयत्न किया गया कि और भी अच्छे नोट बनाए जाएं, जिनमें किसी किस्म की कमी न रहे। फिर भी जिन नोटों की छपाई प्रथम श्रेणी की थी, वे तटस्थ देशों में हिमलर के जासूसों और तोड़-फोड़ करनेवाले लोगों को दिए गए। दूसरी श्रेणी का माल जर्मन-अधिकृत देशों के गेस्टापो दलों को दिया गया ताकि वे देश-देश के गद्दारों से गुप्त रहस्य और सूचनाएं खरीद सकें। ऐसी सूचना देने-वाले दलाल बैंक ऑफ इंग्लैंड के नोट पसन्द करते थे और देखते ही उन्हें छाती से लगा लेते थे, क्योंकि उथल-पुथल के उस काल में, बैंक ऑफ इंग्लैंड का ही उन्हें भरपूर भरोसा था तीसरी श्रेणी के नोट एक ओर एकत्र करने का हिमलर का आदेश था। उसकी योजना थी कि ब्रिटिश द्वीपसमूह में नोटों को वायुयानों से गिराया जाए, ताकि स्थान-स्थान पर लोग उठाकर उन्हें जेब में रख लें और जब वे उन्हें भुनाएं तो इंग्लैंड दिवालिया हो जाए।

लेकिन हिमलर का यह स्वप्न पूरा न हुआ, क्योंकि जब तक नोट छपकर तैयार हुए, लुफ्टवेफ (जर्मन वायुसेना) आसमानी मैदान से भगा दी गई और जर्मनी के लिए इंग्लैंड पर अब और हवाई आक्रमण करना कठिन हो गया।

हिमलर और उसके जासूसों ने इन नकली नोटों से दूसरे देशों के दलालों, विभीषणों और गद्दारों को खूब छकाया। सबसे अधिक हानि में बेचारे यही गद्दार-देशद्रोही रहे। एक तो उन्होंने अपने

देश के प्रति भयंकर अपराध किया, दूसरे जो नोट मिले वे कुछ दिन बाद बेकार हो गए। अल्बानिया का पेशेवर जासूस एलियाज़ा बज़्ना भी इस सौदे और मज़ाक का शिकार बना। युद्धकाल में यह व्यक्ति अंकारा-स्थित ब्रिटिश राजदूत का सेवक था और राजदूत की आलमारी से गुप्त कागज़ों की नकलें लाकर जर्मनों को बेचा करता था। इस दुष्कर्म से उसको बहुत बड़ी आय थी। धीरे-धीरे, गद्दारों के इतिहास में, वह सबसे अधिक वेतन पानेवाला गद्दार जासूस बन गया। एक बार तो उसे जर्मन गेस्टापो ने एक ही बार में तीन लाख पौंड के नोट दिए। नोट भी कैसे ? यही बर्नार्ड क्रुज़र के कारखाने में बने हुए। लेकिन माल प्रथम श्रेणी का था। इससे भी बढ़िया उदाहरण एक स्विस व्यापारी का है, जिसे तुर्की के एक बैंक ने ये नोट दिए। व्यापारी ने एक स्विस बैंक को दिए। वहां से चलते-चलते ये नोट बैंक ऑफ इंग्लैंड में पहुंच गए।

लेकिन बैंक ऑफ इंग्लैंड में इन नोटों की असलियत पहचान ली गई; यानी ये नकली हैं, इस बात की आशंका उठी। एक बूढ़े-खूसट किन्तु सावधान खज़ांची ने नोटों को देखा, परखा और चश्मा चढ़ाकर अस्वीकृति में सिर हिला दिया। मेजर क्रुज़र का माल पहली बार एक ऐसी मंडी में आया और आकर रुक गया, जहां लेनेवाला कोई न था। फिर भी, इससे पूर्व कई नोट जर्मनी से एक तटस्थ देश में, वहां से ब्रिटेन और ब्रिटेन से दूसरे तटस्थ देश में होते हुए वापस जर्मनी पहुंच गए थे और बीच में कहीं पकड़े न गए थे। ऑस्कर स्कला की नोटबुक से पता चला कि मेजर बर्नार्ड के मुद्रणालय ने नब्बे लाख नोट छापे थे, मुद्रित अंकों के आधार पर जिनका मूल्य एक अरब चालीस करोड़ पौंड था। इनमें से पन्द्रह लाख के नोट तुर्की गए; और मज़े की बात तो यह रही कि जर्मनी पर स्पेन, पुर्तगाल और स्विट्ज़रलैंड के माल का जो कर्ज़ था, उसका चुकारा चतुर हिमलर ने पचहत्तर लाख पौंड के इन नकली नोटों से कर दिया !

मोटर लॉरी के अलावा एन नदी में बहते हुए जो नोट लोगों से वापस वसूल किए गए, वे तीन करोड़ पचहत्तर लाख पौंड के थे।

दूसरी व्यंग्यपूर्ण विडम्बना यह रही कि मेजर क्रुज़र की महान कला के इन नमूनों में से कई नोट, जिन्हें लोगों ने छिपाकर रख लिया था, ब्रिटेन के रेसकोर्स की घुड़दौड़ों में खर्च किए गए और वहीं वे पकड़े गए। यूरोप के कालेबाज़ारों में बहुत दिनों तक ये नोट चलते रहे। इतना ही नहीं, न्यूयार्क के कई बैंकों पर भी इन नोटों का जादू चल गया।

यद्यपि मेजर बर्नार्ड का 'ऑपरेशन क्रुज़र' बराबर काम करता रहा, कारखाना चलता रहा, किंतु उसके सिर पर एक नई चिंता सवार हो गई। पचास हज़ार प्रतिमास की रफ्तार से नोट छप रहे थे और इस प्रकार तो, हिमलर के आदेश के अनुसार, शीघ्र ही सारे नोट छप जाने पर काम खत्म हो जानेवाला था। मेजर बर्नार्ड को इस बात की चिंता नहीं थी कि कार्य-समाप्ति पर वह बेकार हो जाएगा, वरन् उसे भली भांति मालूम था कि ज्योंही नोटों की छपाई का काम पूरा हुआ, उस स्वयं का भी काम तमाम हो जाएगा। हिमलर, बर्नार्ड और उसके एक सौ चालीस आदमियों को कदापि ज़िंदा न रहने देगा, क्योंकि इन सबकी मृत्यु से ही हिमलर का यह रहस्य रक्षित रह सकता था। अतएव, मेजर बर्नार्ड ने अपने एक विश्वास-पात्र कर्मचारी को बुलाकर कहा—"नोटों की छपाई की रफ्तार कम कर दो, वरना काम पूरा होने पर मुझे तो फिर से मोर्चे पर भेज दिया जाएगा, लेकिन तुम सबको गोली मार दी जाएगी।" मेजर बर्नार्ड का यह भय बैंक ऑफ इंग्लैंड के लिए हितकारी साबित हुआ।

मेजर बर्नार्ड ने चुपचाप लाखों नोट लकड़ी के बक्सों में बंद करवा दिए, अन्यथा इनके भी बाज़ार में आते ही बैंक को ज़बरदस्त धक्का लगता।

इस समय युद्ध का पासा पलट रहा था। बर्लिन पर ज़बरदस्त बमवर्षा हो रही थी। हिमलर ने बर्नार्ड से अपना कारखाना बंद करने का आदेश दिया; मगर बर्नार्ड ने अपने मालिक को समझाया कि खुदा न करे, हमें पीछे हटना पड़ा तो ये नोट नाज़ियों के लिए बड़े उपयोगी और लाभप्रद सिद्ध होंगे, क्योंकि अंततः यह विदेशी

मुद्रा है। इसके अलावा, हमारे इस कारखाने में जाली पासपोर्ट और प्रमाणपत्र छप सकते हैं। इसके विपरीत इसे बंद कर देने में तनिक भी लाभ नहीं है।

एक दिन, जब मित्रराष्ट्रों की सेनाएं कारखाने के बहुत नजदीक आ चुकी थीं, अपनी गाड़ी में बैठा मेजर बर्नार्ड एक सुंदरी के साथ कारखाने में उपस्थित हुआ। उसने कारखाने के मैनेजर को अपने मालिक हिमलर का आदेश सुनाया—"आपरेशन बर्नार्ड का नामोनिशान मिटा दिया जाए, सारे कागज़ात नष्ट कर दिए जाएं, नकली नोट और कोरा बैंकनोट-पेपर जला दिया जाए, डाइयां और प्लेटें पास की झील में डुबो दी जाएं, एक सौ चालीस इन कर्मचारियों को एबेंसी के शिविर में ले जाकर कत्ल कर दिया जाए।"

मैनेजर से इतना-सा कहते-कहते मेजर बर्नार्ड ने अपने चेहरे पर मन का भाव झलकने नहीं दिया और बताया कि चूंकि उसे ज़रूरी सरकारी कार्यवश अन्यत्र जाना है, अपनी देखरेख में वह इस काम को पूरा न कर सकेगा और मैनेजर को ही यह कार्य-भार उठाना पड़ेगा। इसके बाद मेजर बर्नार्ड ने अपनी गाड़ी में करोड़ों पौंड के बैंक ऑफ इंग्लैंड और स्विस बैंकों के असली नोट रखवाए—गुलाम मुल्कों की राजधानियों में कालाबाज़ारी से उसे ये नोट मिले थे, साथ ही बर्नार्ड ने अपनी गाड़ी में नकली पासपोर्ट के कई बंडल भी रख लिए।

इसके बाद, मेजर बर्नार्ड क्रूज़र की वह अनमोल गाड़ी तूफान की रफ्तार से स्विट्ज़रलैंड की दिशा में उड़ चली। उस दिन के बाद फिर कभी जर्मनी के उस कलाकार क्रूजर का कहीं पता न चला। लगभग बारह देशों की पुलिस आज भी उसके पीछे पड़ी हुई है।

रोमेल का क्या हुआ ?

फील्ड मार्शल रोमेल का नाम सुनकर ब्रिटिश सेनाओं के होश उड़ जाते थे। वे उसे देवपुरुष मानती थीं, इसलिए मिस्र-स्थित ब्रिटिश सेनाओं के प्रमुख सेनापति ने एक आदेश प्रसारित किया था—"जनरल रोमेल भी हमारे जसा ही एक आदमी है और हमारी सेना का जो कोई सैनिक जनरल रोमेल को 'देवपुरुष' समझेगा, उसे सख्त सज़ा दी जाएगी।"

मई सन् १९४० में जर्मनी की सातवीं पेंझर डिवीज़न सेना के कमांडर के रूप में जब उसने फ्रांस को बिजली की गति से पार किया, तब वह सिर्फ उनचास वर्ष का था। इसके दो साल बाद मिस्र में विजय पर विजय पाता हुआ वह सिकंदरिया की देहली पर सिर्फ सत्तर मील दूर आकर खड़ा हो गया तो क्या दोस्त, क्या दुश्मन, घर-घर में उसका नाम गूंज उठा। हिटलर ने उसे 'फील्ड मार्शल' का पद दिया और उसके शत्रु ब्रिटेन तक ने घोषणा की कि रोमेल संसार का सुयोग्यतम जनरल है।

उसकी योग्यता, तेजी और चतुराई के कारण लोग उसे 'रेगिस्तान की लोमड़ी' कहने लगे थे। एक बार उसकी सेना पर मित्र-राष्ट्रों की आठवीं सेना का बहुत दबाव बढ़ गया था और वास्तव में इधर उसके पास बहुत कम सैनिक थे। अब वह क्या करता! ज़रा-सी चूक होते ही घिरने और मरने का अंदेशा था। ऊपर से ब्रिटिश विमान जर्मन सेनाओं के शिविरों और साज़-सामान के चित्र ले रहे थे। अब रोमेल ने अपनी बुद्धिमानी दिखाई। उसने हुक्म दिया कि उसकी सेना में जितने भी वेहिकल्स-कार, गाड़ियां, जीपें, लारियां, ट्रकें और टैंक हों, सभी वाहन निरंतर निश्चित क्षेत्र में चलते रहें। दो दिन और दो रात जर्मनी के ये वाहन चलते रहे,

रोमेल की बताई सड़कों पर इर्द-गिर्द दौड़ते रहे। ऊपर से ब्रिटिश विमान चित्र लेते रहे। अब मित्रसेनाओं के सेनापति चित्र देखकर यही समझे कि रोमेल की कमान में अपार सेना और सामग्री है। निदान, ब्रिटिश सेनाएं मैदान छोड़कर भाग गईं।

रोमेल का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। वह अपने खास अंदाज से अपनी सैनिक टोपी पहनता था। उसमें पुराने किसान जैसी चालाकी थी। जर्मन सैनिक उसको अपौरुषेय शक्ति का प्रतीक 'देवपुरुष' मानते थे। एक बार भयंकर गोलाबारी के बीच, अग्रिम मोर्चे पर टैंक से ऊपर सिर उठाकर वह खड़ा हो गया और अपने साथियों से कहने लगा—"मेरे पास खड़े रहो, मुझे कुछ नहीं होता है। तुम्हारा भी बाल-बांका नहीं होगा।" यही सत्य साबित हुआ। गोले बरसते रहे। युद्ध के इस देवता का कुछ न बिगड़ा।

इस महापुरुष की मृत्यु के विषय में जो थोड़े-बहुत तथ्य लोगों को विदित हैं, वे क्या हैं, कौन-से हैं? जर्मन सरकार का कहना था कि नार्मंडी वाले मित्रों के आक्रमण के समय रोमेल की कमांडकार गोलाबारी का शिकार बन गई।

मगर सत्य कुछ और ही है और वह अधिक नाटकीय एवं घटना-पूर्ण है।

अफ्रीका पर आक्रमण और विजय-पराजय के दिनों में रोमेल को पहली बार अनुभव हुआ कि हिटलर के मन में मानव-प्राणी के प्रति कितनी अनंत और भीषण घृणा है। उसके बाद के दिनों में तो रोमेल को यह भली भांति विदित हो गया कि पेट्रोल की बड़ी तंगी है, सामान बहुत कम है और उधर ब्रिटिश सेनाएं अपनी ताकत और संख्या बराबर बढ़ा रही हैं; और यदि यही दशा रही तो जीत शायद ही हो। उसकी अनुभवसिद्ध दृष्टि से कुछ छिपा न रहा, अतएव उसने हिटलर से निवेदन किया कि जर्मन सेनाओं को वापस हटा लिया जाए, अन्यथा लाखों सैनिक बेमौत मर जाएंगे।

इसपर हिटलर ने उत्तेजित होकर कहा—"विजय अथवा मृत्यु।"

"न तो मेरी विजय हुई और न मुझे मृत्यु ही मिली।" रोमेल

ने बाद में रूखेपन से कहा था।

मई, १९४३ में ट्यूनीशिया में जर्मन सेनाओं के सम्भावित आत्मसमर्पण के पूर्व ही हिटलर ने आदेश दिया कि रोमेल जर्मनी लौट जाए। उसे हिटलर ने अपने निजी मंडल के सदस्य का पद दिया, ताकि ट्यूनीशिया की पराजय के साथ रोमेल का नाम न लिया जाए।

लेकिन फिर भी, हिटलर और रोमेल के संबंधों में कटुता आती गई, क्योंकि रोमेल कभी नाज़ी दल का सदस्य नहीं बना और न ही कभी उसे पार्टी का सुनहरा प्रतीक पदक रूप में प्रदान किया गया। उसने वीरोचित सैन्य परंपरा के विरुद्ध बेगुनाह कैदियों या नागरिकों को मारने या मरवाने से इन्कार कर दिया था। वह युद्धबंदियों से दासों की तरह काम लेना नापसंद करता था। उसे जर्मनी के कॉन्सें-ट्रेशन कैंपों से भी नफरत थी। जर्मन-अधिकृत देश-प्रदेशों में वह गेस्टापो के अनाचार के विरुद्ध था। जर्मन जनता के नाम पर नाज़ियों ने जो कुछ किया था, वह उसके विरुद्ध था।

जर्मन नाज़ियों के अत्याचारों को देखकर उसने साफ-साफ कह दिया था—"मैंने बड़ी ईमानदारी से लड़ाई लड़ी, युद्धबंदियों से मानवता का व्यवहार किया, किंतु नाज़ियों ने मेरी वर्दी पर धब्बे डाल दिए।" इसके बाद हिटलर ने यह काला हुक्म निकाला कि यदि मित्रसेनाएं हमारे एक आदमी को गोली मार दें, तो हमें उनके बारह बंदियों को मार देना चाहिए, और इस औसत का हमेशा पालन करना चाहिए। लेकिन रोमेल और दो-एक दूसरे कमांडर ही ऐसे थे, जिन्होंने इस हुक्म को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया। रोमेल को सबसे बड़ी पीड़ा तो इस मान्यता से हुई कि हिटलर युद्ध को बंद कर देने के बजाय बराबर आगे घसीटता रहेगा और इससे जर्मनी की अपार हानि होगी।

जब मित्रराष्ट्रीय सेनाओं ने फ्रांस के द्वारा नार्मंडी वाला आक्रमण किया, तब हिटलर ने जर्मनी की जनता का साहस और उत्साह बनाए रखने के लिए रोमेल को समूची स्थलसेना की कमान दे दी। यह सेना मित्रराष्ट्रों की आक्रमणकारी सेनाओं का प्रतिरोध करने-

वाली थी। रोमेल को शीघ्र ही यह अनुभव हो गया कि उसकी कमान में जितने कम सैनिक हैं और जितना कम सामान उसके पास है, उसके बल पर कदापि वह आक्रमण को नहीं रोक सकता। और इस समय जर्मनी के पास सैनिक और सामान दोनों की कमी पड़ने लगी थी। अप्रैल, १९४४ में जनरल रोमेल फ्रांस के जर्मन राज्य-पाल जनरल कार्ल हैनरिख वानस्टल्पनागेल से मिला। यह जर्मनी में हिटलरविरोधी दल का नेता था। रोमेल ने इससे बातचीत की कि पश्चिम में शीघ्र ही युद्ध समाप्ति कैसे हो और कैसे नाज़ी शासन का अंत आए ?

आइज़नहावर और मांटगुमरी के सम्मुख रोमेल युद्ध बंद कर देने का प्रस्ताव रखना चाहता था और वह भी हिटलर की जान-कारी के बिना, ताकि जर्मनी को कुछ सम्मानजनक वातावरण मिल जाए, अन्यथा मित्रराष्ट्रों की तो यह घोषित नीति थी कि जर्मनी को बिला शर्त आत्मसमर्पण करना पड़ेगा। रोमेल का प्रस्ताव था—जर्मन सेनाएं पश्चिमी दीवार से परे हट जाएं और मित्रराष्ट्रीय सेनाएं जर्मन शहरों पर बमवर्षा बंद कर दें। पूर्व में जर्मन पश्चिमी सभ्यता की रक्षा के लिए रूस से लड़ते रहेंगे।

रोमेल की योजना थी—हिटलर को पैंभ़र टुकड़ियां उड़ा लें और जर्मन न्यायालय में उसपर मुकदमा चलाएं। उसका खयाल था, हिटलर को पकड़कर मार डालने से तो हिटलर का शहादत का महत्त्व मिल जाएगा।

इस बीच मित्रराष्ट्रीय सेनाएं नार्मंडी में समुद्रतट पर एकत्र हो गईं। १५ जुलाई, १९४४ में जनरल रोमेल ने हिटलर को अल्टी-मेटम भेजा कि तुरंत संधि-प्रस्ताव रखा जाए। उसने हिटलर को जवाब देने के लिए चार दिन की मोहलत दी।

१७ जुलाई की शाम को रोमेल मोर्चे से वापस आ रहा था। उसकी कार लिवारो के निकट पहुंच गई थी कि अचानक ब्रिटिश निशान वाले दो विमान सीधे उसपर झपटे। एक तो ज़मीन से कुछ ही गज़ ऊंचा उड़ रहा था और उसने कार की बाईं तरफ का आधा हिस्सा नष्ट कर दिया। रोमेल ज़मीन पर पड़ा हुआ था कि दूसरा

विमान झपटा और गोलियों की बौछार बरसने लगी।

विश्व का यह अपराजेय और महान योद्धा बहुत बुरी तरह से घायल हो गया—उसकी खोपड़ी टूटी, कनपटी दो जगह से टूटी, गाल की हड्डी टूटी, बाईं आंख पर घाव लगा और मस्तिष्क पर भी चोटें आईं। डाक्टर डर गए, अब यह ज़िंदा न बचेगा।

लेकिन ब्रिटेन के युद्ध-विभाग के गुप्त दस्तावेज़ों में भी ऐसी कोई रिपोर्ट नहीं है कि लिवारो के निकट किसी अकेली कार पर १७ जुलाई की शाम उस घड़ी हमला किया गया।

तब क्या रोमेल को यह हिटलर का जवाब था? उसके अल्टीमेटम का उत्तर था, प्रतिशोध था?

कुछ भी हो, यह नाज़ी-विरोधी षड्यंत्र पर, दो में से एक करारी चोट थी। दूसरी चोट २० जुलाई को पड़ी। षड्यंत्र बना कि जर्मनी के सैनिक नेता और नाज़ी-विरोधी नागरिक हिटलर का सदा के लिए अंत कर दें। इस षड्यंत्र में रोमेल को स्टलपनागेल ने आकर्षित किया था। लेकिन यह षड्यंत्र असफल रहा और हिटलर बच गया। उसपर फेंका हुआ बम तो गिरा, किंतु बम ने हिटलर के कार्यालय को विनष्ट कर दिया, बीस आदमियों को घायल किया और चार को मार डाला। बड़े आश्चर्यजनक रूप में हिटलर बच गया। नाज़ियों की प्रतिहिंसा की भयंकर ज्वालाएं लपलपाने लगीं। जो पकड़े गए, उन्हें तत्काल कत्ल कर दिया गया।

कुछ ही मास में रोमेल अच्छा हो गया। सिर्फ उसकी बाइ आंख कुछ जाती रही।

१४ अक्टूबर का दिन था। हेयरलिंगन के अपने बंगले में रोमेल बड़ी भोर तैयार हो गया। आज उसे अपने सोलह वर्षीय पुत्र मेन्फ्रेड से मिलना था, जोकि दो-चार दिन की छुट्टी पर छावनी से घर लौट रहा था। किंतु विधि का विधान विचित्र था। उस दिन दोपहर में कुछ बुरे लोग भी आनेवाले थे और इस बात को कोई नहीं जानता था, सिर्फ रोमेल ही जानता था। रात में रोमेल को फोन से खबर मिली कि जनरल बर्गदोव रोमेल से मिलेगा। दोपहर के समय वह हिटलर की ओर से मिलकर उस योजना के बारे में बातचीत करेगा,

जिसके अनुसार रोमेल को नई कमान सौंपी जाएगी।

उस दिन फील्ड मार्शल रोमेल ने नाश्ते के वक्त अपने बेटे से कहा था :

"बर्गदोव आ रहा है। शायद मुझे पकड़ने की कोई चाल है।"

ठीक बारह बजे जनरल बर्गदोव, जनरल मैसल के साथ आ पहुंचा। रोमेल, उसकी पत्नी और पुत्र ने इनका स्वागत किया और उन्होंने भी बड़े अदब और आदर के साथ महासेनापति का हाथ चूमा। मौसम के बारे में बातें हुईं। सबने प्रसन्नता प्रकट की कि हुज़ूर फील्ड मार्शल को फिर से स्वास्थ्य-लाभ हुआ। यह ईश्वर की बड़ी कृपा है। तब रोमेल की पत्नी फ्राउ रोमेल और पुत्र मेन्फ्रेड वहां से चले गए, ताकि ये लोग एकांत में बातचीत कर सकें।

लगभग एक घंटे बाद, एक बजकर कुछ मिनट हुए होंगे कि रोमेल पत्नी के कमरे में ऊपर की मंज़िल पर आया। उसका चेहरा देखकर फ्राउ चकित रह गई—"अरे, आपको क्या हो गया है!" और वह एकटक देखने लगी।

अत्यंत धीरे, गम्भीर और शांत स्वर में रोमेल ने कहा—"पंद्रह मिनट बाद मैं मर जाऊंगा, मुझे मरना पड़ेगा!"

फिर रोमेल ने जल्दी-जल्दी अपनी पत्नी से कहा—"स्टलपनागेल ने आत्महत्या का प्रयत्न किया था, वह अंधा हो गया था। पहले तो नाजियों ने उसका बयान लिया, फिर उसका गला घोंट दिया। उसके बयान के बाद अब मुझे भी दुनिया से विदा होना पड़ेगा प्रिय। हिटलर ने मेरे लिए प्रस्ताव भेजा है कि या तो मैं फौरन ज़हर खा लूं या मुझपर मुकदमा चलाया जाए। आगंतुक दोनों जनरलों ने यह साफ-साफ समझा दिया है कि रोमेल जनता के न्यायालय में उपस्थित होने की कोशिश करेगा, तो उसकी पत्नी और पुत्र से बदला लिया जाएगा और उन्हें सताया जाएगा। अब, यदि रोमेल ने ज़हर लेना स्वीकार कर लिया, तो नाज़ी सरकार उसके परिवार को छोड़ देगी और परिवार को वह सभी प्रकार का सम्मान और पेंशन देगी, जो एक जर्मन फील्ड मार्शल के परिजनों को मिलना चाहिए। हिटलर चाहता है कि जर्मन जनता से इस बात को छिपा-

कर रखा जाए कि जर्मनी के सर्वाधिक लोकप्रिय जनरल ने हिटलर को हटाकर, शांति स्थापित करने का प्रयत्न किया था। तब बर्गदोव ने रोमेल को मृत्यु-योजना समझाई—उल्म नामक स्थान में रोमेल को ज़हर दिया जाएगा। उसके बाद तीन सेकंड में उसकी मृत्यु हो जाएगी। उसकी मृत्यु के उपरांत हिटलर का प्रस्ताव है कि सम्पूर्ण राजकीय और सैनिक सम्मान के साथ उसका अंतिम संस्कार किया जाएगा और इससे पूर्व घोषणा कर दी जाएगी कि १७ जुलाई की दुर्घटना के पुराने घावों के कारण रोमेल की मृत्यु हुई। पत्नी के कमरे में रोमेल ने हिटलर के इस मृत्यु-प्रस्ताव और सैनिक सम्मान समारोह के समाचार अपने ए० डी० सी० कप्तान आल्डींजर और अपने पुत्र को भी दिए। इसके बाद तीनों नीचे उतर आए।

ठीक एक बजकर पच्चीस मिनट पर फील्ड मार्शल रोमेल का पार्थिव शरीर अस्पताल के डाक्टरों को सौंप दिया गया। उन्होंने जांच का आग्रह किया। बर्गदोव ने तुरंत कहा—"शरीर को मत छुइए। बर्लिन ने सभी चीज़ों की पूरी व्यवस्था कर ली है।"

यह किसीको नहीं मालूम कि उल्म जाते हुए रास्ते में कार में क्या-क्या हुआ। क्योंकि, जनरल मैसल और ड्राइवर को एक क्षण के लिए कार से उतार दिया गया था। जब वे वापस लौटे, रोमेल अंतिम घड़ियां गिन रहा था। बर्गदोव का भी बुरा अंत हुआ। बाद में, राइख के भवन में हिटलर के साथ वह भी मारा गया।

१८ अक्टूबर को फील्ड मार्शल रोमेल के जनाज़े का जुलूस निकाला गया। सैनिकों की आंखें आसुओं से भरी थीं। ज़बरदस्त सम्मान दिया गया। नाज़ी दल के सभी अधिकारी, जर्मन सरकार के सभी बड़े अफसर और सेना के बड़े-बड़े जनरल उपस्थित थे। अत्यंत शांति और सम्मानपूर्वक जनरल के जनाज़े को विदा दी गई! फील्ड मार्शल वान रनस्टेड ने, हिटलर के बजाय, अंतिम भाषण दिया और रोमेल की सेवाओं की परम प्रशंसा की गई।

किंतु, उपस्थित समुदाय में से कुछ ही लोग यह जानते थे कि वे कत्ल के एक नाटक का अंतिम दृश्य देख रहे हैं!

हमारे युग की सबसे भयंकर भूल

सन् १९४५ का टोकियो। वसंत ऋतु में जापान बुरी तरह हारता जा रहा था। मित्रराष्ट्रों के विमानी हमले रेल, तार, सड़क, पुल और मकानों को उतनी तेज़ी से नष्ट करते जा रहे थे, जितनी तेज़ी से कि वे बन नहीं सकते थे। कामचलाऊ पुल भी बनाने का जापानियों को अवसर नहीं मिल रहा था। जापान परेशान था। जापान पराजित हो रहा था। जापान मिट रहा था। शहरों और कस्बों में खंडहरों से धुएं की धाराएं उठ रही थीं। लाखों लोग बेघरबार होकर इधर-उधर भटक रहे थे। खाने-पीने की चीज़ें खत्म हो गई थीं।

जापान का अंतिम समुद्री बेड़ा गर्क हो चुका था।

किंतु जापान की सर्वोच्च सैन्य हाई कमान ने तलवार म्यान में रखने से इन्कार कर दिया था और प्रतिज्ञा की थी कि जब तक जान में जान है, आन और शान नहीं जाने पाएगी। जापान के युद्ध-वादियों का तर्क था कि वे शीघ्र ही निर्णायक युद्ध में विजय प्राप्त करने ही वाले हैं। युद्धमन्त्री जनरल कोरेचिका अनामी ने वचन दिया कि आक्रमणकारी ओकिनावा से परे भगा दिए जाएंगे।

इन युद्धवादियों का विरोधी एक छोटा-सा दल था, जापान के कूटनीतिज्ञों का, जिसने यह महसूस कर लिया था कि अंत तक लड़ने की अपेक्षा समर्पण में जापान की बहुत कम हानि है। उस समय रूस और जापान के बीच युद्ध अभी छिड़ा न था। इसलिए इन नीतिज्ञों ने रूस से इस सम्बन्ध में चर्चा चलाई कि शांति-स्थापना हो जाए। इसमें इन लोगों का यह उद्देश्य था कि अगर अभी समर्पण कर दिया, तो जापान को कुछ अच्छी शर्तों पर कई सुविधाएं मिल जाएंगी, वरना बाद में तो बिला शर्त समर्पण करना ही

पड़ेगा।

जून महीने में भूतपूर्व प्रधानमन्त्री कोकीहिरोता रूसी राजदूत जेकब मलिक से मिला। किंतु मलिक ने उसके प्रस्तावों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखलाई। तब १२ जुलाई के दिन जापान के सम्राट ने राजकुमार कोनेये को अपने निजी संदेश के साथ शांति का प्रस्ताव लेकर भेजा।

कोनेये को ये आदेश दिए गए थे कि किसी भी कीमत पर लड़ाई खत्म होनी चाहिए। वह इस हेतु मास्को गया। मगर उस वक्त स्तालिन और मॉलोतोव पोट्सडम कान्फ्रेंस में जानेवाले थे, अत: उन्होंने क्षमा-याचना की और चलते बने। पोट्सडम में स्तालिन ने अमरीका के राष्ट्रपति ट्रूमेन को बातचीत में यह बताया कि जापान ने शांतिसंधि की बात चलाई है; लेकिन रूस सरकार को जापान के वचन पर विश्वास नहीं, इसलिए बात ठुकरा दी गई है।

२६ जुलाई, १९४५ के दिन जापान को वह प्रसिद्ध अल्टीमेटम दिया गया, जिसपर ब्रिटेन, अमरीका और चीन के हस्ताक्षर थे। इसके अनुसार मांग की गई थी कि जापान आत्मसमर्पण कर दे अथवा सर्वनाश के लिए तैयार हो जाए। जापान को आत्मसमर्पण का मार्ग अच्छा लगा, क्योंकि सुविधाओं के अनुसार उसे अपनी सरकार स्वयं बनाने का मौका मिलता था और एक राष्ट्र के रूप में जापान नष्ट नहीं होता था। इसमें यह भी संकेत दिया गया था कि जापान के सम्राट से सिंहासन नहीं छीना जाएगा।

जापान के सम्राट ने अपने विदेशमन्त्री शिगेनोरी तोजो से कहा कि बिना किसी हिचकिचाहट के उसे मित्रराष्ट्रों के अल्टीमेटम के के अनुरूप आत्मसमर्पण का प्रस्ताव पसंद है।

तब जापान के मन्त्रिमंडल की बैठक बुलाई गई। इस बैठक में मित्रराष्ट्रों के अल्टीमेटम पर विचार-विमर्श किया गया। २७ जुलाई का निर्णय यही रहा कि जापान में जल्द से जल्द शांति की स्थापना हो जानी चाहिए। इस निर्णय का इस बैठक में युद्धमन्त्री अनामी और चीफ ऑफ स्टाफ ने बहुत विरोध किया।

शांति-स्थापना और समर्पण साधारण काम नहीं था। कई

अड़चनें सामने थीं। रूसियों के साथ आत्मसमर्पण की जो चर्चा चल रही है, उसका क्या होगा? और अभी दो दिन पूर्व, एक अंतिम प्रस्ताव मास्को भेजा गया था।

इसके अलावा एक और तथ्य था, जिसपर विचार करने को मंत्रिमंडल बाध्य था। अभी तक जापान ने पोट्सडम घोषणा सिर्फ रेडियो पर सुनी थी। क्या जापानी सरकार इस तरह की गैर-सरकारी सूचना के आधार पर काम कर सकती है? फिर भी मित्रराष्ट्रों की शर्तों की स्वीकृति की घोषणा में अधिक विलम्ब नहीं था। जापानी प्रधानमन्त्री सुज़ूकी ने २८ जुलाई की अपनी प्रेस कान्फ्रेंस में बयान दिया कि मन्त्रिमंडल 'माकुसत्सु' की नीति को चालू रखेगा। इस शब्द का अंग्रेज़ी में कोई पर्याय नहीं मिलता है और जापानी भाषा में इसके दो अर्थ निकल सकते हैं—'ध्यान न देना' या 'टिप्पणी से दूर रहना'। परन्तु दुर्भाग्यवश जापानी समाचार एजेंसी दोमी के अनुवादकों को यह पता न था, अथवा उन्होंने यह जानने का प्रयत्न न किया कि उनके प्रधानमन्त्री के मन-मस्तिष्क में कौन-सा शब्दार्थ था। जल्दी-जल्दी उन्होंने प्रधानमन्त्री के बयान का अंग्रेज़ी अनुवाद किया और गज़ब हो गया कि उन्होंने गलत शब्द का चुनाव किया। रेडियो टोकियो से मित्रराष्ट्रों को बिजली की तरह यह समाचार मिला कि सुज़ूकी मंत्रिमंडल ने पोट्सडम अल्टीमेटम पर कोई 'ध्यान न देने' का निर्णय किया है।

जापानी आकाशवाणी की इस घोषणा का तात्कालिक परिणाम कुछ इस प्रकार भी प्रकट हुआ कि जापान के बाहर, लन्दन के 'द टाइम्स' ने तारीख २८ जुलाई, १९४५ के दिन लिखा—"टोकियो मित्रराष्ट्रों की शर्तों पर ध्यान नहीं देगा—लड़ते रहने का दृढ़ निश्चय।"

इसके बाद की कहानी इतिहास बन गई! इस अस्वीकृति के जवाब में मित्रराष्ट्रों के लिए यह साबित करता ज़रूरी हो गया कि अल्टीमेटम का अब भी वही मतलब था, जो शुरू में था। और यह मतलब जापान को अच्छी तरह समझा देने क लिए एटम बम ही सर्वथा उचित अस्त्र होगा।

इन प्रश्नों का आज तक कोई उत्तर न मिला कि जापानी सरकार ने मोकुसत्सु की गलती को वैसी हो क्यों रहने दिया और उसे दुरुस्त क्यों न किया ? इतने भयंकर परिणाम पैदा करनेवाली गलती की गम्भीरता को जापानियों ने क्यों न समझा ?

इस समय जापानी सेना शांति के प्रचारकों की गिरफ्तारियां कर रही थी। जो भी कोई उनका विरोध कर रहा था, उसे वे तुरंत गिरफ्तार कर रहे थे, चाहे वह कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो ! शांति चाहनेवाले पक्ष को २७ जुलाई की मंत्रिमंडल की बैठक तक अपनी बात पहुंचाने के लिए कई मास प्रयत्न करना पड़ा था। स्थिति अधर में झूलती रही, क्योंकि स्थलसेना और नौसेना नियंत्रण के बाहर थीं।

यह धारणा बन गई कि प्रधानमन्त्री सुज़ूकी ने मित्रराष्ट्रों के अल्टीमेटम को ठुकराकर उन्हें चुनौती देने का साहस किया है। इस तथ्य से जापान के युद्धवादियों के हाथ में शक्तिसंतुलन चला गया और वहां के शांतिवादियों को अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर छिपना पड़ा।

इन सभी घटनाओं के दुष्परिणाम समस्त विश्व को विदित हैं—हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम का आक्रमण हुआ; और ऊपर रूसी सेनाएं मंचूरिया में प्रविष्ट हुईं और पूर्व में रूस अत्यन्त शक्तिशाली बन गया।

जापान की हार हुई।

एडाल्फ हिटलर के अंतिम दिन

बर्लिन, अप्रैल १९४५, तीसवीं तारीख के दिन जर्मन की एक हज़ार साल पुरानी संसद के भवन राइखस्टाग का अंत हो गया।

और यही हिटलर का अंतिम दिन था।

समस्त संसार के समाचारपत्र, संवाददाता, राजनीति के पंडित और विचारक विद्वान, जर्मनी के मामलों के निष्णात पिछले बीस वर्षों से निरंतर खोज करते रहे हैं कि लगभग पांच साल तक जिसने समस्त संसार को थर्राया, जर्मनी के उस फ्यूरर हेर हिटलर का अंत कैसे हुआ। अब जाकर कहीं कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आए हैं। अन्यथा यह धारणा फैली हुई थी कि हिटलर मरा नहीं है, जीवित है, अथवा एक वायुयान में बैठकर वह और उसके कई साथी अज्ञात दिशा की ओर उड़ गए हैं। कुछ का दावा था, उसने अपने-आपको गोली मार ली थी और कुछ का कहना था कि उसके भूगर्भ-स्थित शरणस्थल फ्यूररबंकर के निकट ही उसे दफना दिया गया था।

बर्लिन में सबसे पहले मार्शल ज़ुकोव के नेतृत्व में विजयवाहिनी रूसी सेनाओं ने प्रवेश किया। अतः रूसी नेताओं के बयान अधिक विश्वसनीय माने गए और उनके आधार पर मित्रराष्ट्रों के गुप्तचर-विभाग ने सन् १९४५ में जांच और खोज शुरू की। नाज़ी जर्मनी के पतन के तीन सप्ताह पश्चात् सोवियत रूस की सुरक्षा पुलिस के उपप्रधान मेजर इवान निकितिन ने अपने अधिकारियों को रिपोर्ट भेजी थी कि हिटलर ने गोली मारकर आत्महत्या ही नहीं की, वरन वह पूर्णतया समाप्त हो गया।

धीरे-धीरे इस रहस्य के पट खुलने लगे।

बर्लिन की लड़ाई के समय भी जो अट्ठाईस प्रमुख व्यक्ति हिटलर के अतिनिकट थे, वे मित्रराष्ट्रों की सेनाओं के द्वारा पकड़ लिए

गए थे और उनके बयानात की जांच की गई थी। कागज़ों और दस्तावेज़ों के पहाड़ बन गए।

सत्य और प्रामाणिक घटनाएं इस प्रकार हैं :

३० अप्रैल, १९४५ की दोपहर के दो बजकर तीस मिनट का समय था। भूगर्भ-स्थित अपने शरणस्थल में एडाल्फ हिटलर अपनी पत्नी के निकट बैठा हुआ था। उसने अपनी वाल्थर ऑटोमेटिक पिस्तौल की नली अपने मुंह में रखी और घोड़ा दबा दिया। उसकी पत्नी ने ज़हर की टिकिया खाई। इसके बाद उन दोनों के शरीर पर जनरल रेटन ह्यूबर ने बहुत-सा पेट्रोल छिड़क दिया और चांसलरी के बगीचे में जला दिया और जो अवशेष बचे, उन्हें वहीं गाड़ दिया। उस समय उसके प्रहरियों की एक टुकड़ी भी वहीं थी। यह रात के साढ़े दस बजे का किस्सा है। उस रात रूसी सेनाओं की विशाल तोपें लगातार आग उगलती रहीं और उन्होंने उस समूचे क्षेत्र का तिनका-तिनका भस्म कर दिया और एक-एक ईंट के टुकड़े-टुकड़े राख कर दिए। जिस तरह हजार वर्ष के प्राचीन राइखस्टाग की एक-एक ईंट उड़ा दी गई, उसी प्रकार हिटलर की हड्डियां भी बिखर गईं।

हिटलर का यह अनुमान था कि विजयवंत रूसी सेनाएं १ मई तक इस भवन तक पहुंच जाएंगी। कितना सच निकला उसका गणित ! अतएव, एक दिवस पूर्व ३० अप्रैल की दोपहरी में, उसने अपने अंत को आमंत्रण दिया। विवरण इस प्रकार है, हालांकि प्रसंग दुःखपूर्ण है, किंतु उस महापुरुष के अंतिम जीवन की अंतिम झांकी रोचक और रहस्यमय है।

इस अंतिम दृश्य का आरम्भ हिटलर के जन्म-दिवस से हुआ। उस दिन अप्रैल की बीसवीं तारीख थी। भूगर्भभवन, जिसका नाम 'फ्यूररबंकर' था और जो चांसलरी के बगीचे में ज़मीन की सतह से पचास फुट नीचे था, उस भवन में कई लोग एकत्र हुए। इन लोगों में सेना के बड़े अधिकारी, सेनापति, मार्शल और बड़े मार्शल एवं नाज़ीदल के नेतागण थ। आज बीसवीं तारीख थी और आज उनके युद्धदेवता एडाल्फ हिटलर का जन्म-दिन था ! अतएव, वे उसका

अपने अभिनंदन और अभिवादन अर्पण करने आए थे। उनकी फौजी वर्दियों पर बड़े चमकदार सुनहरे तगमे चमचमा रहे थे, किंतु कइयों के चेहरे बहुत गम्भीर थे। सब जानते थे कि नाज़ी सेना जो थोड़ी-बहुत बच रही थी, प्रत्येक मोर्चे पर हारती हुई, पीछे लौटती जा रही थी। और रूसियों का दबाव तो बहुत भारी और ज़बरदस्त था। रूसी सेनाएं तीर की तरह सीधी राजधानी बर्लिन की ओर बढ़ी आ रही थीं। दूसरी ओर से पश्चिमी मित्रराष्ट्रों की सेनाएं एल्ब नदी को पार कर रूसी सेनाओं से हाथ मिलाने के लिए बड़ी तेज़ गति से आ रही थीं।

हिटलर महान ने जिस असम्भव अंत की कल्पना भी नहीं की थी, वह प्रतिपल निकट, और निकट, और निकट आ रहा था। विराट और विचित्र स्वप्न धुएं की तरह उड़ गए थे, कुहासा फट गया था और ज़िंदगी में अनुभव का एक और अक्षर जुड़ गया था।

लगभग दस मास पूर्व उसके प्राण हरण करने के लिए दो षड्यंत्र हुए थे। एक के द्वारा जनरलों ने उसे पकड़कर उसपर मुकदमा चलाने का प्रयत्न किया था, फिर दूसरी बार की साज़िश में उसपर बम फेंका गया था, लेकिन दोनों बार वह बच गया था।

आज तक जिस हिटलर के सेनापति उसके हुक्म की एक मात्रा का भी उल्लंघन नहीं कर सकते थे, वे ही उसके विरुद्ध हो गए हैं और उसके प्राणों के ग्राहक बन गए हैं। इस सत्य की जानकारी और सचाई ने हिटलर को असमय और अचानक एक बूढ़ा आदमी बना दिया। अब उसकी पीठ तनिक झुक गई थी और एक पैर को वह तनिक खींचकर चलता था। मगर सिंह की आवाज़ वैसी ही थी और उसकी आंखों में चमक वही थी!

हिटलर के जन्म-दिवस के दूसरे दिन फील्ड मार्शल विल्हेम कैटेल ने हिचकिचाहट के साथ परिस्थिति की गम्भीरता से हिटलर को परिचित कराने का प्रयत्न किया। उस समय वहां जितने नेता और महासेनापति खड़े थे, सब यह देखकर चकित रह गए कि फील्ड मार्शल कैटेल को हिटलर ने बड़ी बैचेनी से 'बेवकूफ' कह-कर एक ओर हटा दिया और सांस लेने का प्रयत्न करते हुए गरज-

कर वह बोला :

"बर्लिन के अभेद्य सिंहद्वार पर रूसियों की बहुत बुरी हार होगी और मेरे दोस्त, हम इन तथाकथित मित्रदेशों की सेनाओं को समुद्र में धकेल देंगे।"

इसके बाद हिटलर ने अपनी जादू-भरी नज़र से उपस्थित समुदाय के एक-एक सदस्य को देखा। न तो उनमें से कोई हिला, न ही कोई कुछ बोला। सब बुत बने खड़े थे।

तब राइखमार्शल हर्मन गोरिंग दो-चार क्षण के बाद बड़े अदब से बोला :

"अन्ततया जर्मनी की विजय होगी।" गोरिंग लुफ्टवेफ का सर्वोच्च अधिकारी था। उसने कहा—"यह उचित होगा श्रीमान् ! आप बर्खेसगेडन की पहाड़ियों में रहकर हमारी सेनाओं को आदेश और निर्देश प्रदान करें।"

हिटलर ने फौरन जवाब दिया :

"दरअसल तो तुम इस बात की सिफारिश कर रहे हो कि तुम किसी अधिक सुरक्षित जगह पर जाना चाहते हो। बेशक तुम जा सकते हो, तुम्हें इजाज़त है।"

पत्थर की मूर्ति की तरह मौन राइखमार्शल गोरिंग ने हीरों से जड़े हुए मार्शल के अपने बैटन से हिटलर को सलामी दी और विदा ली। चन्द मिनट के बाद ही कई मज़बूत ट्रकों पर अरबों रुपये का खज़ाना उसकी बख्तरबन्द गाड़ी के पीछे-पीछे बेवेरिया की ओर जा रहा था। इस बीच हिटलर ने रूसी सेनाओं को बर्लिन से पीछे हटा देने की योजना तैयार कर ली थी। प्रतिरोध का यह मोर्चा जनरल फैलिक्स स्टैनर लेनेवाला था। हिटलर ने फोन पर आदेश दिया :

"जो कोई अफसर अपने एक भी आदमी को इस मोर्चे से दूर रखेगा, सिर्फ पांच घंटे में वह अपनी जान से हाथ धो बैठेगा !"

२२ अप्रैल के दिन हिटलर ने अपने जनरल-स्टाफ को बताया कि उसने जो नया मोर्चा खोला है, उसमें जर्मनी की विजय हुई है। मुझे हेनरिख हिमलर का फोन मिला है कि स्टैनर ने जो आक्रमण

किया है, वह पूरे ज़ोर पर है। उसके कारण रूसी सेनाएं बर्लिन से पीछे हट रही हैं। इसके बाद, कर्नल-जनरल एल्फ्रेंड जोल, जो आक्रमणकारी सेनाओं का प्रमुख था, उसकी मेज पर कई समाचारों का ढेर लग गया। कई मिनट तक जोल अपने-आपको एकाग्र न कर सका और हिम्मत न रख सका। हिटलर ने उसका चेहरा देखा और कहा :

"ठीक है, ठीक है। क्या बात है जोल ? तुम घबरा गए हो ?"

"मेरे प्यारे फ्यूरर !" जोल बोला—"स्टैनर ने आक्रमण किया ही नहीं, रूस के मार्शल ज़ुकोव का तोपखाना बर्लिन में प्रवेश कर चुका है।"

हिटलर स्तम्भित रह गया—"क्या ? क्या मुझे सुसाइड स्कवैड ने भी धोखा दिया ? पहले फौज ने, फिर वायुसेना लुफ्टवैफ ने और अब एस० एस० ने ! सब दोगले हैं ! देशद्रोही कुत्ते !"

तीन घंटे तक हिटलर अपार क्रोध से उफनता रहा। फिर वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया। उसने धीमे से कहा—"तीसरी राइख भी विफल हो गई। अब तो कुछ भी बाकी न रहा, सिर्फ मेरी मौत ! कुछ भी हो, मैं यहीं अड़ा रहूंगा, यहीं खड़ा रहूंगा और आखिरी वक्त की राह देखूंगा। तब मैं अपने-आपको गोली मार लूंगा। लड़ने के लिए क्या कुछ भी साधन शेष नहीं रहा ? अच्छा जोल, गोरिंग को फोन करो, ताकि वह मित्रराष्ट्रों से बात चलाए।"

सन् १६४१ में हिटलर ने उत्तराधिकार का एक कानून बनाकर गोरिंग को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था। गोरिंग का खयाल था कि वह मित्रराष्ट्रों से समर्पण की उचित शर्तें तय कर सकेगा अथवा खुद कहीं न कहीं निर्वासित के रूप में रहकर चैन से ज़िंदगी बिताएगा।

गोरिंग ने हिटलर को रेडियो-सन्देश दिया :

"मेरे फ्यूरर ! अपने निर्णय के अनुसार क्या आप सहमत हैं कि मैं राइख का सम्पूर्ण नेतृत्व ग्रहण करूं ? आज रात के दस बजे तक अगर आपका कोई जवाब नहीं मिला, तो मैं समझूंगा कि आप सहमत हैं।"

इसके बाद गोरिंग ने अपने अंगरक्षकों की संख्या बढ़ाकर एक हज़ार कर दी और अपने स्टाफ में घोषणा की कि वह आगामी कल जनरल आइज़नहावर से मिलने के लिए विमान द्वारा जाएगा। जिस समय वह अमरीका के सुप्रीम कमांडर के नाम एक संवाद का मसविदा तैयार कर रहा था, एक तार उसे मिला। यह तार हिटलर ने भेजा था :

"गोरिंग ! तुमने जो कुछ किया, उसकी सज़ा 'मौत' है। लेकिन मैं इस सज़ा की कार्यवाही पर ज़ोर नहीं दूंगा, यदि तुम खुद अपने पदों से इस्तीफा दे दो। वरना, मैं उचित कदम उठाऊंगा —एडाल्फ हिटलर !"

अभी गोरिंग इस तार को पढ़कर इसे गौर से देख रहा था कि हिटलर की 'सर्वस्वस्वाहा करनेवाली सेना' के सैनिकों के जूतों की आवाज़ बाहर गूंज उठी।

राइखमार्शल हर्मन गोरिंग को तत्काल गिरफ्तार कर लिया गया। उत्तरधिकारी बनाए रखने की हिटलर की कोई कामना नहीं थी।

अब उस प्रकरण की ओर चलें जब हिटलर ने अपने फ्यूरर-बंकर में सभी लोगों से हाथ मिलाकर विदाई ली थी। उसके दिमाग में एक योजना थी, जिसके अनुसार वह इतिहास की सबसे बड़ी होली जलाना चाहता था। उसने जनरल वेंक की बारहवीं सेना को आदेश दिया कि वह तुरन्त बर्लिन लौट जाए। यह सेना अमरीकियों से लड़ रही थी। उसने यह भी आदेश दिया कि बर्लिन के हरएक आदमी और नौजवान को रूसियों के विरुद्ध मैदान में खड़ा कर दिया जाए और जो आनाकानी करे, उसे उसी वक्त, उसी जगह फांसी दे दी जाए।

इस आदेश को सुनकर नाज़ी दल के एक नेता वेजनर ने हिटलर को फोन किया—"यदि आप पश्चिम में मित्रराष्ट्रों के सम्मुख समर्पण की स्वीकृति दे दें, तो पूर्व में रूसियों को लड़कर तब तक रोका जा सकता है, जब तक युद्ध-विराम न हो जाए। इस प्रकार बहुत-सा विनाश टल जाएगा।"

"विनाश, वेजनर ! यही तो मैं चाहता हूं ! मेरे अन्त का यह महोत्सव होगा। रोशनी जगमगाएगी।"

दूसरे दिन २५ अप्रैल था। रूसी सेनाओं ने बर्लिन को पूर्ण-रूपेण घेर लिया था।

अन्तिम एक सप्ताह में फ्यूररबंकर के सदस्यों की संख्या दिन-प्रतिदिन घटती जा रही थी। गोबेल्स और उसकी पत्नी अपने छः बच्चों-सहित वहीं रहने लगे। आत्महत्या के पूर्व दोनों ने उन्हें मार डाला। यह तय पाया कि हिटलर का, राजनीतिक दाहिना हाथ, मार्टिन बोरमान, जीवित रहे। शेष सभी स्वाहा हो जाएं। हिटलर की प्रेयसी इवा ब्राउन ने हिटलर का साथ छोड़कर अन्यत्र जाने से साफ इन्कार कर दिया :

"मैं तुम्हारे साथ ही मरूंगी।"

फ्यूररबंकर में तब हिटलर परिवार के अतिरिक्त, छब्बीस उच्चाधिकारी और तीस सेक्रेटरी तथा गार्ड रह गए। बाहर रूसी तोपें प्रलय की वर्षा कर रही थीं और धरती इस प्रकार कांप रही थी कि मानो फटती जा रही है। फ्यूररबंकर फौलाद और सीमेंट का बना सुरक्षित स्थान था। इस सारे वातावरण के बीच में भी हिटलर एकाग्र मन से अपने नक्शों पर झुका हुआ था और कान्फ्रेंस पर कान्फ्रेंस बुला रहा था। नक्शा देखने पर उसे खयाल आया कि शायद रूसी सेनाएं बर्लिन की भूगर्भ रेल के मार्ग से जमीन के अन्दर चलते हुए आगे बढ़ जाएं, और यह रास्ता तो राष्ट्रपति भवन के बहुत करीब होकर गुज़रता है। उसने फौरन अपने चीफ ऑफ स्टाफ को हुक्म दिया कि भूगर्भ रेलवे की सुरंग को पानी से भर दो।

इसपर जनरल क्रेब्स ने निवेदन किया—"मेरे फ्यूरर ! उस सुरंग में कई हज़ार घायल आदमी पड़े हुए हैं..."

हिटलर ने उसकी बात न सुनी और फिर से हुक्म दिया :

"सुरंग को पानी की बाढ़ से भर दो।"

पांच मिनट के बाद ही सुरंग पानी से भर दी गई।

२८ अप्रैल को स्टाकहोम की एक प्रेस रिपोर्ट से हिटलर को खबर मिली कि उसका सबसे विश्वस्त, एस० एस० का प्रधान हैन-

रिख हिमलर समर्पण की चर्चा चला रहा है। हिटलर की दृष्टि में उसकी डूबती हुई आशा के लिए हिमलर तिनके का सहारा था, जब वह भी चला गया, तो हिटलर के मुंह से निकला :

"और अब, वफादार हैनरिख !"

सहसा वह शांत हो गया। हिमलर की गद्दारी ने प्रतिरोध की उसकी सभी आशाओं पर पानी फेर दिया।

२९ अप्रैल की सुबह हिटलर और इवा ब्राउन का विवाह हुआ। बहुत ही संक्षिप्त समारोह मनाया गया। उस वक्त उनके सिर पर रूसी तोपों के गोले गिर रहे थे और बंकर की छत का प्लास्टर टूट-टूटकर नीचे बिखर रहा था। विवाह के पश्चात् हिटलर ने अपने सेक्रेटरी को बुलाया और उसे अपना अन्तिम राजनीतिक वसीयत-नामा और इच्छापत्रक लिखाया। उसने गोरिंग और हिमलर का नाम काटकर एडमिरल कार्ल डानिट्ज़ को अपना उत्तराधिकारी बनाया। तब उसे यह समाचार मिला कि किस प्रकार इटली के मुसोलिनी और उसकी पत्नी के शवों की दुर्दशा हुई। उसने अपना पिछला आदेश दुहराया—"मेरी और मेरी पत्नी की मृत्यु के पश्चात्, हमारे शव पूर्णतया विनष्ट कर दिए जाएं, पूरी तरह, समझते हो ? पूरी तरह।"

उसी दिन दोपहर को उसे रिपोर्ट मिली कि रूसी सेना बहुत आगे बढ़ गई है और १ मई तक राष्ट्रपति भवन पर सीधा हमला करेगी। इसपर हिटलर ने कहा :

"तब तो हमारे पास ज़्यादा वक्त नहीं है। दुश्मन हरगिज़ हमें ज़िन्दा न पकड़ सके।"

उस रात, बड़ी देर बाद, एक चपरासी बंकर में सभी लोगों को बुलाने गया। फ्यूरर की मर्ज़ी है कि वह सबसे विदा ले ले। जब सब लोग एकत्र हो गए, तो हिटलर ने शांतमन से सबसे बारी-बारी से हाथ मिलाया। बाद में, एक आदमी ने लिखा :

"फ्यूरर की आंखों में वही चमक थी।"

हिटलर से हाथ मिलाकर सब लोग केण्टीन में आए। नाच-गान और मदिरा-पान का महोत्सव प्रारम्भ हुआ और सुबह तक चलता

रहा।

३० अप्रैल के दिन, दो बजे हिटलर ने सदा की तरह भोजन किया। उसका चेहरा कुछ कुम्हला गया था, किंतु उसने रुचिपूर्वक भोजन किया। तब वह अपनी पत्नी-सहित बाहर बरामदे में आया, जहां बोरमान, गोबेल्स और कई प्रमुख सहकारी उसके दर्शनों के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्होंने बड़े शांत वातावरण में एक-दूसरे से हाथ मिलाया और अपने-अपने कमरे में चले गए।

हिटलर के कमरे का दरवाज़ा बंद हो गया। तुरंत हिटलर का एक अंगरक्षक दरवाज़े पर अदब से, मगर तनकर, खड़ा हो गया। एक क्षण बाद भीतर से पिस्तौल की आवाज़ आई। फिर ज़ोर का एक धमाका हुआ।

और विश्व के महाप्रतापी और शक्तिशाली तानाशाह का अंत हो गया! सहानुभूति में, सहृदय शत्रुओं की आंखों से भी आंसू गिर पड़े!

○ ○ ○

मुद्रक : राष्ट्रभाषा प्रिंटर्स, दिल्ली-६

1-64-12-24

हमारा उत्कृष्ट कथा-साहित्य

एक घिसा हुआ चेहरा :
रमेश बक्षी
धरती की आंखें :
लक्ष्मीनारायण लाल
स्वयंवर : सत्येन्द्र शरत्
मिस मसूरी : रामप्रकाश कपूर
हम सब गुनहगार :
राधाकृष्ण प्रसाद
नीना : अमृता प्रीतम
अशू ,,
बन्द दरवाज़ा ,,
हीरे की कनी ,,
रंग का पत्ता ,,
रीता : प्रतापनारायण टण्डन
पचतंत्र : आचार्य विष्णुशर्मा
ग़द्दार : कृश्न चन्दर
एक गधे की वापसी ,,
एक गधे की आत्मकथा ,,
प्यास ,,
सपनों का क़ैदी ,,
शहीद : मुल्कराज आनन्द
मरने से पहले ,,
एक मामूली लड़की : बलवन्तसिंह
एक चादर मैली सी :
राजेन्द्रसिंह बेदी
जयमाला : शैलेश मटियानी
ये मर्द ये औरतें :
सआदत हसन मंटो

पुनर्मिलन : नानकसिंह
एक रहस्य, एक सत्य ,,
रजनी : बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
आनन्द मठ ,,
दुर्गेशनन्दिनी ,,
देवी चौधरानी ,,
विषवृक्ष ,,
कपालकुण्डला ,,
इन्दिरा ,,
दो बहनें : रवीन्द्रनाथ ठाकुर
नीरजा ,,
जुदाई की शाम ,,
बहूरानी ,,
काबुलीवाला ,,
गोरा ,,
आंख की किरकिरी ,,
कुमुदिनी : ,,
घर और बाहर ,,
मिलन ,,
चार अध्याय ,,
उजड़ा घर ,,
देवदास : शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय
चरित्रहीन ,,
शेष प्रश्न ,,
बिराज बहू ,,
गृहदाह ,,
मंझली दीदी : बड़ी दीदी ,,
श्रीकान्त ,,